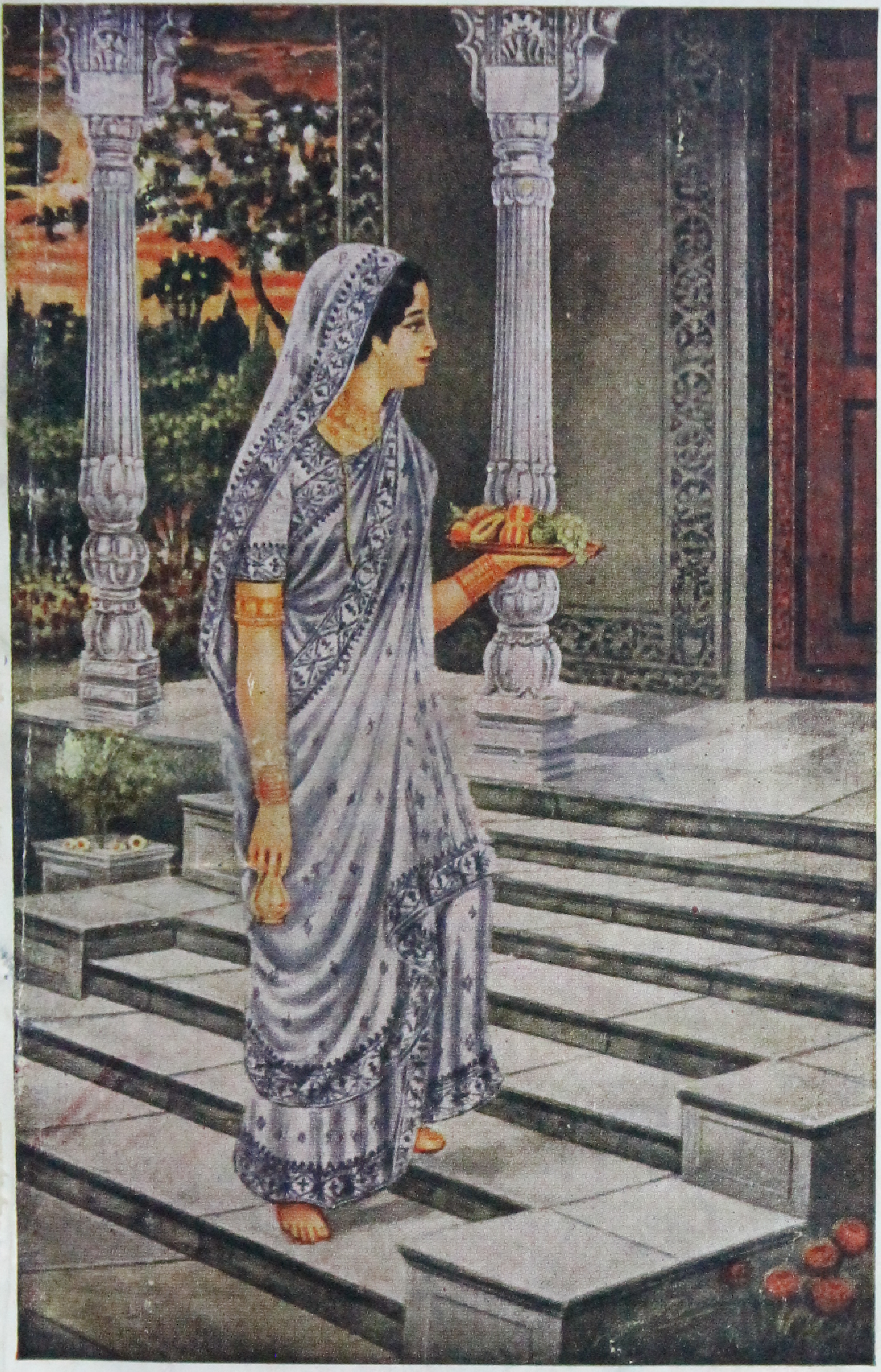
मनोहर पुष्पाञ्जलि



प्रकाशक—नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्ज़

ओ३म्

सब से बड़ी और अनूठी भजन पुस्तक—

मनोहर

पुष्पाञ्जलि

आर्य जाति में नया जीवन पैदा करने वाले
धर्म्म और देश भक्ति के सुप्रसिद्ध
भजनों का संग्रह ।

जिसमें

पंजाब और यूपी के प्रसिद्ध भजनीकों और कवियों के
३०० उत्तम २ भजन दिये गये हैं ।

प्रकाशक—

नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्ज़
लोहारी दरवाज़ा, लाहौर ।

मुद्रक-पं० महावीर प्रसाद विद्याप्रकाश प्रेस लाहौर
द्वितीयबार प्रति ३०००] १९२२ [मूल्य ।।।)

विषय सूची ।

अनुक्रमणिका

क

ख

ड

ढ

त

द

ध

न

प

फ

ब

भ

म

य

र

ल

व

ओ३म्

मनोहर पुष्पाञ्जलि

१–ईश्वर-स्तुति ।

भजन नं० १

हे सप्त भू नव खण्ड रवि शशि आदि चराचरम् ।
विश्वानि देव सदेव देवम् एक मेव गुणागरम् ॥
सर्वस्व जगदाधार जाननहार व्यापक सर्वकम् ।
सवितार विधाता सर्व अन्त प्रकाशकस्य प्रकाशकम् ॥
प्रभु आप मम त्रय तात शाप विलाप जगकारण करण ।
दुरितानि खान परासुव अथवा बिथा कीजै हरण ॥
यदि सत्य भद्रम् मुक्तिपथ अंकित सुमति चित दीजिये ।
कल्याण पद अर्थात् तन्न कृपाल आसुव कीजिये ॥

भजन नं० २

जय जय पिता परम आनन्द दाता ।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता ॥ १ ॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे ।

सृष्टि का स्रष्टा तू धरता संहर्त्ता ॥ २ ॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू स्थूल इतना ।
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता ॥ ३ ॥
मैं लालित व पालित हूं पितृ स्नेह का ।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझ से ताता ॥ ४ ॥
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को ।
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥ ५ ॥
मिटाओ मेरे भय को आवागमन के ।
फिरूं न जन्म पाता और बिलबिलाता ॥६ ॥
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु ।
कि जिस को मैं अपनी अवस्था सुनाता ॥ ७ ॥
"अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको ।
रहूं सर्वदा तेरी कीर्त्ति को गाता ॥ ८ ॥

भजन नं० ३ ।

पिता जी तुम पतित उधारन हार ॥ टेक ॥
दीन शरण कंगाल के स्वामी,
दुःख के मोचन हार ॥ १ ॥
इस जग माया जाल भ्रम में,
सूझे न सार असार ॥ २ ॥
सत्य ज्ञान बिन अन्ध सम डोलें,
करें असत्य आचार ॥ ३ ॥
पाप प्रवाह भयंकर जल में,
डूबत हैं मंझधार ॥ ४ ॥
तुम्हारी दया बिन को समर्थ है,
करे दीनन को पार ॥ ५ ॥

भजन नं० ४

खानये दिल में छुपा था मुझे मालूम न था ।
पर्दा गफलत का पड़ा था मुझे मालूम न था ॥
दैरो काबे में फिरा पूछता मैं तेरा निशान ।
दिल ही में किबला नुमां था मुझे मालूम न था ॥
ला मकां अर्शे मुअल्ला पै कहीं तख्त नशीं ।
लेक वह फ़र्जी खुदा था मुझे मालूम न था ॥
ला मकां तुझ को कहां ढूंढें वले तेरा मकां ।
हैफ यह मकरो दग़ा था मुझे मालूम न था ॥
हुआ मेराज के धोके से मैं गरदूं गरदां ।
कब भला मुझ से जुदा था मुझे मालूम न था ॥
जान जानां के लिये जाने को तय्यार ही था ।
जान से जानां मिला था मुझे मालूम न था ॥
मिस्ले आहू के मैं सर गर्दां फिरा सहरा में ।
नाफे में नाफ छुपा था मुझे मालूम न था ॥
मिस्ले बुलबुल के हर एक गुल को बनाया महबूब ।
गुंचाये दिल में छुपा था मुझे मालूम न था ॥
तपशे दिल से माहो हूर में रही कुछ न तमीज़ ।
अबरे गफलत से छुपा था मुझे मालूम न था ॥
हैफ नादानी से ज़म २ को कहा आबेहयात ।
दिल ही में आबे बका था मुझे मालूम न था ॥
रोजे रौशन की तरह दीद हुआ जलवा गर ।
रात से दिन छुपा था मुझे मालूम न था ॥
"भोजदत्त" जाग बहुत सोया नसीबा जागा ।
यार पहलू में लिटा था मुझे मालूम न था ॥

कव्वाली नं० ५ ।

मशहूर हो रहा है खलक़त में नाम तेरा ।
तू है सभी का अफसर साहब गरीब परवर ।
मामूर हो रहा है कुदरत कलाम तेरा ॥ १ ॥
जल थल के जीव सारे सूरज व चांद तारे ।
मशकूर हो रहा है आलम तमाम तेरा ॥ २ ॥
आलम में तू ही तू है गुल में बमिस्ले बू है ।
भरपूर हो रहा है सब में मुकाम तेरा ॥ ३ ॥
सुन ले पुकार मेरी करता है अब क्या देरी ।
मजबूर हो रहा है ग़म से गुलाम तेरा ॥ ४ ॥
सत् चित् तू आनन्दा है "बलदेव" तेरा बन्दा ।
मखमूर हो रहा है पी करके जाम तेरा ॥ ५ ॥

भजन नं० ६

मुझे धर्म वेद से ईश्वर,
सदा इस तरह का प्यार दे ।
कि न मोडूं मुंह कभी इस से मैं,
कोई चाहे सर भी उतार दे ॥ १ ॥
वह कलेजा राम को जो दिया,
वह जिगर जो बुद्ध को अता किया ।
वह फ़राख दिल दयानन्द का,
घड़ी भर मुझे भी उधार दे ॥ २ ॥
न हो दुश्मनों से मुझे गिला,
करूं मैं बदी की जगह भला ।
मेरे लब से निकले सदा दुआ,
चाहे कोई कष्ट हज़ार दे ॥ ३ ॥

नहीं मुझको ख्वाहिशे मर्तबा,
न हो माल ज़र की हवस मुझे।
मेरी उमर खिदमते खल्क में,
मेरे ईश्वर ! तू गुज़ार दे ॥ ४ ॥
मुझे प्राणीमात्र के वास्ते,
करो सोजे दिल वह अता पिता।
जलूं उन के गम में मैं इस तरह,
न खाक तक भी गुबार दे ॥ ५ ॥
मेरी ऐसी ज़िन्दगी हो बसर,
कि हूं सुर्ख रू तेरे सामने।
न कभी मुझे मेरी आत्मा ही,
यह शर्म लैलो निहार दे॥ ६ ॥
न किसी का मर्तबा देखकर,
जले दिल में नारे हसद कभी।
जहां पर रहूं, रहूं मस्त मैं,
मुझे ऐसा सबरो करार दे ॥ ७ ॥
लगे ज़ख्म दिल पर अगर किसी के,
तो मेरे दिल में तड़प उठे।
मुझे ऐसा दे दिल दरद रस,
मुझे ऐसा सीना फिगार दे ॥ ८ ॥
है 'प्रेम' की यही कामना,
यही एक उसकी है आरज़ू।
कि वह चन्द रोज़ा हयात को,
तेरी याद ही में गुज़ार दे ॥ ९ ॥

———

भजन नं० ७ ।

हे ! दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए ।
　　दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए ॥ १ ॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मन् ।
　　हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥२॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से ।
　　और अन्धेरा दूर सारा, हो अविद्या नाश से ॥ ३ ॥
खोटे कर्म्मों से बचें और, तेरे गुण गावें सभी ।
　　छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी ॥ ४ ॥
सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञान से भरपूर हों ।
　　शुभ कर्म में होवें तत्पर, अवगुण सब दूर हों ॥५॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित, अपना भारतवर्ष देश ।
　　वायु जल सुखदाई होवें, जाएं मिट सारे क्लेश ॥६॥
वेद के प्रचार में, होवें सभी पुरुषार्थी ।
　　होवे आपस में प्रीति, और बनें परमार्थी ॥ ७ ॥
लोभी और कामी क्रोधी, कोई भी हम में न हो ।
　　सारे व्यसनों से बचें, और छोड़ देवें मोह को ॥८॥
अच्छी संगति में रहें, और वेद मार्ग पर चलें ।
　　तेरे ही होवें उपासक, कुकर्मों से बचें ॥ ९ ॥
कीजिए हम सब का हृदय, शुद्ध अपने ज्ञान से ।
　　मान भक्तों में बढ़ाओ, सब का भक्ति दान से ॥१०॥

भजन नं० ८ ।

हे प्रभु पूर्ण नाथ हमारे, कौन २ गुन कहें तिहारे ।
दया तेरी हरि अपरम्पारा, तूही प्रभु है दया भँडारा ॥

मात पुत्र प्रकट संसारा, वर्णे किसे यह कीट विचारा।
राज्य तेरा है अटल अनंत, गावें निस दिन ऋषि मुनि संत।
दाता जगत के हो प्रभू स्वामी, घट घट के हो अन्तर्यामी॥
नाम तेरा हरि जग पितु माता, जीव जन्तु सबका है त्राता।
कौन कहे तब पोषण बाता, निबल हीन हम तन मन गाता॥
तू प्रभु सबका है महाराजा, चांद सूर्य ग्रह तुम्हरे काजा॥

भजन नं० ९।

ऊंची है शान तेरी ऊंचे मकान वाले,
तुझतक हो-कब रसाई ओ-ला-मकान वाले।
दैरो हरम में ढूंढ़ा लेकर चिराग बरसों,
तेरा निशां न पाया ओ ला मकान वाले।
सीढ़ी लगारहा है क्या-अक्ल नुकता रसकी,
घर दूर है खुदा का ओ नर्दबान वाले।
है अक्ल या शिकस्त तेरी रहे तलब में,
दौड़ायें खाक घोड़े वहमो गुमान वाले।
अब्रे करम से तेरे है आबरुये हस्ती,
ओ कौस आसमां के रंगीं मकान वाले।
दिल में तजल्ली तेरी आंखों में नूर तेरा,
कालिब में रूह तू है जानों के जान वाले।
कर तर्क बज्मे दुनिया, पर्दा-उठा खुदी का,
ओ महवे खुदनुमाई ओ आन बान वाले।

भजन नं० १०।

गए दोनों जहां नज़र से गुज़र,
तेरी शान का कोई बशर न मिला।

तेरी हर जगह देखो निराली फबन,
　　तेरा भेद किसी को मगर न मिला ।
तेरा चर्चा जहां की ज़बानों पै है,
　　तेरा शोर ज़माने के कानों में है ।
मगर आंखों से देखा तो पर्दा नशीं,
　　कहीं तू न मिला तेरा घर न मिला ।
कोई मिलने का तेरा निशां भी है,
　　कोई रहने का तेरा मकान भी है ।
तुझे देखा उधर तू उधर न मिला,
　　तुझे ढूंढ़ा इधर तू इधर न मिला ।
कहीं दस्ते सवाल दराज़ नहीं,
　　किसी और पै मुझे यूं नाज़ नहीं ।
कोई तुझसा गरीब नवाज़ नहीं,
　　तेरे दर के सिवा कोई दर न मिला ।

———

भजन नं० ११ ।

किया जिसने पैदा जहान है, वह महान से भी महान है ।
न वह बाल वृद्ध जवान है, वह प्राण का भी प्राण है ॥ १ ॥
न जन्म धरे न वह दुःख भरे, न हो रोगी न वह कभी मरे ।
उसे ढूंढ़ो जहां वह वहीं मिले, न रहने का खास मकान है ॥२॥
कोई उसका रंग न रूप है, वह सदा ही ज्ञान स्वरूप है ।
वही एक सब से अनूप है, नहिं कोई उसके समान है ॥ ३ ॥
वह अजर अमर और है अभेद, वह पूर्ण ब्रह्म और है अछेद ।
उसका न कहा जावे विभेद, वह हुआ न अब तक भान है ॥४॥
नहिं खाली उससे कोई ठौर, कर खूब देखा हमने गौर ।

वह है सभी के सिर का मौर, उसे तीनों काल का ज्ञान है ॥५॥
वह हर एक ऋतु में है रमा, मन को न तू उस से भ्रमा।
उसमें ही मन को ले जमा, वही सारे विश्व की जान है ॥६॥

भजन नं० १२।

टेक-जगत की जननी जगत की माता,
नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।

जगत के आधार विश्वकर्त्ता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
तमाम दुःखों के दूर करता, तमाम तापों के ताप हरता॥
तमाम खुशियों के तुम हो दाता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
जगत केकर्तार तुम हो स्वामी,सुखोंके भण्डार तुम हो स्वामी
हरइक के रक्षक तुम्हीं हितैषी, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
तुम्हीं ने कृपा से हमको अपनी, अता करी है मनुष्य योनी॥
तुम्हींने दानिश है अक्ल बखशी, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
हमारी खातिर ज़मीं बनाई, हमारी खातिर बनाई अग्नी॥
हमारी खातिर बनाया सूर्य, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥
हमारे कारण बनाई वायु, हमारे कारण बनाई खुशबू।
हमारे कारण बनाया जल को, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥
हमारे कारण बनाई माता, पिता दिया परवर्श का कर्त्ता।
बराए मुक्ति है वेद उतारा, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥
हमारे चलने को पाओं बखशे, दिये पकड़ने को हाथ तुमने।
बनाई आंखें कि देखें हर शै, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥
ज़बान चखने को तुमने दी है, दिये हैं सुनने को कान प्रभु जी।
तुम्हीं ने बखशा है नुक्त शङ्कर, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥

हजारों खाने लजीज शीरीं, हजारों चीजें तलख व नमकीं।
हमारे कारण बनाईं तुमने, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥
'कमर' जो तुमसे पति को छोड़े, जो तुमसे रक्षकसे नाता तोड़े।
कहीं ठिकाना लगे न उसका, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा॥

भजन नं० १३।

जलवा दिखा रहा है मुझको ज़हूर तेरा,
व्यापक है तू जहां में, हाजिर है हर जगह में।
सब में समा रहा है निर्मल है नूर तेरा॥
कुर्बान तेरी कुदरत, बलिहार तेरी वाहदत।
अमृत चखा रहा है, मुझको सरूर तेरा॥
तेरा ही नाम प्यारा जपता जहान सारा।
गुण तेरा गा रहा है, दिल में सरूर तेरा॥
"बलदेव" दुःख उठा कर, खुदगर्जी को मिटा कर।
खिदमत में आ रहा है, बन्दा हजूर तेरा॥

प्रार्थना

भजन नं० १४।

टेक-शरण अपनी में रख लीजो दयामय दास हूं तेरा।
तुम्हें तजकर कहां जाऊं, हितू कोई न है मेरा ।। शरण० ।।
भटकता मैं हूं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा ।। शरण० ।।
सताया राग द्वेषों ने तपाया तीन तापों ने,
जलाया जन्म मृत्यु ने किया तंग हाल बहुतेरा ।। शरण० ।।
मेरा दुःख मेटने वाला सिवा तेरे न है कोई,
शरण में आ गिरा अब तो भरोसा आप का भारी।
हटा कर क्लेश सब मेरे हृदय में कीजिये डेरा ।। शरण० ।।
क्षमा अपराध कर मेरे, फकत अब आश है तेरी,
दया "बलदेव" पर करके बना ले नाथ निज चेरा।
शरण अपनी में रख लीजो दयामय दास हूं तेरा ।।

भजन नं० १५

किसी दुनियां के बन्दे को, अगर शौके हकूमत हो।
तो मेरा शौक दुनिया में, फकत इन्सां की खिदमत हो ।।

धर्म अपना कोई जालिम अगर, जोरो जफा समझे ।
मुहब्बत हो धर्म मेरा, मेरा ईमान उल्फत हो ॥ २ ॥
रुपये को खूबिये किस्मत, अगर कोई खुदा समझे ।
उसे मैं ठीकरी समझूं, मुझे ऐसी कनायत हो ॥ ३ ॥
अगर शमशेरो पैकां पर, नाज़ां हो उदू कोई ।
तो मेरे नाज़ का बाइस, मेरी सैफे सदाकत हो ॥ ४ ॥
अगर कोई आशिके सादिक, गिरफ्तारे मुसीबत हो ।
मेरा भी जिन्दगी का फर्ज, इस्तकबाले आफत हो ॥ ५ ॥
करे रोशन महलों में कोई बिजली की कंदीलें ।
मुझे कुटिया में मिट्टी का दिया जलने से राहत हो ॥ ६ ॥

भजन नं० १६ ।

सफल जीवन हो, वर परमात्मन् जो तुमसे यह पाऊं ।
पराई आग में कूदूं पराई मौत मर जाऊं ॥ १ ॥
रिफाहे आम की खातिर अगर हों जिस्म के टुकड़े ।
खुशी से खेलते हंसते, मैं अपने तन को कटवाऊं ॥ २ ॥
मुसीबत में किसी का टपके, इक कतरा पसीना भी ।
मैं अपना खूं बहाने के लिये तैयार हो जाऊं ॥ ३ ॥
दुःखी को देख कर टपके न खूं, गर मेरी आंखों से ।
तो बेहतर है कि अन्धा होऊं, न देखूं न शरमाऊं ॥४॥
न हो बल जेर करने के लिये, कमज़ोर लोगों को ।
न ऐसा धन मिले, जो ज़ालिम और कंजूस कहलाऊं ॥५॥
गिरें जो गोद से माता पिता के तोतले बच्चे ।
उठा कर अपने हाथों से उन्हें छाती से लगवाऊं ॥६॥
न हो ख्वाहिश बुरी मेरी कभी भी बदला लेने की ।

मैं क़ौमी दुशमनों को क़ौम की खिदमत में ले आऊं ॥ ७ ॥
जिन्हों ने अपने हाथों से तोड़े कभी जनेऊ थे ।
उन्हीं के हाथ से उनके गले में फिर से पहिनवाऊं ॥ ८ ॥
मन्दिर तोड़कर मसजिद न मसजिद तोड़ कर मन्दिर ।
न हरगिज़ भूले भाइयों को कदाचित् मैं भी फिसलाऊं ॥ ९ ॥
बुलाकर सब को अपने पास मैं बिठलाऊं मुहब्बत से ।
उठा कर परदा दिल के आयने से तुम्हें दिखलाऊं ॥ १० ॥
न देना "चन्द्र" को कुछ भी हां अगले जन्म में तूने ।
अगर देना तो यह देना कि वादा पूरा कर जाऊं ॥ ११ ॥

भजन नं १७ ।

हे जगत पिता ! हे जगत प्रभु !
मुझे अपना प्रेम और प्यारा दे ।
तेरी भक्ति में लगे मन मेरा,
विषय कामना को विसार दे ॥
मुझे ज्ञान और विवेक दे,
मूझे वेद बाणी में दे श्रद्धा ।
मूझे मेधा दे मूझे विद्या दे,
मुझे प्रज्ञा और विचार दे ॥
मुझे यश दे और मुझे तेज दे,
मुझे बल दे और आरोग्यता ।
मुझे आयु दे मुझे पुष्टि दे,
मुझे शोभा लोक मंझार दे ॥
मुझे धर्म कर्म से प्रेम हो,
तजूं सत्य को कभी भी न मैं ।

कोई चाहे मुझे सुख दे घना,
चाहे कोई कष्ट हज़ार दे ॥

कभी दीन हूं न जगत में मैं,
मुझे दीजे सच्ची स्वतन्त्रता ।
मेरे फन्द पाप के काट दे,
मुझे दुःख से पार उतार दे ।
रहूं मैं अभय न हो मुझ को भय,
किसी मित्र और अमित्र से ॥

तेरी रक्षा पर मुझे निश्चय हो
मेरे भीरुपन को तू टार दे ॥

मुझे दुश्चरित से परे हटा,
सुचरित का भागी बना मुझे ।
मेरे तन को बाणी को शुद्ध कर,
मेरे सकल कर्म को सुधार दे॥

मेरा हृदय लोभ रहित हो,
नित मिले मुझे शान्ति हर जगह ।
मेरे शत्रु गण सुमति कहें,
कुमति को उन की निवार दे॥

तेरी आज्ञा में रहूं मैं सदा,
तेरी इच्छा में रहे सर झुका ।
कभी डूबे शायद अधीरता में,
तो तूही इस को उभार दे ॥

———

भजन नं० १८।

टेक—शरण पड़ा हूं मैं तेरी दयामय।
जगत सुखों में फंसकर स्वामी, तुझ से लिया चित्त फेरी।
पाप ताप ने दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी॥
बहा जात हूं भव सागर में, पकड़ लियो भुजा मेरी।
अनेक कुकर्म गिनों मत मेरे, क्षमा दृष्टि दिओ फेरी।
सम ज्ञान मधुर मुख अपना, करो प्रकाश इक बेरी।
पाप मलीन हृदय में मेरे, ज्योति प्रकाशे तेरी।
प्रेम तरंग उठे मम अन्दर, प्रभु विनय सुनो मेरी।

भजन नं० १९।

प्रभु तेरो प्रेम पदारथ पाऊं। (अब तेरो)
निज भक्तों को प्रेम तुम दीना, मैं भूखा कहां जाऊं।
प्रेम ही भीतर प्रेम ही बाहर, प्रेम से ही लौ लाऊं॥ १॥
तेरे ही प्रेम से हो मतवाला, अपना हो आप भुलाऊं।
अब मेरी विनय सुनो प्रभु मेरे, और किसे मैं सुनाऊं॥ २॥
दासों की मंडली में सांझ सवेरे, तेरे ही गुण गाऊं।
तेरो ही प्रेम प्याला पीकर, "विश्वासी" बन जाऊं॥ ३॥

भजन नं० २०।

हे दयामय! अब हमें अपनाइये।
विघ्नहर हो! विघ्न दूर भगाइये! हे दया० ॥१॥
न्यायकारी शुभ आपका नाम है।
न्यायकरना भी हमें सिखलाइये॥ हे दया० ॥२॥

छा रहा अज्ञान का तमतोम है।
शीघ्र ही शिक्षा किरन फैलाइये। हे दया० ॥३।
चित्त यह चंचल हमारा है प्रभो!
ठीक रस्ते पर इसे ले आइये! हे दया० ॥४॥
हे दयामय! अब हमें अपनाइये।

भजन नं० २१

हरि! हमने बहु दुःख पाये॥
प्रभु! हमने बहु दुःख पाये॥
बनि दीन हीन पर के अधीन बुधि बल विक्रम बिनसाये।
विज्ञान ज्ञान सब तजा मान, आफत में प्रान अब आये॥ हरि०
हा! अमृत जान विष किया पान फल फूट कलह के खाये॥
भूले निजत्व शुचि प्रेम तत्व गुण गिरि से गिरे गिराये॥ हरि०
विद्या-विवेक नहीं रहा नेक, नीचाति नीच कहलाए॥प्रभु०॥
नहीं रहा आज अपना सुराज सब सुख के साज गंवाए॥प्रभु॥
तजि धर्म कर्म सत जान मर्म अघ ओघ अनेक कमाए॥हरि॥
दुःख द्वन्द फन्द द्रुत करहु बन्द, 'हरिचन्द' विनय यह गाये॥
हरि! हमने बहु दुःख पाये॥

भजन नं० २२।

प्रभू जी! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है।
विधाता मुक्ति का दाता पिता तू प्राण प्यारा है॥
प्रभू जी! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है!
तुम्हारे तेज की जोती जगत में जगमगाती है।

सभी थल बज रहा तेरी विजय का ही नकारा है ॥
प्रभु जी ! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है !
दयामय ! आपकी महिमा नहीं हम जान कर सकते।
जहां देखो वहां पर आपका फैला पसारा है ॥
प्रभू जी ! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है !
हितैषी हो तुम्हीं स्वामी हमारे सत्य संबन्धी।
न तुम सा और कोई है जहां सब ढूंढ़ मारा है ॥
प्रभू जी ! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है !
शरण में आ दुःखी होकर जहां जिसने तुम्हें टेरा।
वहीं उसके दुखों को आपने जाकर निबारा है ॥
प्रभू जी ! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है !
सनातन शुद्ध विश्वम्भर निरंजन न्याय कारी हो।
पतित पावन पतित जन को नहीं तुमने बिसारा है ॥
प्रभू जी ! बस हमें केवल तुम्हारा ही सहारा है।

गजल नं० २३।

तेरा नूर सब में समाया हुआ है।
कुल आलम तेरा ही बसाया हुआ है ॥१॥
रमा है तू हर गुल में मानिन्द बू के।
जगत में तूही जगमगाया हुआ है ॥ २ ॥
चमकते हैं दुनियांमें जो चांदसूरज।
तेरे से ही प्रकाश पाया हुआ है ॥ ३ ॥
बदो नेक आमाल देखे तू सबके।
नहीं छुपता तुझसे छुपाया हुआ है ॥ २ ॥
सज़ा औ जज़ा तू ही देता है सबको।
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है ॥ ५ ॥

सिफारिश न झूठी चलेगी किसी की ।
ये वेदों में सबको बताया हुआ है ॥ ६ ॥
तू है सब का मालिक गरीबों का परवर।
जहां कुल तेरा ही बसाया हुआ है ॥७॥
तेरी सिफ्त कुदरत पै कुर्बान मैं हूं ।
दिलोजान तुझसे लगाया हुआ है ॥ ८ ॥
खबर ले लो "बलदेव" की अब तो साहिब ।
तुम्हारी ही खिदमत में आया हुआ है ॥ ९ ॥

भजन नं० २४ ।

वज़न—हरि का ध्यान लगाओ
टेक—लीजिये मोहि अब तार ।
दयामय लीजिये अब मोहि तार ॥
मन बच कर्म के पाप पुंज मम
शीघ्र भस्म कर डार ॥ १॥ द०
जैसे तनिक अंगारी जलावत,
घास के कोठ अम्बार
ऐसो नाम है अघनाशक तव ।
जिसने लिया विचार ॥२॥ द०
तुम्हारा पुत्र सुपुत्र कहला कर,
जाऊं किसके द्वार ।
श्रीमान् महाराजा धिराजा,
आवत शरण तिहार ॥३॥ द०
नहिं पियारी है तहसील दारी,
नहिं जज्जी दरकार ॥ ४ ॥ द०
यदि राखो अपनी सेवा में,

किंकर चौकीदार ॥ ५ ॥ द०
होऊं गवर्नर तब क्या बनेगा।
जाऊंगा अंत सिधार॥६॥
अभिलाषी हूं उस पदवी का।
बना रहूं लगातार ॥ ७ ॥ द०
कपिल पतञ्जलि गौतम आदि,
करनी कर हुए पार ॥ ८ ॥ द०
'अमीचन्द' जैसे नीच को तारो
हे पिता पतितउधार ॥९॥ द०

भजन नं० २५।

अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं॥
करूं किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हरजा।
निरादर है बुलाने को अगर घंटी हिलाऊं मैं॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् को भगवान् पर कैसे चढ़ाऊं मैं॥
लगाना भोग कुछ तुम को यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं॥
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज चाँद और तारे।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊं मैं॥
भुजाएं हैं न सीना है न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप "नारायण" कहां चन्दन लगाऊँ मैं॥

भजन नं० २६।

आनन्द रूप भगवन्, किस भांति तुमको पाऊँ।
तेरे समीप स्वामी मैं किस तरफ से आऊं॥ १ ॥

सुख मूल भक्ति रूपम्, मंगल कुशल स्वरूपम् ।
घड़ियाल शंख को क्या, तेरे सामने बजाऊँ ॥
अनुपम परम छबीले बिन, रंग रस रसीले ।
कण्टक सखा है फुलवा, क्या सिर तेरे चढ़ाऊँ ॥
कोटानुकोट भूमी, उस पर असंख्य प्राणी ।
जगदीश अपना नम्बर, मैं कौनसा गिनाऊं ॥
श्री लक्ष्मी है तेरी, निश दिन चरण की चेरी ।
तांबे का एक पैसा, मैं नाथ क्या चढ़ाऊं ॥ ५ ॥
गंगा है तेरी दासी, सेवक है इन्द्र तेरा ।
तेरे शरीर पर क्या, दो चिल्लू जल चढ़ाऊं ॥ ६ ॥
छोटे से दास तेरे,रवि चन्द्र हैं उपस्थित ।
करते हैं नित उजाला, घृत दीप क्या जलाऊं ॥ ७ ॥
बिनती "किशोर" की है निश दिन यही दयामय ।
हृदय में लौ हो तेरी आंखों में मैं समाऊँ ॥ ८ ॥

भजन नं० २७ ।

आँखों से फिर दिखा दो भगवन् वही ज़माना ।
वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुसरवाना ॥
सन्तान शेर दिल हो बस बुज़दिली मिटा दो ।
भीष्म व भीम सा दो तर्जे बहादुराना ॥
अर्जुन से तीर अफगन पैदा यहां बशर हों ।
तीरे अदू का हर्गिज़ होवें नहीं निशाना ॥
हो प्रेम भाइयों में रामो लषण सा पैदा ।
दिखला दो फिर भरत सा हुब्बे बिरादराना ॥
आज्ञा में मातु पितु के सब कुछ निसार करदें ।

श्री राम सा दिखा दो पितु भक्ति मुखलिसाना ॥
गौतम कणाद आदिकी फिर कुटियां यहाँ दिखावें।
पढ़ने को मिल सकें फिर तहरीर फल-सफाना ॥
मिट जाँय आन पर फिर राणा प्रताप से हम।
बहरे वतन हों पैदा जज़बाते आशिक़ाना ॥
गृह देवियों के दिल में होवे खयाल पैदा।
सीता सा प्राणपति से बर्ताव खादिमाना ॥
गुरुकुल की वह प्रणाली रायज यहां पै करके।
कृष्णो सुदामा ऐसा दिखला दो दोस्ताना ॥
शैदाय हक ऋषी सा फिर तो ज़रा दिखा दो।
तफ़सीर वेद को हो तकरीर आलिमाना ॥
प्रह्लाद और हकीकत से धर्म पर हों कुर्बां।
सहते रहे हमेशा हरकाते ज़ालि-माना ॥
'सादिक' बहार आये उजड़े हुए चमन में।
लब पर हो बुलबुलों के फिर कौम का तराना ॥

भजन नं० २८।

दीना नाथ अब बार तुम्हारी।

पतित उधारण बिरध जान के बिगड़ो ले हो संवारी।
बालापन खेलत ही खोयो, युवा विषय रस राते।
बिरध भये सुध पड़ गई मो को, दुखिन पुकारूं ताते।
सुतन तजो, तिया तजो, भ्रात तजो, तन त्वचा भई जो न्यारी।
श्रवण न सुनत चरण गति वारी, नैन भये जल भारी।
पलत केश कफ कंठ वरोधो कल न परे दिन राती।
माया मोह न छांड़े तृष्णा, दो दुःख दाती।

अब या विथा दूर करिवे को और न समरथ कोई ।
सूरश्याम प्रभु करुणा सागर, तुमते होत सो होई ।

भजन नं० २९

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके पितु कहाने वाले ।
यहाँ थी पहिले धर्म बहार, अब दी सब ने हिम्मत हार ।
होगा तुमसे ईश सुधार, सब के धीर बंधाने वाले ॥१॥
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह हुए व्यभिचारी
वेश्या लगतीं जिनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले ॥२॥
है फिर तुमसे ईश पुकार, नैया करो हमारी पार ।
यह तो डाले हैं मंझधार वेड़ा पार कराने वाले ॥३॥
कहता "रामप्रसाद" है टेर, मेरी दशा लीजिये हेर
नेक न होवे इसमें देर, तुमने बड़े २ काज संभाले ॥४॥

भजन नं० ३० ।

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा ।
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा ॥ १ ॥
ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतंगा ।
आनन्द घन तुम हो, मैं वन का मोरा ॥२॥
जैसे है चुम्बक को लोहे से प्रीति ।
आकर्षण करे मोहि लगातार तोरा ॥ ३ ॥
पानी बिना जैसे मीन हो व्याकुल ।
ऐसा ही तड़पाय तुमरा बिछोड़ा ॥ ४ ॥
इकबूंद जलका मैं प्यासा हूं चातक ।
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा ॥ ५ ॥

प्रभु प्रेम

भजन नं० ३१

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन,
उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया,
तो मन में मैल ज़रा न रहा ॥ १ ॥
परमात्मा को जब आत्मा में,
लिया देख ज्ञान की आंखों से ।
प्रकाश हुआ मन में उस के,
कोई उस से भेद छिपा न रहा ॥ २ ॥
पुरुषार्थ ही इस दुनियां में,
हर कामना पूरी करता है ।
मन चाहा सुख उसने पाया,
जो आलसी बन के पड़ा न रहा ॥ ३ ॥
दुख दायक हैं सब शत्रु हैं,
यह विषय हैं जितने दुनयां के ।
वही पार हुआ भव-सागर से,
जो जाल में इनके फंसा न रहा ॥ ४ ॥

यह वेद विरुद्ध जब मत फैले,
पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद विद्या लोप हुई,
तो ज्ञान का पांव जमा न रहा ॥ ५ ॥
यहां बड़े बड़े महाराजा हुए,
बलवान हुए विद्वान हुए,
पर मौत के पंजे से केवल,
कोई रचना में आके बचा न रहा ॥ ६ ॥

भजन नं० ३२

ढूंढ़ता तुझे था जब कुंज और बन में।
तू खोजता मुझे था दीनके सदन में ॥
तू आह बन किसी की मुझ को पुकारता था।
मैं तुझे बुलाता संगीत में भजन में ॥
हरि चन्द और ध्रुव ने कुछ और ही बताया।
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप धन में ॥
मैं सोचता था तुझ को रावण की लालसा में।
पर था दधीचि के तू परमार्थ रूपी तन में ॥
आखिर चमक पड़ा तू गांधी की हड्डियों में।
मैं था तुझे समझता सुहराब के ही तन में ॥
कैसे मिलूं तुझे जब भेद इस क़दर है।
हैरान हो के भगवन आया हूं मैं शरण में ॥
तव आब है रतन में सौन्दर्य्य है सुमन में।
तू जान है किरण में विस्तार है गगन में ॥

हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिमा प्रदान कर तू ।
देखूं तुझे हृदयों में मन में तथा वचन में ॥
कठिनाइयों और दुखोंका इतिहास हो सुयश में ।
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में ॥

भजन नं० ३३

मेरे राणा जी मैं भगवत के गुण गाना ॥
राजा रूठे नगरी राखे प्रभू रूठे कहां जाना ।
राजा ने भेजा ज़हर प्याला अमृत कर पी जाना ।
डबिया में काला नाग जो भेजा ओ३म् अक्षर कर जाना ।
मीरांबाई प्रेम दीवानी प्रभु प्रीतम वर पाना ॥

भजन नं० ३४ ।

मोरे प्राणपति से जाय कहियो,
दर्शन की लग रही अभिलाशा ।
निस दिन तरसत हैं मोरे नयना,
ज्यो जल बिन चातक प्यासा ।
तुम बिन सब कुछ फीका लागत,
आभरण भूषण मलमल खासा ।
क्षमा करो अपराध प्रीतम,
अब अपनी शरन में दओ वासा ।
धन धन योवन धन है संयोगन,
जिस की पति करें पूरी आशा ।

दास कहावे किस के ढिग जाए,
'अमी चन्द' दासन अनुदासा ।

भजन नं० ३५ ।

है आफों के दिल में भगवन् मकान तेरा ।
और वेद पाठियों के लब पर है नाम तेरा ॥१॥
काशी के बुतकदों में, कुछ तू नहीं मुकीय्यद ।
हर जा है तेरा मन्दिर, हर जा है धाम तेरा ॥ १ ॥
जपते हैं तुम को प्यारे, दुनिया के जीव सारे ।
हस्ती का तेरा शाहद, हर एक काम तेरा ॥ ३ ॥

दिल साफ़ कर लिया है, दुनिया के मल से जिसने ।
वह देखता है दिल में, दर्शन मुदाम तेरा ॥ ४ ॥

आज़ाद को सिखा दो, भक्ति का राह अपनी ।
जिससे अमर हो पी के अमृत का जाम तेरा ॥ ५ ॥

भजन नं० ३६ ।

सजना मैंनूं तेरे मिलन दा चा ॥

दौलतो दुनिया मैं दोनो डिठियां,
वेखण नूं खरी ते सवादों फिकियां ।
बाहरों कूली ते विच्चों तिक्खियां,
सजना मैंनूं प्रेम दी गलियां विखा ॥

मिल २ मैं वेखे दुनियां वाले,
उतों चिट्टे ते बिच्चों काले ।

लोकां दा मुंह वेखन वाले,
सजना मैनूं अपना दर्श दिखा ॥
लोचन अक्खियां दर्शन तांई,
जियरा उमडे पडूं तेरे पाईं ।
मैं दासी तू मेरा साईं,
सजना मैनूं भुल्ली नू राहीं पा ॥
इक तेरी याद दा मैनूं सहारा,
तेरे ही प्रेम से मेरा गुज़ारा ।
"विश्वासी" दा तू ही प्यारा,
सजना हुन तुझ बिन रहा न जा ॥

भजन नं० ३७ ।

मैं उनके दरस की प्यासी ।

जिनका ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं, योगी योगाभ्यासी
जिनको कहते हैं अजर अशोकी, आश्रय है जिनके त्रिलोकी,
न वह जन्मे न वह मरे, काल पुरुष अविनाशी ॥ २ ॥
अभेद अछेद आवर्ण हैं, अक्षर और अनादि ।
अचल अमूर्त और अनुपम, प्रभु सर्व निवासी ॥ ३ ॥
अतुल बल जा का अटल राज है सृष्टि सकल है दासी ।
"अमीचन्द" जिन से होत प्रकाशक, रवि शशि अग्नि प्रकाश

भजन नं० ३८ ।

तुमहीं अब नाथ उभारो। भारत दुख सागर में डूबता ।
अति आरत भारत नर नारी, कहां लग सहैं बिपति अति भारी ।

देख रहे अब ओर तुम्हारी, हितू न कोई सूझता ॥ तु० १ ॥
दशा भई है दीन हमारी, क्षमा करो सब चूक बिसारी
तुम सर्वज्ञ सकल दुख हारी, करो क्षमा की पूरता ॥ तुम० २ ॥
भारत सुतन फूट फल खाया, याते दुसह रोग बढ़ि आया ।
बढ़त जात नहिं घटत घटाया, हठधर्मी अरु मूढ़ता ॥ तुम ॥
जो जो कुछ हम यतन विचारे, झूठे पड़े मनोरथ सारे ।
तभी तुमहारी शरण सिधारे, भूल गये निज शूरता ॥ तुम० २ ॥

भजननं० ३९ ।

जगत के स्वामी जगन्नियंता,
परम पिता को रिझायें क्योंकर !
बसाया जिसने सभी जगत को,
सभी जगत में बसा हुआ जो,
बना के मन्दिर उसे अलहिदा,
बतावो प्यारे बसायें क्योंकर !
बनाई जिसने तमाम दुनिया,
हज़ारों चुन चुन अजब पदारथ,
उसी की मिट्टी को मूर्ति जड़ हम,
विचार देखो बनायें क्योंकर ?
चमक चमक कर ये चांद सूरज,
अनूप जिसकी प्रभा दिखाते,
नहीं समझ में हमारी आता,
उसी को दीपक दिखायें क्योंकर
उदारता का समुद्र जो है,
दुःखों का नाशक सुखों का दाता,
उसी के चरणों में फूल पाती,

टका रुपया चढ़ायें क्योंकर?
पिलाता जो है सभी जगत् को,
सुधा से बढ़कर सुनीर अपना,
उसी को बछड़े का दूध जूंठा,
अबोध में हम पिलायें क्योंकर!
दशो दिशायें बजा रही हैं,
अपूर्व जिसके सुयश का डंका,
उसी के गौरव गान में हम,
ये क्षुद्र घंटी बजायें क्योंकर।
बहाया जिसने मलय सुगंधित,
समीर शीतल त्रिताप हारी,
अचेत होकर भ्रमों में फंस कर।
उसी पै पंखा हिलायें क्यों कर!
समस्त बंधन से मुक्त है जो,
न बांध सकता जिसे है कोई?
उसी को सोने की सांकरी में,
विचारो भाई बंधायें क्यों कर?
ज़रा इशारे पै नाचती है,
तमाम दुनिया बिलोको जिस के,
उसी को गोपी गणों के संग में,
सजा बजा कर नचायें क्यों कर!
जगत के स्वामी जगत नियन्ता,
परम पिता को रिझायें क्योंकर!

भजन नं० ४०।

जो हरि गीत प्रीत संग गाये।
तिसके शोक निकट नाहीं आये ॥
अमृत वत् तेरो चरित मनोहर,
मन की तपन बुझाए ॥ १ ॥
उधरे पतित अधम अति पापी
जो तव शरण में आए।
हे प्रभु हम अति दुखिया होकर
तव शरणागत आए ॥ २ ॥
परम सुख दाता ज्ञान प्रदाता,
तैं यह नाम धराए।
मांग रहे द्वारे पर याचक
अब क्या देर लगाए ॥ ३ ॥
विषयन से उपराम रहूं सदा
भक्ति हृदय में भाए।
पढ़ सुन वेद वेदाङ्ग "अमीचद"
संशय भ्रम मिटाए ॥ जो हरि० ॥

मातृ-वन्दना

[१]

जगत शिर मोर रत्नाकर, हमारा देश भारत है।
मनोहर श्रेष्ठतम भूपर, हमारा देश भारत है॥

[२]

है सजला श्यामला, सफला मही महिमामयी जिसकी।
पर का प्रिय सदन सुन्दर, हमारा देश भारत है॥

[३]

प्रकाशक पुण्य प्रतिभा का, पवित्रागार प्रभुवर का।
यशोधर धर्म धरणी धर, हमारा देश भारत है॥

[४]

हुई विकसित जहांपर सभ्यता, आरम्भ में अनुपम
बलीनरेन्द्र विजयी वर, हमारा देश भरत है॥

[५]

अमर गण भी जहांपर जन्म, पाने को तरसते थे।
वही स्वर्गीय सुखागार, हमारा देश भारत है॥

[६]

हिमालय विन्ध्य मलयाचल, की मनहर दुर्ग मालाओं—
से,दुर्गम दुरधरष दुस्तर, हमारा देश भारत है॥

[७]

कलित कीरति कुमुद कमनीयका, निर्मल कलाधर जो ।
सदा सतनीतिपर निर्भर, हमारा देश भारत है ॥

[९]

जो अनुपम, उच्चतम आदेश, का प्रियतम निकेतन है ।
अजब, अघहीन अजरामर हमारा देश भारत है, ॥

[८]

यही म्रियमाण में कल्याण-दायक प्राण संचारक ।
निधन निर्वाणका अनुचर, हमारा देश भारत है ॥

[१०]

हमारा प्राण जीवन हर्ष, भावोत्कर्ष प्रद भारत ।
सुयश सौभाग्य सुखसागर, हमारा देश भारत है ॥

भजन नं० ४२ ।

तेरी सृष्टि का अय भारत बड़ा सुन्दर नज़ारा है ।
कहीं कैलाश पर्वत है कहीं गङ्गा की धारा है ॥
फलों से हैं लदीं शाखे शजर फूले हैं फूलों से ।
कहीं बेला कहीं चम्पा कहीं पर गुल हज़ारा है ॥
तेरी पूजा के लायक शुद्ध वस्तु पर नहीं मिलती ।
नगर में खोज कर ली है, बनो को ढूंढ़ मारा है ॥
है अमृत दूध गाये का करूं क्या दूध से पूजा ।
मगर वह भी नहीं शुद्ध है, कि बछड़े ने झाड़ा है ॥
बड़े सुन्दर खिले हैं फूल पर चूमे हैं भवरों ने ।
तुझे यह भोग दूं जूठा मुझे यह कब गवांरा है ॥
तो फिर यह मन मेरा शुद्ध है बड़ी अनमोल पूंजी है ।
अगर स्वकीर हो माता तो लो यह तुम पै वारा है ॥

भजन नं० ४३ ।

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यूं ही बियां मेरा,
मैं इस भारत की मिट्टी हूं, यह हिन्दोस्तां मेरा ।
मैं इस भारत के उजड़े हुए खँडर का ज़र्रा हूं,
यही मेरा पता है, यही नामो-निशां मेरा ।
ख़िज़ां के हाथ से मुरझाय जिस गुलशन के हैं पौधे,
मैं उस गुलशन को बुलबुल हूं वही है गुलिस्तां मेरा ।
कभी आबाद यह था किसी गुज़रे ज़माने में,
हुआ क्या यह बदस्ते-गैरउजड़ा खानुमां मेरा ।
अगर यह प्राण तेरे वास्ते जायें न ऐ भारत,
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामोनिशां मेरा ।
मैं तेरा हूं सदा तेरा रहूंगा बावफा खादिम,
तुही हैगुलिस्तां मेरा तुही जन्नत निशां मेरा ।
मेरे सोने में तेरे प्रेम की अग्नि भड़कती है,
निगाहों में मेरे भारत तुही है कुल जहां मेरा ।

———

भजन नं० ४४ ।

सेवा में तेरे भारत, तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझको बनायेंगे हम ॥
तुझ से जने, तूने पालन किया हमारा ।
उपकार जितने करता, क्या २ गिनायेंगे हम ॥
तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा, उस को चुकायेंगे हम ॥
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे ।
तेरी ही सेवा में यह, जीवन बितायेंगे हम ॥

घनघोर दुख घटा भी, हम पर घिरी खड़ी हो ।
क्षण मात्र भी न तुझको, जी से भुलायेंगे हम ॥
तू स्वर्ग है हमारा, तू सौख्य-गृह हमारा ।
तुझसे ही नेह नाता, अब तो लगायेंगे हम ॥
जब जब मरें तुझी में, तब तब सदा जन्म लें ।
मरने के वक्त ईश्वर से, यह मनायेंगे हम ॥
गौरव गिरा है तेरा, दुख ने है तुझ को घेरा ।
दुख में तेरे दुखी हो, आंसू बहायेंगे हम ॥
प्यारे सुवन तिहारे फूट और मद के मारे ।
बेहोश जो पड़े हैं उनको जगायेंगे हम ॥
परमेश ! हां, हमें तुम, पूरन पुनीत बल दो ।
बिन आपके सहारे, कुछ भी न पायेंगे हम ॥

भजन नं० ४५ ।

संसार की समर स्थली में धीरता धारन करो ।
जीवन समस्यायें जटिल हो, किन्तु उनसे मत डरो ॥
वर-वीर बर कर आप अपनी विघ्न बाधायें हरो ।
मर कर जियो, बन्धन-विवश पशु-सम न जीते जी मरो ॥

भजन नं० ४६ ।

करो कुछ देशहित भ्राता ! अगर आप हो दुनियां में ।
निछावर देशपर सर कर दिखा दो काम दुनियां में ॥
भलाई कर चलो सब पर तुम्हारा भी भला होगा ।
भलाई के लिए सर दे दिये लाखों ने दुनियां में ॥
अगर इच्छा तुम्हारी है तरक्की हिन्द कर जावे ।

हटाओ मत कदम पीछे, बढ़ाये जाओ दुनियां में ॥
ज़रूरत है कि हो कुरबानियां भारत पै लाखों की।
फकीरी धार लो भारत का यश रखने की दुनियां में ॥
जो करना चाहो करलो आज, फिर कल का भरोसा क्या ।
समय गुज़रा कहीं आता सुना हमने न दुनियां में ॥
ये तोड़ो दासता की बेड़ियां स्वाधीनता ले लो ।
वतन का राग घर २ में सुनाओ-सारी दुनियां में ॥

भजन नं० ४७

ऐ मेरी जान भारत ! तेरे लिये यह सर हो,
तेरे लिये ही ज़र हो तेरे लिये जिगर हो।
हिचकूं न तेरी सेवा से मेरी जान भारत,
गर्दन पै मेरी रक्खा शमशेर या तबर हो।
ग़म जान के लिये भी मुझको कभी न होगा,
भारत के लिये ही आती ये काम गर हो।
क़िस्मत का मेरा अख्तर चमके फिर आसमां पर,
सेवा में तेरी माता गर ज़िन्दगी बसर हो।
"भारत ही में सदा मैं पैदा हूं और मरूं मैं",
ईश्वर न हो कुछ मन में यह आरज़ू मगर हो।
गर देश ही की सेवा हो प्यारा धर्म्म मेरा,
परमात्मा की भी तो फिर उस तरफ़ नज़र हो।
जीवन सुफल तभी बस समझेगा "साधु" अपना,
सेवा में तेरी माता सर मेरा गर नज़र हो ।

भजन नं० ४८

बुलबुल अगर हैं हम तो वह है चमन हमारा,
तन हो कहीं, यहीं पर रहता है मन हमारा।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
इसके ही अन्न जल से हम सब के सब पले हैं,
मिट्टी है इसकी जिसमें यों फूले हैं फले हैं।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
लगती है बन के सुर्मा आंखों में खाक इसकी ।
हमको है पाक करती तासीर पाक इसकी ।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
मिट्टी ने इसकी क्या २ जग में हैं गुल खिलाये,
चुन चुन के फूल जिससे लोगों ने घर बनाये ।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
थे राम भी यहीं पर, घनशाम भी यहीं पर,
ऐसे महा पुरुष हैं गुजरे भला कहीं पर ?
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
बत्तीस कोटी बच्चे हैं गोद में खिलाता,
सब को यही खिलाता सब को यही पिलाता ।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
इसकी ही रोशनी है चेहरे पै जो चमक है,
है हड्डियों में बेधा इसका ही तो नमक है ।
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥
ख़ादिम इसी के हैं हम मखदूम हैं ये अपना,
प्यारा वतन हमारा, प्यारा वतन हमारा ॥

भजन नं० ४९।

मुझे दे जननी यह वरदान ॥
तेरी ही सेवा में मानूं, मैं अपना सन्मान।
तेरे लिये समर्पण कर दूं, तन मन जीवन प्राण ॥
मुझे दे जननी० ॥
हर्षित होऊँ नेत्रों से लख, तेरी मूर्ति महान।
तेरे ही यश के सुनने में तृप्त रहें ये कान ॥
मुझे दे जननी०
वाणी करती रहे सदा ही, तेरा गौरव गान।
मनन करूं नित मन में, जननी तेरा ही कल्याण ॥
मुझे दे जननी० ॥
सोते जगते इस आत्मा में, तेरा ही हो ध्यान।
ज्ञान, बुद्धि, धाम तुझी को सर्वस करदूं दान ॥
मुझे दे जननी यह वरदान ॥

भजन ५०

यह आरजू है मेरी भारत पै वार कर दूं।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार कर दूं ॥
ऐसी हवा चलाऊँ जायें यह दिन खिजांके।
भारत के गुलिस्तां में मौसम बहार करदूं ॥
ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे।
भारत की उन्नती की नावों को पार कर दूं ॥
यह आस्तीं गुलामी की कौम के बदन पर।
पहनी जो मुद्दतों से वह तार तार करदूं ॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेकर छोड़ूं।

मिट जाय वे करारी दूर इन्तजार कर दूं ॥

भजन न० ५१

जान में जब तक अपनी जान,
दो वह आत्मिक वल करुणा निधि ।
दबें न लख वलवान ॥ १ ॥
हमें डिगाने को यम आवें, अपना विकट रूप दिखलावें ।
कभी न उनसे हम भय खावें, तजें न अपनी आन ॥२॥
पथ में अगर पहाड़ खड़ा हो, चाहे जितना मार्ग कड़ा हो ।
कभी न पीछे पैर पड़ा हो, निभे सदा यह शान ॥ ३ ॥
अटल रहें दृढ़ प्रण पर अपने होंगे सकल क्षुद्र छल सपने ।
शत्रु लगें सब कर कँपने, झुकें करें सन्मान ॥ ४ ॥
मातृ भूमि की वेदी पाकर, सच्चा प्रेम मन्त्र अपना कर ।
हृदय कमल को चढ़ा कर, हो जायें बलिदान ॥ ५ ॥

भजन ५२

ख्वाहिश मेरी है या रब ! अर्जुन मुझे बनाना,
शहजोर भीम करना मोहन मुझे बनाना ।
सानी भरत का मुझको, सरवन मुझे बनाना,
बजरंग बन के ग़म की लंका को फूँक डालूं ।
बहरे महन को फांदूं कोहे अलम उठा लूं ॥१॥

यह आस मेरी पूरी ऐ रब्बे दो जहां हो,
जोशे द्रोण दिल में तन में करन सी जान हो ।
बुशरे से मेरे दम खम सहदेव का अयां हो,
मेरी रगों में फिर से भीषम का खूं रवां हो ॥

भालों की चोट सह लूं हारूं मगर न हिम्मत।
तीरों की सेज पर भी हो लेटने में राहत।.२॥

सांगा की तरह खा लूं खुश होके तेग का फल,
हो बाजुओं में पैदा परताप का सा कस बल।
कौमी वकार पर मैं मिट जाऊं मिस्ल जयमल,
हिफ्जे वतन की खातिर आल्हा बनूं कि ऊदल।
अहलो अयाल छूटें, सर जाय, जान जाये।
माथे पै बुज़दिली की लेकिन शिकन न आये॥३॥

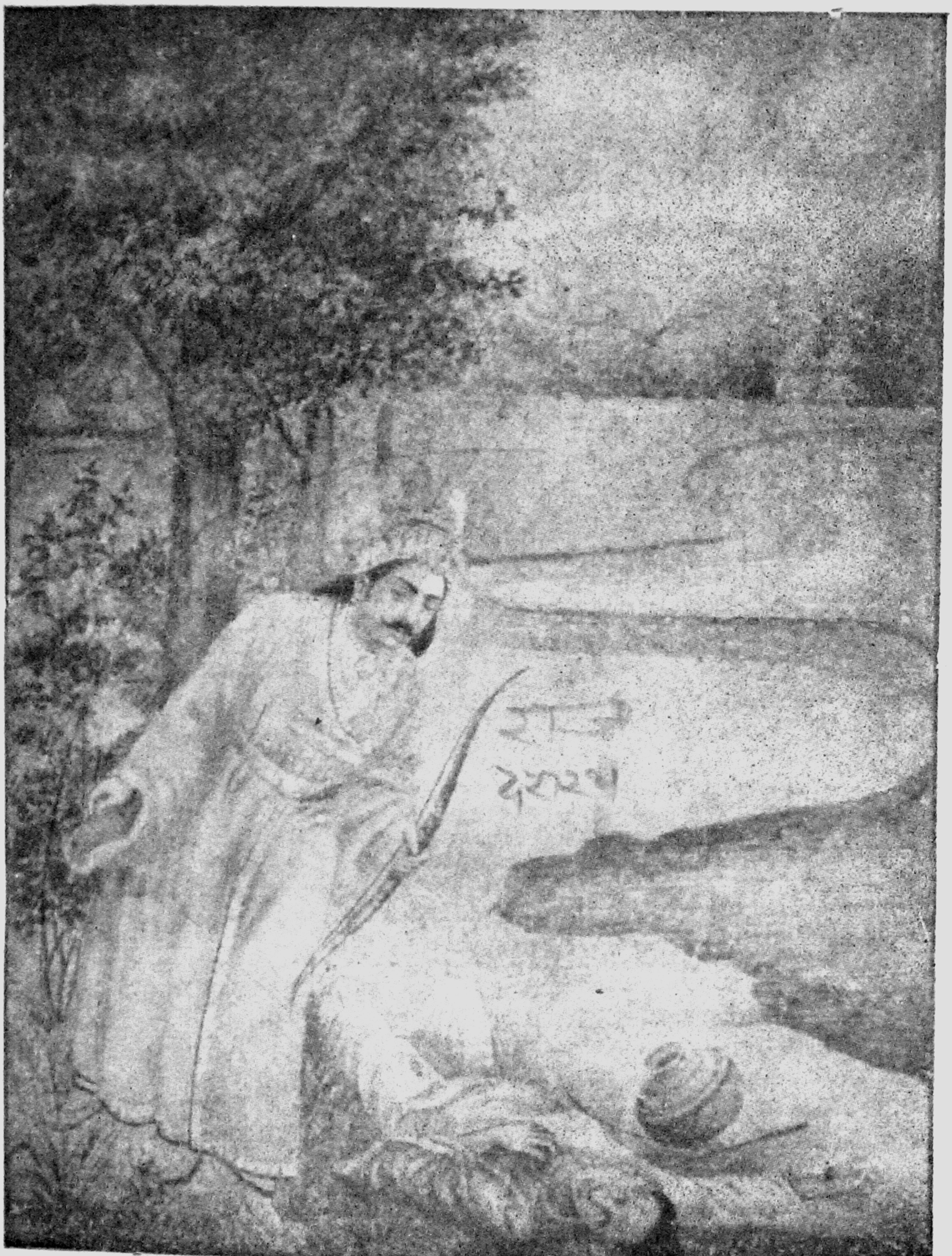
हासिल मुझे धुरू की हो जाय इस्तकामत,
या बख्श दे तू मुझको प्रहलाद की सी हिम्मत।
पूरन की तरह कायम रक्खूं मैं अपना जत सत,
होकर धर्म पै कुरबां बन जाऊं मैं हकीकत।
कट जायं दस्तोपा तक, उड़ जाय जिस्म से सर।
लेकिन न हर्फ आये मुतलक मेरे धरम पर॥४॥

तुझसे यह दस्ते कुद्रत या रब अगर मैं पाऊं.
बहबूद का वतन के बीड़ा अभी उठाऊं।
कौमी निशां को ले के आलम में घूम आऊं,
भूले हुए फसाने फिर से "फलक" सुनाऊं।
सोतों को मैं जगा दूँ नगमा वतन का गा कर।
बिछुड़ों को फिर मिला दूँ धुनप्रीति की उठा कर॥५॥

रामायण की शिक्षा

भजन नं० ५३

शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अति भारी। टेक
एक समय में एक पुरुष न व्याहे ज्यादा नारी।
वृद्धावस्था में दशरथ की इसने बात बिगाड़ी॥
राज छोड़ बन गये राम ने पितु आज्ञा सिर धारी।
अब तो पिता के लिये पुत्र चाहते हैं गिरफ्तारी॥
राजमहल के सब सुखों पर इस दम ठोकर मारी।
बन में गई पति के संग सिया सतवन्ती नारी॥
विपद समय में सङ्ग राम के की लक्ष्मण तैयारी।
अब तो खून पीते हैं भाई, रहते मुकद्दमे जारी॥
राजतिलक को गेंद बना कर खेलन लगे खिलाड़ी।
इधर राम उस तरफ भरत दोनों ने ठोकर मारी।
चरणपादुका धरी तख्त पर यही बात विचारी।
साधु बन कर रहा भरत नहीं बना राज अधिकारी।
राम लक्ष्मण ने सूपनखा को मैया कह कर ललकारी॥
अब जहां देखें चिकनो मिटी फिसल जायें व्यभिचारी॥
लक्ष्मण सीस झुकाता था कह सीता महतारी।
हाय आजकल तो भाभी को कहते आधी नारी॥



सर्वनकुमार और महाराजा दशरथ

कामी रावण ने सीता को कष्ट दिये अति भारी।
फिर भी पतिव्रत धर्म्म बचा कर आई जनक दुलारी ॥
लालच और तलवार से डर कर सिया न हिम्मत हारी।
थोड़े भय से धर्म्म गवायें हाय आजकल की नारी ॥

राजा दशरथका तीर लगने पर श्रवणकुमार का विलाप

भजन नं० ५४

मुझ बे गुनाह पर राजन् धर तान तीर मारा,
तूने ताक कर जिगर को मेरे निशान मारा।
पिता माता मेरे अन्धे जल लेने मैं था आया,
पर तूने जल के बदले सीने पै बान मारा।
बिंधता न गर कलेजा देता पिला मैं पानी,
पर तीर ने तो मेरा सारा औसान मारा।
पहले पिला के पानी पितु मात से यह कहना,
इक बाण से मैं तेरा बेटाजवान मारा।
कुछ "धर्म वीर" सेवा पित मात की न की थी,
झट तीर ने कज़ा बन मेरा है प्राण मारा।

राजा दशरथ के तीर लगने पर श्रवण कुमार के अन्तिम शब्द

भजन न० ५५

मैंने ज़ालिम तेरा क्या बिगाड़ा, तीर सीने में क्यों तूने मारा।
कोई करता खता मेरी ज़ाहिर, क्यों अभागे को जल भरते मारा
बन का बासी जटायें हैं सिर पर, हाय ज़ालिम तपस्वी को मारा
तूने अन्धों की लाठी को तोड़ा, मैं ही श्रवण था उनका सहारा

उनपै गुजरेगी क्या मेरे कातिल, जिनके होते मरे पुत्र प्यारा।
शोक अपना नहीं है पर उनका, जिनको तूने है बे मौत मारा॥
अन्धे माता पिता हैं अकेले, राह देखेंगे कब तक हमारा।
श्रवण २ पुकारेंगेकबतक, उफ! ओजालिम हमतीनों को मारा।
प्यारी अम्मां क्षमा मुझको करना, हाय मरता श्रवण तुम्हारा।
पिता पुत्र तेरा अब जी तोड़ता है नमस्ते करता है श्रवण तुम्हारा
जिसको "आज़िज़" लगी हो वहजाने, तेरी लीला है अपरम्पारा।

दशरथ का श्रवन के माता पिता को जल पान के लिये कहना

भजन नं० ५६

तर्ज—प्रभु जी अब जाऊँ किसके द्वार,
पिता जी कीजिये अब जल पान।
जल भर लाया पुत्र तेरा यह श्रवण आज्ञावान॥
पिता जी कीजिये अब जल पान।
दे जल हाथ में करके इशारा, कहा करो जल पान।
मुँह से पर वह न बोला राजा, भय था न तज दें प्राण॥
देर तक खड़ा रहा यही जान। पिता जी कीजिये०
ले जल हाथ में कहा पुत्र क्यों, खड़े हो तुम चुपचाप।
हरगिज जल हम नहीं पीयेंगे; जब तक न बोलो आप॥
प्यास से निकल जांय ख्वाह प्राण। पिता जी कीजिये०
पानी लेने जब सुत तेरा, घाट पर पहुँचा जा।
तीर अचानक जानके हरिण सीने पै मुझसे लगा॥
दिए उसने त्याग झट प्राण। पिता जी कीजिये०
"धर्म्मवीर"! जैसे सुत के घाव से निकले हमारे प्राण।

जा राजन् तू भी सुत के दु:ख से तड़प के त्यागे प्राण॥
इतना कह कर त्याग दिये प्राण । पिता जी कीजिए०

राम का राजा दशरथ से बन जाने के लिये आज्ञा मांगना

भजन नं० ५७।

लिखा तकदीर का हरगिज नहीं कोई मिटाता है।
बिगाड़े है किसी को और किसी को वह बनाता है।
खता इसमें तुम्हारी है न कोई दोष माता का।
लिखा जो कर्मों का होता है आगे वही आता है॥
यह रिश्ते और नाते जो भी हैं सो जीते जी के हैं।
निकलते स्वांस के ही फिर न रिश्ता और नाता है।
करो आज्ञा मुझे बन की, कि जल्दी जाऊँ मैं बन को।
समय यह कीमती मेरा हुआ बेकार जाता है।
तुम्हारे दिल के सदमे को पिता मैं जानता भी हूँ।
मगर मैं क्या करूँ इसकी खुशी है यह भी माता है।
वही बेटा सपूतों में है जो हर एक हालत में।
पिता माता की आज्ञा को सिर आँखों पै उठाता है।
न माता की यदि आज्ञा मैं पालूँ तो ऐ स्वामी
मैं नालायक बनूँगा और तुम्हारा बचन जाता है।
पिता के हुक्म के आगे यह जीवन माल ही क्या है।
नहीं परवा प्राणों की पिता तू प्राण दाता है।

श्री राम के बन को तैयार होने पर सीता की बिनती

भजन नं० ५८

श्रीराम बन को चलने को तैयार जब हुए ।
सीता ने सिर को कदमों में रख यह बचन कहे ॥
आज्ञा से अपने बाप की जब आप बन चले ।
माता पिता का हुक्म भी है पालना मुझे ॥
माता पिता के हुक्म से मुंह कैसे मोड़ लूं ।
पति व्रत धर्म अपना भला कैसे छोड़ दूं ॥
बनबास राह बाट में साथ रहूंगी मैं ।
चलने के वक्त राह में कांटे चुनूंगी मैं ॥
पहिले खिलाके आप को पीछे मैं खाऊंगी ।
जिस दम थकोगे पैर तुम्हारे दबाऊंगी ॥

रामचन्द्र जी का सीता को समझाना

भजननं ५९ ।

सिया दुख बन में उठाना होगा,
प्यारी मत जाओ पछताना होगा--टेक

राज पाट भूषण और बस्तर, सब कुछ तुम्हें गंवाना होगा १
कठिन भूमि में कोमल पैरों, बिना सवारी जाना होगा २
वृक्ष तले धरती पर सोना, बन तृण पत्र बिछाना होगा ३
बल्कल वस्त्र अंग-रक्षा-हित, कन्द मूल फल खाना होगा ४
हाथ कमंडल बगल मृगछाला, तन में राख लगाना होगा ५
"हरदत्त" कहे बोली यों सीता,'जो कुछ होगा बिताना होगा ६

रामचन्द्र जी के समझाने पर सीता का यथोचित उत्तर

भजन नं० ६० ।

चाहे लाख कहो नहीं मानूं पति,
मैं तो बन को चलूंगी संग पिया ।
घर बार से मुझ को काम नहीं,
यही मैंने नाथ विचार लिया ॥
जहां नाथ तुम्हारा दर्शन है,
वहां सुख का समूह निरन्तर है ।
दासी का ध्यान तो तुम से लगा,
है चित्त चरणन नाथ लगाय लिया ॥
पतिप्रेम में मग्न रहे तिरिया,
यह धर्म्म सनातन है स्वामी ।
तन मन और धन से सेवा कर,
सुख लेवे सब भर नार पिया ॥
सुख धन आराम रोग हैं सब,
तुम बिन हैं दुःख समान सभी ।
इस तन से आप की सेवा करूं,
यूं मन अपना अख़्तियार किया ॥
जा कठिन होंगे वहां रस्ते,
मुझे फूलों से भी कोमल स्वामी ।
श्री जानकी नाथ कृपा करिये,
वर मांग रही बहुबार सिया ॥

केकई से मुखातिब होकर भरत की आहोज़ारी

भजन नं० ६१ ।

अरे धरती ! बस अब फटजा कि झट तुझ में समाऊं मैं ।
आ बिजली! टूट पड़ मुझ पै भस्म जल्दी हो जाऊं मैं ॥
तेरी करनी से ऐ माता हुआ मैं शर्मसार ऐसा ।
नहीं दिल चाहता अपना किसी को मुंह दिखाऊं मैं ।
है काटा वह शजर तूने कि जिस के साये रहमत में ।
सभी पाते थे हम राहत कहां अब उसको पाऊं मैं ॥
मेरी माता तेरी करनी जहां से बस न्यारी है ।
है तेरा पास खातिर बस ज़ियादा क्या बताऊं मैं ॥
अन्धेरा छा गया सारे अवध मेंसख्त है मातम,
रघुकुल नइयरे आज़म को कहो कैसे जलाऊं मैं ॥
नहीं मौजूद हैं जबकि अवध के चन्द्र भी इसजा ।
अयोध्या क्यों न हो सुन्सान अन्धेरा पर मिटाऊं मैं ॥
जुदाई सह नहीं सक्ता हूं सीता राम लक्ष्मन की ।
सुबह दम जाऊंगा बन को उन्हें वापस ही लाऊं मैं ॥
मुझे नहीं राज की ख्वाहिश मुझे नहीं बाज की ख्वाहिश ।
हमेशा पाय रघुबर पर सर अपने को झुकाऊं मैं ।
सहाईअवध के होंगे श्री रघुबर श्री रघुबर ।
कि तारीखे अवध में नाम गासिब क्यों लिखाऊं मैं ॥

श्री रामचन्द्र जी का भरत को उत्तर

भजन नं० ६२ ।

भरत ! क्यों लेने आया है मुझे मैं जा नहीं सक्ता
अयोध्या में बरस चौदह से पहले आ नहीं सक्ता ॥

मुझे परवाह नहीं चक्रवर्ती राज की मुतलिक ।
मुझे भ्राता तेरा रोना कभी फिसला नहीं सक्ता ॥
पिता की आज्ञा का शौक से पालन करूंगा मैं ।
कि मेरा पाए इस्तकलाल लग़ज़िश खा नहीं सक्ता ॥
कलंकित हो नहीं सकता प्रण के तोड़ देने से ।
बचन जो कर चुका हूं मैं उन्हें लौटा नहीं सक्ता ॥
ऐ जावाल मन्त्री तू मुझे क्या लोभ देता है ।
तेरा उपदेश यह उल्टा मुझे बहका नहीं सक्ता ॥
कभी भय मोह और अज्ञान के फंदे में फंस कर भी ।
करूं मैं राज हरगिज़ ध्यान में भी ला नहीं सक्ता ॥
करूं पूरी प्रतिज्ञा, करूं पूरी प्रतिज्ञा ।
कोई अब धर्म मर्यादा को अब तुड़ा नहीं सक्ता ॥
गुरु वशिष्ट जी महाराज ! बजा है आपका कहना ।
मगर अफसोस है इस हुक्म को अपना नहीं सक्ता ॥
गुरु जी मैं दया से आप का वह वीर क्षत्री हूं ।
किसी का बल कभी भी ज़क मुझे पहुंचा नहीं सक्ता ॥
यह मुमकिन है कि अपनी चांदनी महताब खो बैठे ।
तज़लज़ल मेरे सीने में जगह कुछ पा नहीं सक्ता ॥
समुन्दर त्याग दे पानी हिमालय छोड़ दे हिम को ।
मगर मेरे इरादा में तग़ैयर आ नहीं सक्ता ॥
ज़मीं गरदिश को सूरज धूप को है तर्क कर सक्ता ।
मगर कहना पिता मेरे का दिल से जा नहीं सक्ता ॥

भरत का खड़ावें लेकर जाना।

भजन नं० ६३

तर्ज-शीश जिनकेधर्म परचढ़े है।

अच्छा राम भैया मेरे प्यारे, मुझको देदो खड़ाऊं उतारे।
चरण पादुका तखत सजाऊं, बनके सेवक मैं हुक्म बजाऊं॥
साल चौदह मैं ऐसे निभाऊं, जैसे और हैं सेवक तुम्हारे।
अच्छा राम भैया०।,
साल चौदह खतम करके आना, आके जल्दी से दर्श दिखाना
सच जानो न देर लगाना, वर्ना होवेंगे प्राण न्यारे।
अच्छा राम भैया०॥
मैं भी भूमि पर आसन लगाऊं, साल चौदह मैं ऐसे निभाऊं।
बनबासी का जीवन बनाऊं, जैसे रहते हैं "धर्मवीर" न्यारे॥
अच्छा राम भैया ०

भीलनी के बेर

भजन नं० ६४

ऐसे मीठे बेर तो मैंने न खाये थे कभी।
महल के खानों में सीता ने न चुनवाये थे कभी॥
शाही गोदामों में सच्ची नियामतें नायाब हैं।
बन के जंगल से भी तो लक्ष्मन न लाए थे कभी
दावतें राजों महाराजों की मैं खाता रहा।
पर न दस्तरखान पै यह झूठे बेर आए कभी
राज भाई को मुबारक है मुझे बनवास खूब।
भीलनी के बेर राजों ने न खाए थे कभी॥
मुझको अमृत का मजा देता है यह भक्ति का रस।

भीलनी ने जिससे थे यह बेर झुठलाये कभी ॥
ऐ ब्राह्मण तेरे मनकों से है यह पाकीज़ा तर ।
क्या है गर माला के सूत्र में न बेर आए कभी ॥
राज होगा भीलनी के प्रेम का दिल पै मेरे ।
राज सिंहासन पै फिर पाओं अगर आए कभी ॥

शेरनी की गरज

भजन नं० ६५ ।

रावण हट जा मेरे सामने से ज़रा
मुझको सूरत तू अपनी दिखावे मती ।
तेरी सुन ली हैं बातें नर्म और गर्म,
मेरे दिल को तू ज़ियादा दुखावे मती ॥
अब तो आंखों मेंसूरत बसी राम की,
मैं रवादार तक न तेरे नाम की ।
मुझको परवाह नहीं दुःख व आराम की,
यहां लालच के फंदे फैलावे मती ।
मुझे ताने और मेहने देता है क्या,
मुझे मौत का खौफ दिखाता है क्या ।
लेके तलवार चढ़ चढ़ के आता है क्या ।
मौत अपनी को नाहक बुलावे मती ॥ रावण हट० ॥
जो तुझे अपने बल का बंधा है भरम ।
तो स्वयम्बर से भागा था क्यों नोक दम ।
डूब मर चुल्लु भर पानी में ओ बेशरम ।
ज़रा शेखी के चिल्ले चढ़ावे मती ॥ रावण हट० ॥

तेरी लंका जो जड़ से उखाड़ी नहीं ।
तो मैं सीता जनक की दुलारी नहीं
खाली जावेगी यह आहोज़ारी नहीं।
नाम अपना जहां से मटावे मती ॥ रावण हट० ॥

सीता का उत्तर ।

भजन नं० ६६ ।

वतर्ज-चलोरी सखी चलदर्शन करिये रघुनन्दनरथ चढ़ि आवत है

अय रावण तू धमकी दिखाता किसे,
मुझे मरने का खौफो खतर ही नहीं ॥ अय०
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥ अय०
तू जो सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे वह मिटी का घर ही नहीं ॥ अय०
मेरे मन का सुमेरु डिगेगा नहीं,
मेरे दिल में किसी का तो डर ही नहीं ॥
आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी,
क्या मजाल जो शील को मेरे हरें ।
तेरी हस्ती है क्या बिना राम पिया,
मेरी दृष्टी में कोई मनुष्य ही नहीं ॥ अय०
मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी,
क्यों न जीत स्वयम्बर से लाया मुझे ।
वह था कौन नगर मुझे दे तू बता,
जहां स्वयम्बर की पहुंची खबर ही नहीं ॥ अय॥
जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा,

मुझे राम से जल्दी से दे तू मिला ॥
कहे सीता वगर्ना तू देखेगा क्या,
चन्द रोज़ में तेरा यह सर ही नहीं ॥ अय०

भजन नं० ६७।

प्यारी मैं राम की हूं शोभा जहान की हूं।
सत से न गिरूंगी ऐसी मैं जानकी हूं ॥
क्यों तेग़ तानता है बदले में मेरे सर के।
तेरा ही सर कटेगा पक्की निशान की हूं ॥
लड़की जनक की हूं मैं खंजर से क्या डरूंगी।
कुछ तो विचार पापी किस ख़ानदान की हूं ॥
यह वंश बेल तेरी मिट करके ही रहेगी।
मत जान जानकी हूं दुश्मन मैं जानकी हूं ॥
तोड़ा धनुष पति ने जब माला मैंने डाली ॥
ब्याही हूं मैं ऐसी शौकतो शान की हूं ॥
है जिस्मों जान उसकी वैराग्य में हूं जिसके।
पति राम हैं हमारे प्यारी मैं राम की हूं।
जो खैर अपनी चाहे दे भेज पास उनके ॥
चेरी मैं "इन्द्र" उन ही, कृपा निधान की हूं ॥

लक्ष्मन को शक्तिबाण लगने पर राम की बेकरारी

भजन न० ६८

मेरी जां मुझे बता दे क्यों आज बेरुखी है।
रहती थी जो शगुफ्ता क्यों बन्द वह कली ॥

उल्फत के साथ हरदम तू मुझको देखता था।
अफसोस ! भाई अब वह तेरी नज़र फिरी है ॥
तेरी खामोशी से दिल पाश पाश अपना ।
कुछ तो बता दे मुझसे कैसी खता हुई है ॥
माता पिता के गम को तूने भुला दिया था ।
अब भी मुझे तसल्ली दे सख्त बेकली है ॥
वादा था रंजो गम में साथी सदा रहूंगा ।
लेकिन खिलाफ उसके कैसी यह अब हुई है ॥
किसमत फिरी है अपनी उसका बना निशाना ।
तेरे मुकाबिले जो लश्कर छुई मुई है ॥
उठ बैठ जल्द भाई लग जा गले से वरना ।
तू किस जगह चला है रस्ता मेरा वही है ॥
क्योंकर दिखाऊं मुंह शादां अवध को जाकर ।
क्या जाने मौत भी किस पर्दे में जा छिपी है ॥

भजन नं० ६९

क्या गज़ब ढाया फलक ने शक्ति लगी क्या बीर के ।
आ देखलूं प्यारे लखन कितने ज़ख्म हैं तीर के ॥
कैसे तुझे जिन्दा करूं व मैं भी विष खाके मरूं ।
तीर तो हुआ पार है सारे जिगर को चीर के ॥
यों सुमित्रा जी कहेंगी लानतो फटकार दे ।
खो दिया लख्ते जिगर मैं भेज संग फकीर के ॥
वास्ते औरत के इक आह खून होता भाई का ।
कैसे चक्कर में पड़े हैं आप के तकदीर के ॥
आंख खोलो अब ज़रा तो शान्ति दो राम को ।

मुझसे तो जाते नहीं दरया बहाये नीर के ॥
पूछा है गिरधर से, इससे भी कुछ न बना।
घोड़े दौड़ाये दोनों ने मिल के बहुत तदबीर के ॥

भजन नं० ७०

भाई न छोड़ तिन्हा मुझसे करो किनारा।
क्यों हो रहे हो चुपके कुछ तो करो इशारा॥
माता को भाई लक्ष्मन मैं क्या जवाब दूंगा।
जब कि कहेगी भाई लक्ष्मण कहां तुम्हारा॥
तेरी बहादुरी पर रावण से युद्ध ठाना।
ठहरो जरा भ्राता मानो कहा हमारा॥
बिन तेरे कैसे भाई सीता की हो रिहाई।
बिन तेरे मैं अकेला दुश्मन का गोल मारा॥
मुझको, बतादे भैया, किस के किया हवाले।
दे कौन बेकसी में अब मुझे सहारा।
भाई! न शत्रुघ्न है न भरत पास मेरे।
तेरा था इक सहारा तू भी अदम सिधारा॥
भाई था एक साथी बन की मुसीबतों में।
उसका भी आज भगवन्! है कूच का नक़ारा॥

हनुमान जी की स्वामि भक्ति

भजन नं० ७१

बढ़ा दे आज की शब और चर्खे पीर थोड़ी सी।
कि ले आऊं लखन के वास्ते अक्सीर थोड़ी सी॥
न जाने ज़हर छिड़का किस तरह रग २ में नस २ में।
चुभी थी सिर्फ सीने में ही नोके तीर थोड़ी सी॥

सहर होते ही सूरज बंश में मच जायगा मातम ।
श्री सूरज निकलने में करें ताखीर थोड़ी सी ॥
संजीवनी बन क्या है रातों रात पहुंचू कोह भी लेकर ।
पवन जो गर मदद थोड़ी सी दे रघुबीर थोड़ी सी ॥
जिलाना लक्ष्मण को कौन मुश्किल काम है लेकिन ।
दिखाना है दवा की भी "उफक" तासीर थोड़ा सी ॥

सीता जी की आहोज़ारी

भजन नं० ७२

तड़फती हूं शवोरोज़ आह गम में मुब्तिला होकर ।
रहे आराम से क्या मीन पानी से जुदा होकर ॥
बहारे चन्दरोज़ा पर न भूल ऐ बुलबुले शैदा ।
हमारा गुल्शने उम्मीद सूखा है हरा होकर ॥
तमन्ना थी कि बाकी दिन श्री चरणों में काटूंगी ।
मैं अपनी ज़िन्दगी समझूंगी रहना नक्शे पा होकर ॥
मगर नक्शे मुकद्दर मेरा पेशानी पै हंसता था ।
लिखा था राम से सीता को रहना यूं जुदा होकर ॥
बड़ी मुश्किल से बुलबुल रुये गुल को देख पाई थी ।
अभी थी छूट कर आई कैदे रावण से रिहा होकर ॥
कि एक धोबी के लब पर आह हर्फे एतराज़ आया ।
मेरे हक में मगर निकला वही तीरे कज़ा होकर ॥
नहीं थी है न होगी जानकी को जान की परवाह ।
मगर है खाये जाता रंजे तोहमत अज़दहा होकर ॥
अगर भूले से भी दिल में खयाले गैर आया हो ।
रहूं सातों जन्म जग में गिरफ्तार बला होकर ॥

इन आंखों में अगर जुज राम सूरत और आई हो।
फिरूं सातों जन्म जग में मैं अन्धी बे नवा होकर॥
अगर जुज राम समझा हो किसी को मर्द तक मैंने।
जलूं सातों जन्म नारे जहन्नुम में वबा होकर॥
वही हो राम जो मेरे हरण पर जान देते थे।
नहीं लाजिम था बनना बेवफा यों बावफा होकर॥
किया है आपने कुरबान मुझे, अपनी रिआया पर।
हो खेते किश्तिये इखलाक उनकी ना खुदा होकर॥
मगर मैं भी रैय्यत आपकी थी स्त्री जो थी।
नहीं लाजिम था मुझपर जुल्म करना पुरजफा होकर॥
मेरा तो अबभी चरणों में तुम्हारे ध्यान रहता है।
मेरी हस्ती है शामिल आप में रंगे हिना होकर॥
प्रभु से इल्तजा है रोजो शब आयन्दा जन्मों में।
विवाह हो राम से मेरा रहूँ मैं भार्य्या होकर॥
हुआ होने को सब कुछ "प्रेम" पर इक नाज़ है हमको।
कि अपनी जिन्दगी भर हम जिये हैं बावफा होकर॥

हरिश्चन्द्र ।

भजन नं० ७२

ताजे शाही को कोई अपने गिराये क्यों कर।
ऐ हरिश्चन्द्र तेरी याद न आये क्यों कर।
तेरा ही दम था कि कर बैठा खज़ाना खाली।
अपनी दौलत को भला कोई लुटाये क्योंकर॥
तेरी हस्ती ने दिखाया हमें साबित करके।
तख्ते सुल्तानी पे फ़क्कड़ को बिठाये क्योंकर॥
तूने बतला दिया कि लख्ते जिगर-बीबी को।
बेचने को सरे बाजार बुलाये क्यों कर॥
तू ही था जिसने करी नौकरी मेहतर के घर।
वर्ना इस रास्ते वह कौन है-जाये क्यों कर॥
बन चुका फर्ज शनास ऐसा तू ही मर्घट में।
वरना बीबी पै कोई तेग उठाये क्योंकर॥
मुल्क को कौम को है फ़खर तेरे कामों पर।
इस लिये "चन्द्र" तेरे गीत न गाए क्यों कर॥

———

भीष्म प्रतिज्ञा

भजन नं० ७४।

तख्त पर बैठने का जब कि सवाल आयेगा।
भीष्म नाहक बताके फौरन ही टाल जायेगा॥
तर्क करता हूं ऐ मल्लाह हक्के शाही।
अहद तोडूंगा न गो लाख जवाल आयेगा॥
वायदा करता हूं यक दम में मिटादूं हस्ती।
शीशए कल्ब में जिस वक्त भी वाल आयेगा॥
हो नहीं सक्ती है उस वक्त भी वायदा शिकनी।
सूरते आतिशे दोजख भी हिलाल आयेगा॥
छोड़दे छोड़दे बेशक वह धुरु मर्कज को।
हर्फ वायदे पे मेरे क्या मजाल आयेगा॥
सामने अपने मुशीरों के खुशी से मैं कहूं।
यास फटकेगी कभी और न मलाल आयेगा॥
चश्मए दिल में तेरे और जो कांटा खटका।
सब्र कर सब्र यह उसको भी निकाल आयेगा॥
वारिस इस तख्त का आलम में हो कैसे कोई।
जब कि शादी का ही दिल में न खयाल आयेगा॥
सूरते भीष्म हो पाबन्दे सखुन अहले कौम।
हाथ बान्धें हुए फिर "चन्द्र कमाल आयेगा॥

श्रीकृष्ण और सुदामा

भजन नं० ७८।

आया जब निर्धन ब्राह्मण कृष्ण के दरबार में।
वस्ले गुल बुलबुल को हासिल हो गया गुलजार में॥

नंगे पाओं मिस्ले मजनूं छोड़ शाही तख्त को ।
ड्योढ़ी पै आ के चिपट बैठे इस जिस्मे यार में ॥
फारगुल तहसील होकर किस जगह रहते रहे ।
रोज़ोशब बेकल रहा मैं आपके इन्तजार में ॥
जेब तन कपड़ा नहीं क्यों जिस्म लागर हो गया ।
हैफ ! कैसे फंस गये हो पंजाये अद्वार में ॥
ला बिटाया तख्त पर अपने बराबर मित्र को ।
है खसूसियत यही तो सच्चे लुत्फ और प्यार में ॥
पानी पटरानी के लाने में हुई लहमे की देर ।
अश्के उल्फत आ गए फौरन चश्मे यार में ॥
आप आबे चश्म से धोने लगे हैं पाये दोस्त ।
ऐसे बांधे जा चुके हैं मुहब्बत के तार में ॥
पाओं के कांटे निकाले उनके लेकर कृष्ण ने ।
कट के आते हैं जिगर के टुकड़े खूं की धार में ॥
हर तरह खातिर तवाजा कृष्ण जी करते रहे ।
"चन्द्र" ऐसे दोस्त अब कहां हैं संसार में ॥

भजन नं० ७६ ।

(सिकन्दर सुल्तान रूम का भारत की सीमा पर एक योगी से मिलाप)

[सिकन्दर योगी से खुश होकर]

गर हुक्म आपका हो पुख्ता मकां बना दूं ।
आराम का मुहय्या सामान सब करा दूं ॥
जङ्गल है यह बयाबां खौफो खतर का मखज़न ।
सङ्गीन पहरा मैं क्यों न यहां लगा दूं ॥

काफी नहीं है हरगिज यह एक मृगछाला।
कालीन-फर्श मखमल लाकर मैं खुद बिछा दूँ॥
बेचन है तबियत ऐसी गज़ब की गर्मी।
फर्माइये ज़ुबां से पङ्खा कुली बिठा दूं॥
लकड़ी का तख्त बेशक तकलीफ दे है तुमको।
बिस्तर-पलङ्ग सोने के वास्ते मंगा दूं॥
पानी के वास्ते भी प्याला नहीं है कोई।
लाकर तमाम बरतन तकलीफ यह मिटा दूं।
सर्दी में ओढ़ने को कम्बल तलक नहीं है।
उम्दा से उम्दा कपड़े इस वक्त भी सिला दूं॥
खाने के वास्ते भी आटा नहीं है जौ का।
आटे का ढेर कर दूं घी की नदी बहा दूं॥
तकलीफ से बसर क्यों औकात कर रहे हैं।
हाजिर हूं "चन्द्र" दर पर जो हुक्म हो बजा दूं॥

योगी का योग्य उत्तर

भजन नं० ७७।

बादशाहत है तुझे गर्दिश में लाने के लिये।
यह फकीरी है मेरी आराम पाने के लिये॥
दुश्मने ईमानो जां है तेरे, तेरे ही हवास।
इन्द्रियां प्रबल नहीं मेरी सताने के लिये॥
चिउंटी से हाथी तलक दुश्मन दिखाई दें तुझे।
मुझ पर हैं सब मित्र की दृष्टी घुमाने के लिये॥
तुझको लश्कर-फौज में भी रहता है जां का खतर।
है मेरा परमात्मा गम से हटाने के लिये॥

शिद्दते गर्मी से तेरे लश्करी हैं नीम जां।
वृक्ष अनगिन हैं मुझे पङ्खा झुलाने के लिये॥
कीमती पोशाक भी तन पर तेरे सजती नहीं।
राख है काफी मुझे तन पर रमाने के लिये॥
रहती है ज़र की हविस में तुझको हरदम बेकली।
लाल हैं सन्तोष के मेरे खज़ाने के लिये॥
अच्छे से अच्छा भी खाना तेरे मन भाता नहीं।
हैं मधुर फल मूल आदि मेरे खाने के लिये॥
सोने और चांदी के बरतन भी तुझे भाते नहीं।
यक कमण्डल है मेरे सब काम आने के लिये॥
देखता फिरता है तू मसनुई थियेटर रातदिन।
कुमरियां गाती हैं नित मुझको सुनाने के लिये॥
देखता है नाच तू अस्मत फरोशों का सदा।
नाचते हैं मोर गण मुझको रिझाने के लिये॥
तेरे रहने के लिये नाचीज है छोटा सा घर।
है ज़मीनों आस्मां मेरे बसाने के लिये॥
मखमली गद्दों पे तुझको नींद तक आती नहीं।
कुदरती सब्ज़ा बिछा मेरे सुलाने के लिये॥
मांगता है अब भी तू ईश्वर से दुनियां भर का राज।
हाथ फैलाता नहीं मैं एक दाने के लिये॥
शाह बतला तो सही तू है धनी या मैं धनी।
"चन्द्र" आया था मुझे जो आज़माने के लिये॥

भजन नं० ७८ ।

तू शाहनशाह मैं दर का गदा,
है रूह एक तकदीरें दो ॥
तू तख्तनशीं मैं खाकनशीं,
है वतन एक तामीरें दो ॥
तू ज़ाहिर है मैं बातिन हूं,
है ख्वाब एक ताबीरें दो ॥
तू बस्ती में मैं जंगल में,
है मुल्क एक जागीरें दो ।
तू फूले चमन मैं खारे दश्त,
नक्काश एक तस्वीरें दो ॥
तू फिकरमंद मैं दरदमंद,
दिल मयान एक शमशीरें दो ।
तू माल मस्त मैं खयाल मस्त,
है मरज़ एक तदबीरें दो ॥
तू कलमबन्द मैं ज़बान बन्द,
है बन्दिश एक जंजीरें दो ।
तू लै में चूर मैं खुद में चूर,
है तार एक नखचीरें दो ॥

भजननं० ७९ ।

गुज़श्ता मरदों के कारनामे, यह कह रहे हैं सुना २ कर ।
बना रहे हैं इन्सान कामिल, सबक हजारों सिखा २ कर ॥
है मर्द वह जो कहा किए सो, रवाने जां का न उसमें डर हो ।
किये बुज़ुर्गों के कौल पूरे, हजार ज़हमत उठा २ कर ॥

हुए हैं भीष्म पितामह लाखों, न देखी औरत जिन्होंने आंखों।
रहे थे आखिर तलक मुजर्रद, दिलों पै काबू बिठा २ कर॥
बिका था काशी में हरिश्चन्द्र, गुलाम भङ्गी के घर का बनकर।
निभाया अपने प्रण को लेकिन, शहर के मुर्दे जला २ कर॥
रिवाज रघुकुल का ऐसा पाया, बचन न हारा गो गम उठाया
बनों में रहते थे राम लक्ष्मण, फकीरी बाना बना २ कर॥
कहां है प्रताप जैसा राणा, मिला न जङ्गल में आबो दाना।
न कौल हारा किया गुजारा, जंगल के पत्ते चबा २ कर॥
कहां हैं गुरु गोबिन्द के लड़के जिनों को ज़ञ्जीरों में जकड़ के।
दिवारों में भी चुनाया जिनको, था ईंट गारा लगा २ कर॥
कहां शिवा और कहां धुरू हैं, न प्रहलाद अपने की आबरू है।
फलक ने लाखों दफा उखाड़ा, रहे थे पांवों जमा २ कर॥
गया कहां पर दिलावर हकीकत, उठाई जिसने कड़ी मुसीबत
कटाई मर्दाना वार गर्दन, छुरे के नीचे झुका २ कर॥
दिखाई देते नहीं हैं गौतम जिन्होंने छोड़ा था राज्य उत्तम।
सिखा गए थे जो राज्य करना, गले में अलफी सजा २ कर॥
थी हिन्द में जब कमाल ज़ुलमत, करी शंकर ने आके हिम्मत।
दिलों को रौशन वह कर गया था, अजीब दीपक जला २ कर
जमाना ज्यादा न होने पाया, इक मर्द मैदां में और आया।
हजारों खाई थीं ईंट पत्थर, अन्मोल मोती बता २ कर॥

कव्वाली नं० ८०

ओ आफताब तूने देखा है सब जमाना।
अह्दे युधिष्ठिरी की वह शान खुशरवाना॥ १॥
उज्जैन राजधानी चौदह रतन का मजमा।

विक्रम की सलतनत के अहकाम आदिलाना ॥ २ ॥
हाथों में भीम के वह फिरना गदा का रण में ।
अर्जुन से सफ़ शिकन का जंगे बहादुराना ॥ ३ ॥
काशी के मरघटों में तुझको नज़र था आया ।
दानी हरिश्चन्दर (हरिश्चन्द्र) खैरात में यगाना ॥४॥

हैं बैजू बावरे के कानों में गीत तेरे ।
और तानसैन का भी तूने सुना तराना ॥ ५ ॥
खिड़की में बैठकर वह गौरी के बोलते ही ।
आवाज़ पर पिथौरा का मारना निशाना ॥ ६ ॥
जिसको कि अहले यूरुप करते हैं आज सिजदा ।
कुछ याद है कपिल की वह बहसे फिलसफाना ॥
वह आफताब तेरे ही सामने हुई थी ।
विद्या में जैमिनी की तसनीफ फाज़िलाना ॥ ८ ॥

तेरे ही इल्म में तो यहां पर हुए मुरत्तिब ।
गौतम कणाद के दो दर्शन मोहक्किकाना ॥ ९ ॥
धनवन्तरी से तूने आंखें मिलाई अपनी ।
सुश्रुत चरक का तूने देखा दवाई खाना ॥ १० ॥
ओ खुशनसीब ! तूने वर्षों श्रवण किये हैं ।
शंकर से आलिमों के उपदेश आलमाना ॥ ११ ॥
आती रही है खुशबू तुझको अवध के अन्दर ।
रामोलखन भरत की हुब्बे बिरादराना ॥ १२ ॥

अय पाक दिल ! तू अब तक भूला नहीं है हर्गिज ।
अपने पती से सीता का प्रेम मुख लिसाना ॥ १३ ॥
प्रताप की चिता यह रोकर है आज कहती ।

क्या सहव कर गया है मेवाड़ का फ़िसाना ॥ १४ ॥
हैं लोहे दिल पै तूने सब वकायत लिक्खे ।
गुज़रा है तेरा सारा जोवन मवरिखाना । १५ ॥
मालूम है यह तुझ को भूगोल पर सरासर ।
कब्जा था आर्य्यों का अव्वल से मालिकाना ॥ १६ ॥
उस्ताद आफरीं ये सब कामों के हो रहे हैं ।
सब देश मानते थे इनको ही मुअद्दिबाना ॥ १७ ॥
हम कागजी शहादत देते हजार लाकर ।
होता न पुस्तकों पर गर जुल्म वहशियाना ॥ १८ ॥
हम शानदार अपना इतिहास पेश करते ।
होते अगर न जोरो बेदाद जाब्रिराना ॥ १९ ॥
तारीख आर्य्यवर्त्त अय आफ़ताब तू है ।
कर फैसला हमारा निष्पक्ष मुंसिफाना ॥ २० ॥
इल्मो हुनर को हम ने पाला था अपने घर में ।
हासिल हुई थी हमको पदवी मुरब्बियाना ॥ २१ ॥
शागिर्द हैं बताते अपना हमें मुखालिफ ।
तू करदे इसको बातिल दावा है अहमकाना ॥ ६२ ॥
मौजूदगी में तेरी अन्धेर है ये कैसा ।
क्या रास्ती अदम को अब होगई रवाना ॥ २३ ॥
भारत की हिस्ट्री को झुठला रहे हैं नाहक ।
बकते हैं झूठ करके हकगोई का बहाना ॥ २४ ॥
तू इब्तिदा से अब तक नाजिर है हम सबों का ।
तू करदे अपनी जाहिर राये मुरब्बियाना ॥ ५ ॥
तेरे सिवा पुराना रोशन नहीं है कोई ।
तकलीफ़ तुझको दी है यूं बे तकल्लुफाना ॥ २६ ॥

ओ आफ़ताब बतला हम किस लिये मिटे हैं।
तीरे तनज्ज़ुली के क्यों हो गए निशाना ॥ २७ ॥
दर्वाज़े पै जो अपने सदियां पड़े रहे थे।
हम चूमते हैं जाकर अब उनका आस्ताना ॥२८॥
ग़ल्ले से कोठी खत्ती जो भरते थे हमेशा।
उनको नहीं मयस्सर होता है एक दाना ॥२९॥
देते थे कर्ज सबको जो रुपया करोड़ों।
मिलता नहीं किसी से अब उनको एक आना ॥ ३० ॥
अशरत ने अपनी सूरत उसरत में है छुपाली!
मातम वहां है बजता जिस जा था शादियाना ॥३१॥
विद्या से शूरता से हम हो गये हैं खाली।
जो काम हैं हमारे सब हैं अबलियाना ॥३२॥

भजन नं० ८१।

वक्त था जब ताबो ताक़त थी हमारे तीर में।
आबो जौहर थे कभी तो ख़ंजरो शमशीर में ॥
आंख हम से दहर में कोई मिला सकता न था।
वीरता थी जिस वक्त क्षत्रागियों के क्षीर में ॥
सर ज़मीं के शरक़ से ता ग़रब मालिक थे हमीं।
बांध रक्खा था जहां को अदल की जंजीर में ॥
सर ज़मीं सोना उगलती थी कभी इस हिंद की।
खाक में वह बात थी जो बात थी अकसीर में ॥
फ़तह लंका का खयाल आया तो झट पुल बंध गया।
ऐसी ताक़त थी हमारे नाखुने तदबीर में ॥
योगविद्या में हमें हासिल कभी था यह कमाल।

थी समाधी की सिफ़त हर फ़र्द की तसवीर में ॥
सानाए कुदरत की वह नज़रे इनायत हम पै थी ।
लाकेजन्नत अर्श से रख दी थी खुद कश्मीर में ॥
अलग़रज़ सब निआमतें दुनियां की हासिल थी हमें ।
फूट ने बरबाद लेकिन कर दिया आखीर में ॥

गजल नं ८२।

टेक—हमारे देश में जो कैसे कैसे बालक जन्मे ॥
सत्सङ्गी ईश्वर विश्वासी ब्रह्मचारी गुणवान ॥
होता था जिस समय यहां पर वैदिक गर्भाधान ।
द्विवेदी और त्रिवेदी लाखों चतुर्वेदी कहलाये ॥
जिन बच्चों को गोदी लेकर जननी आप पढ़ाये ।
छोटी उम्र से जिन बच्चों ने धर्म की शिक्षा पाई ॥
आखिर तक फिर धर्म न छोड़ा थी ऐसी दृढ़ताई ॥
जिसने शिक्षा पाई धर्म की मन में किया विश्वास ।
सौतेली मां की आज्ञा से राम गये बनवास ॥
कहो भरत की कितनी उम्र थी जिसने छोड़ा राज ।
यह कह गद्दी के मालिक हैं रामचन्द्र महाराज ॥
ध्रुव प्रह्लाद ने मातु पिता से बहुत दुःख उठाये ।
ईश्वर आज्ञा पालन करके राज अटल पद पाये ॥
कंस राक्षस मार गिराया श्री कृष्ण भगवान ।
उग्रसेन को गद्दी देकर आप बने प्रधान ॥
अथवा वैदिक धर्म न छोड़ा सत्य सनातन ज्ञान ॥
ग्यारह वर्ष का बाल हकीकत दे गया अपने प्रान ।
दस और बारह वर्ष के बच्चे थे ऐसे धर्मवीर ।
दीवारों में चुने गये दिखलादो ऐसी नजीर ।

"चन्द्र" कवि कह छोटी उम्र थी जिसकी देखो माया !
चौदह वर्ष के थे मूल शङ्कर जिसने हमें जगाया ॥

भजन नं० ८३

पूछे जो कोई हमसे नामो निशां हमारा।
आर्य्य हैं हम वतन है सारा जहां हमारा ॥१॥
पूछे हिमालय से इसको तो याद होगा।
लहराता था फरैरा ता आस्मां हमारा ॥ २ ॥
ऐ पहाड़ी गुफाओ हमको न भूल जाना।
आसन कभी बिछा था पय योग यां हमारा ॥३॥
वहदानियत की बू से हैं जुम्ला बाग़ ख़ाली।
लेकिन महक रहा है वह गुलिस्तां हमारा ॥४॥
वेदध्वनि से अक्सर मग़रिब के बँगले गूंजे।
ता दम था मोक्षमूलर अफ़शां ख्वां हमारा ॥५॥
जो हैं अरब की खुशकी में तिशनगी से बेकल।
उनकी तशफ्फी को है बहरे रवां हमारा ॥७॥
ज़ुल्मो तअद्दी से गो लाखों गले कटाये।
फिर भी हुआ न कुछ भी उनसे ज्यां हमारा ॥७॥
ऐ प्यारे धर्म तेरी उल्फ़त में फंस रहे हैं।
तू चाहे जिस तरह से ले इम्तहां हमारा ॥८॥
सीने में गाड़ कर वह स्वामी गया हमारे।
क्योंकर गिराये कोई वैदिक निशां हमारा ॥९॥
ऐ मौजे गंगा इसको सरसब्ज खूब रखना।
गोदी में है यह गुरुकुल रशके जिना हमारा ॥१०॥
है लेखराम की ऐ "चन्द्र" यह सदा बस।
आगे को बढ़ रहा हो अब कारवां हमारा ॥११॥

हमारी हीन अवस्था और उसके कारण।

फूट

भजन नं० ८४।

जगत में घर की फूट बुरी।
घर की फूट हो सों बिनसाई सुवरन लङ्कपुरी।
फूटहि सों सब कौरव नासे भारत युद्ध भयो।
जाहो घाट या भारत में अब लों नहीं पुजयो।
फूटहि सों जयचन्द बुलायो यवनन भारत धाम।
जाको फल अब लों सब भोगत होय गुलाम।
फूटहि सों नवनन्द विनासे गयो मगध को राज।
चन्द्रगुप्त को नासन चाह यों आपन से सह साज।
जो जग में धन माल और बल आपुनो राखन होय।
तो अपने घर में भूलेहू फूट करो मति कोय।

भजन नं० ८५

घटा छाई हिन्दू कौम पर, क्यों किस लिए गम की।
सदा आती है हर गोशे से, पुरदर्द आहो मातम की॥
सदाकत है न एका है, न मिल्लत संगठन अपना।
मिटा देगी निशां दुनियां से इक दिन फूट आपस की॥
हकीकत खो गई अपनी ज़बां में पड़ गये ताले।
है हिन्दू कौम मेहमाने जहां बस अब कोई दमकी॥

मुहब्बत प्यार हमदर्दी कहां अब भाई भाई में।
हमारे हाल अबतर पर है रोती आंख शबनम की ॥
करें किसकी शिकायत हम कसूर अपना खता अपना।
सज़ा यह हमको मिलती है हमारे ही मज़ालम की ॥

भजन नं० ८६।

फूट का नाग अगर हमने न पाला होता।
नाम किस वास्ते फिर आपका काला होता ॥
रुतबा दुनियां में बड़ा आपका ऊंचा होता ॥
हाथ में सत्य का झण्डा जो संभाला होता ॥
बुग़ज और हसद की गर्मी में न जलने पाते।
शान्त अमृत का पिया आपने प्याला होता ॥
इस तरह कौम के हरगिज़ न बिखरते मोती।
प्रेम डोरा जो कहीं आपने डाला होता ॥
दूर हो जाता जहालत का अंधेरा बिलकुल।
धर्म विद्या का जो घर घर में उजाला होता ॥
गैर के वास्ते कुरबान जो करता सब कुछ।
काम दुनिया में तेरा सब से निराला होता ॥
लोग दर्शन को तेरे दर पै हमेशा आते।
देश सेवा का तेरे दिल में शिवाला होता ॥
शोर इस वक्त तरक्की का मचा भारत में।
मुद्दआ इससे कुछ अपना तो निकाला होता ॥

अविद्या

भजन नं० ८७।

दोहा—बिन विद्या संसार में बुद्धि भई विपरीत।
शुभ मारग तज कर चलें, तब कैसे हो जीत ॥

टेक—उलटी हो गई रे, बिन विद्या के बुद्धि हमारी।
सत् विद्या का पढ़ना छोड़ा हुआ घोर अन्धेर।
तब से मित्रों आर्यावर्त्त की, पड़ा बुद्धि में फेर॥ उ० १॥
सत्य असत्य का बिल्कुल हमको, नहीं रहा कुछ ज्ञान।
हैवान से भी बढ़कर, हुये आज हैवान॥ उ० २॥
जन्म मरण के दुखद चक्र में, भोग रहे दुख भारी।
भीख मांग कर खायें फिर भी, बनते ब्रह्मअनारी॥ उ० ३॥
देखा मुक्ति नहीं मिलती है, बिना हुये सत् ज्ञान।
तब तो वृथा तीर्थव्रत पूजा गंग जमुना का न्हान॥उ० ४॥
"तेजसिंह" कह जो सुख चाहो, करो वेद बिस्तार।
लड़के लड़की सभी पढ़ाओ, तभी होय उद्धार॥ उ० ५॥

भजन नं० ८८

अविद्या पापिन जगत् में ज़ुल्म गुज़ारा।
खुदगर्ज़ी ने खुदगर्ज़ी से अपना धर्म बिगाड़ा॥ पा०॥
अनेक मत हो गये जगत में, द्वेष भाव फलाना।
वैर विरोध बढ़ा आपस में रच दिये ग्रन्थ हज़ारा॥ पा०॥
हाज़िर नाज़िर खुदा कुरानी, पर्दानशीं बताना।
होगा न्याय कयामत के दिन, बन्द पड़ा अब द्वारा॥ पा०॥
श्रीभागवत में ईश्वर को कच्छ मच्छ बतलाना।
कहांतक तुमको हाल सुनाऊं ऐसेही पुरान अठारा॥पा०॥
हाय शोक भारत की नारी, होगई पशू समान।
कब्र ताजिये फिरें पूजतीं, पतिव्रत धर्म बिगाड़ा॥ पा०॥
पहले मिलकर प्रीति बढ़ाते, प्रेम भाव फैलाना।
बात २ पर अब लड़ते हैं, हाय शोक है भारा॥ पा०॥

ऐसी दशा में ऋषि दयानन्द, आगये सूर्य समाना।
"छज्जू" धन्य २ स्वामी को, बार २ गुण गाना॥ पा०॥

बाल विवाह

दोहा

बाल ब्याह प्रचलित भयो, जब से भारत मांहि।
तब से बल बुधि नशि गयो, सुख सपनेहु नांहि॥
दीन हीन कायर भयो, भारत को सन्तान।
रोग शोक धन हीनता, बसी यहां अब आन॥
शुभ शिक्षा से विमुख है चाहत सुख सम्मान।
जान बूझि अनरथ करत, फिर रोवत अज्ञान॥

गजल नं० ८९

बचपन के ब्याहने से अब हूं तो बाज़ आओ।
बच्चों की करके शादी करते हो क्यों बरबादी।
बुधि और शान शौकत मिट्टी में मत मिलाओ॥ १॥
बहनों ये मुल्क भारत इसी से हुआ है गारत।
अब छोड़ो ये जहालत आलम को क्यों हंसाओ।
भारत की जो शुजाअत मशहूर थी मुल्कों में।
उसके बरअक्स हालत दुनियां को क्यों दिखाओ॥ ३॥
माहिर थी सारी खलकत कहती थी जिसको जिन्नत।
उसी हिन्द को अब यारो दोज़ख न तुम बनाओ॥ ४॥
इस ब्याह बालेपन से आजिज़ लाखों तन से।
शबो रोज़ रो रहे हैं औरों को मत रुलाओ॥ ५॥
पथरी प्रमेह गठिया घर घर बिछाई खटिया।
सुस्ती औ नामर्दी से दामन तो अब छुटाओ॥ ६॥
इसी फेल का फल पाये लाखों हुई विधवायें।

शबोरोज़ रो रही हैं उन्हें भी तो अब समुझाओ ॥ ७ ॥
रोती हैं मां बाप को करती हैं बहु पापों को ।
इस दुर्गति को वहनों भारत से अब हटाओ ॥ ८ ॥
इसकी ही बरकतों से गमनाक हरकतों से ।
लाखों ही ग़म उठाते फिर भी तो कुछ शर्माओ ॥ ९ ॥
"बलदेव" की अर्ज़ी है भारत के सज्जनों से ।
सुनो गौर करके प्यारे खुश हो अमल में लाओ ।

विधवा विलाप

भजन न० ९०

माता पिता ने मुझको दुल्हन बना के मारा ।
दो दिन बहारे गुलशन मुझको दिखा के मारा ॥
अङ्गों में मेरे बटना मातम का बस लगाया ।
बाली उमर में खूनी मेंहदी लगा के मारा ॥
मैं तोड़ देती कङ्गना होती जो होश मुझको ।
बस मेरे हाथ कोरा कङ्गना बँधा के मारा ॥
शादी हो अष्ट वर्षा गौरी के तुल्य है वह ।
बस ऐसे लोगों ने ही गाथा रचा के मारा ॥
हा ! हा ! सुहाग का सुख मैं देख भी न पाई ।
"प्रीतम तेरे सिधारे" मुझको सुना के मारा ॥
सेहरे के फूल ताजे मुरझाने भी न पाये ।
जब कि सोहाग मेरा घोड़ी चढ़ा के मारा ॥
फेरों की चोर हूं मैं अब "धर्मवीर" बेशक ।
मैं कोई सुख न देखा दुख ने जला के मारा ॥

अभागी विधवा के शोकोद्गार

भजन नं० ६१

यह आह मेरी सितम है भारत, न मार मुझको सता २ कर।
बिगाड़ देवे न फिर से ईश्वर, यह कौम तेरी बना २ कर ॥१॥
मैं साफ कहती हूं याद रखना, जो आहें इस दिलसे उठ रही हैं
मिटा के छोड़ेंगी कौम तुझको, चिराग तेरा बुझा २ कर ॥२॥
पहाड़ दिन रंजो ग़म में गुज़रा, सितारे गिनने में रात काटी।
मेरे सितारों ने मुझको मारा, बुरी तरह से रुला २ कर ॥३॥
यह नयन फूटें जो मेरे नयनों में, एक पल भर भी नींद आई।
बहाई नदियां बनाए कलज़म, लहू के आंसू बहा २ कर ॥४॥
लुटा है जब से सुहाग मेरा, है यासो दरमां का दिल में डेरा।
मैं जान अपनी खपा ही डालूंगी, सोजेगम में घुला २ कर ॥५॥
वह तन से ज़ालिम फ़लक का मेरे अरूसी जोड़ा उतार लेना।
तलख कर दिये ऐश मुझ पर, सफेद चादर ओढ़ा २ कर ॥६॥
बसन्त जाने को और बहनें, बसन्ती कपड़े रंगा रही हैं।
दुखों ने चेहरे पर फेरी ज़र्दी, है खून अपना सुखा २ कर ॥७॥
जो सावन आया तो झूलें झूला, मलार गावें व देशी ढोला।
इधर किया मुझको नीमबिस्मिल, ग़मों के चिरके लगा २ कर ॥
वह मुझ पर आफत का टूट पड़ना। वह बालपन का मेरा रंडेपा
जलाया जिसने मेरी उम्मीदों को ग़म की बिजली गिरा २ कर।
न मुझको अपने अज़ीज़ जानें, पराये देते हैं लाख ताने।
किया जमाने ने मुझको रुसवा हज़ार तोहमत लगा २ कर ॥

एक विधवा का अपने पति की लाश पर विलाप

भजन नं० ६२ ।

तर्ज़—किस जन्म का यह बदला लिया आपने ।

टेक—प्राण प्यारे मुझे कुछ बता तो सही ॥

आंख खोलो ज़रा देखो मेरी तरफ़ ।
टुक ज़बां अपनी इक बार हिला तो सही ।

किस तरह से कटेगी यह बाली उमर ।
कोई इसका उपाय बता तो सही ॥

क्या भंवर में डुबोओगे किश्ती मेरी ।
इक किनारे पै इसको लगा तो सही ॥

जो जो वायदे किए थे विवाह के समय ।
ज़रा उनको दोबारा दुहरा तो सही ॥

मैंने देखा ही क्या था तुम्हारे सिवा ।
जो किया था प्रण अब निभा तो सही ।

छोड़ जाते हो मुझको कहां पर बालम ।
पास अपने मुझे भी बुला तो सही ॥

यूं न दर दर रुलाओ सताओ पिया ।
मेरी मिट्टी ठिकाने लगा तो सही ॥

क्या खता मेरी दो दिन में ही देख ली ।
यह भरम मेरे दिल से हटा तो सही ॥

मुझे तनहा न छोड़ो प्रभु के लिये
कुछ मेरे हाल पर रहम खा तो सही ॥

जिस ज़बान रस भरी से बुलाते मुझे ।
ज़रा इक बार फिर बुला तो सही ।

सारे वस्त्र व भूषण हैं यहीं पर पड़े ।
अपने हाथों मुझको पहिना तो सही ॥
ऐसा पत्थर का हृदय है क्यों कर लिया ।
मेरे रोने पर कुछ तरस खा तो सही ॥
रोती रोती के कांटे गले में पड़े ।
घूंट पानी का मुझको पिला तो सही ॥
छोड़ किसके सहारे पै मुझको चले ।
नाम उसका मुझे भी बता तो सही ॥
हा ! यह सूरत उमर भर दिखेगी नहीं ।
एक बार अपना मुखड़ा दिखा तो सही ॥
ऐसी करली है मेरे से क्यों बेरुखी ।
ज़रा गर्दन को ऊपर उठा तो सही ॥
मैं तो हारी जगा करके "यशवन्तसिंह" ।
अब ज़रा तूही आकर जगा तो सही ।

भजन नं० ६३

उमर मेरी कैसे कटे बाली

कह रोई विधवा बाल, उमर मेरी कैसे कटे बाली ।
न जाने कब हुई सगाई, न जाने कब जोड़ी मिलाई ।
न मैं दुनियां देखी भाली, चाल चली जाली ॥ क० ॥
हरा बाग फूल ले आया, बिन जल है अब मुरझाया ।
सूख चले पत्ते अरु डाली, छोड़ गया माली ॥ क० ॥
एक तो थी मैं कर्मों की हारी, दूजे बिपदा पड़ गई भारी ।
तीजे चरखा कात के खाऊं, चौथे गोद खाली ॥ क० ॥
किस पर मैंहदी हाथ रचाऊँ, किस पर रूप और रंग बनाऊं ।
किस पर पहनूं अनवट बिछुवे, किस पर नथ वाली ॥ क० ॥

भजन नं० ९४ ।

सीय्यो नी मैं कितवल जावां नाहीं किते मैनूं ढोई ।
निपट अयानी सां सब मन भानी अड़यां करां भावें रोई ॥
लोरी दे दे चुक २ लैंदे जो करन न गल है ओही ।
जद थीं होश सम्भाली मैं बाली, काढ़ी तन्द न पूणी छोई ।
गुड़ियां पटोले विन्दियां तन्दोले, छडी न खेड मैं कोई ।
चज्ज न सिखया पढ़या न लिख्या, उक्रा न सूई परोई ॥
नित २ माई रही समझाई, इक भी न गत्त मैंनूं ओही ।
हानन मेरियां सब कुछ जानन, ऐवें उमर मैं खोई ॥
सुणया बर मेरा है अति चातुर, गुण अवगुण लैंदा जोही ।
मैं तां बैठी घर अक्लां सेती, खादा मैं रज्ज या सोई ॥
मिलसी न वर तद होसी न आदर, छूटर रहसां मैं मोई ।
'गंगाराम' औगुणहारी मैं भारी सुनसी न कान्त अरजोई ॥

भजन नं० ९५ ।

मोरी नाव कैसे उतरे पार, किस विध उतरे पार ॥१॥
वार पार कोउ घाट न सूझत, आन पड़ी मंझधार ।
बिजली चमके बादल गरजे, उलटी चलत फुहार ॥३॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, नावक हैं मतवार ॥४॥
ध्रुपद सुनावत सुनत न कोई, हमरी कूक पुकार ।
तीक्ष्ण जलधारा दुस्तर है, उठत तरङ्ग अपार ॥६॥
जिस भुजबल से गज गह लीना, सोई हाथ पसार ॥७॥
अमीचन्द की राखो नावरिया, पड़त भंवर मंझधार ॥८॥

भजन नं० ९६

सदमों की चोट सीने पै खाई नहीं जाती।
ता उमर यह तकलीफ उठाई नहीं जाती॥
रोना यह शबोरोज़ का रोएं कहां तलक।
चश्मों से नदी खूं की बहाई नहीं जाती॥
खुदगर्ज हो गया है यह ज़माना इस कद्र।
इन्साफ की बू तक यहां पाई नहीं जाती॥
होता है जुल्म रात दिन इन औरतों पै हाय।
तिस पर भी ज़बान इन से हिलाई नहीं जाती॥
करते हैं बिवाह नाई ब्राह्मणों की राय पर।
बाहम की शकल वस्फ मिलाई नहीं जाती॥
बचपन से ब्याह देते हैं नालायकों के साथ।
विद्या तलक भी उनको पढ़ाई नहीं जाती॥
यह नारी गंवारी है वह शौहर पढ़े हुए।
कितना ही मिलो दिल की जुदाई नहीं जाती।
सुध लीजो 'बलदेव' इन अबलाओं की अबतो।
तुमसे मर्म की पीड़ा छिपाई नहीं जाती॥

भजन नं० ९७

टेक—बुड्ढे बाबा करें विवाह मौत के मुख में जाने वाले॥
थर २ कांपे ये है हाल, सारी लटक गई है खाल।
दोनों सूख गये हैं गाल पोपले हलवा खाने वाले॥
मुड़कर होगई कमर कमान, मुड़वा मूंछ बने हैं ज्वान।
बांधा मौड़ बैठ कर बान, बन गये नौशे कहाने वाले॥
अंजन आँखों लीना सार, डाला गल फूलन का हार।
सिर पै पगड़ी गित्तेदार, सज गये हँसीकराने वाले॥

देखे जीने से लाचार, नारी तब करती व्यभिचार।
बढ़ते पाप हैं बेशुम्मार नहीं दिल में शरमाने वाले॥
कितनी रोवें ज़ार बेज़ार, कितनी विष खाती हैं नार।
सुन सुन बेटी के आचार, रोयें छिप २ धन खाने वाले॥
बढ़ गई विधवा की तादाद, सुनता कोई नहीं फरयाद।
"पाठक" होवें वे बरबाद धनी जो ब्याह रचाने वाले॥

अछूतों का आर्त्तनाद और शुद्धि

भजन नं० ९८।

तुम्हारे ज़ुल्म की हम तुमसे ही फ़रयाद करते हैं।
मुहब्बत का नया पहलू यह इक ईजाद करते हैं॥
फटा जाता है दिल रंजो अलम से हम गरीबों का।
मजालिम को तुम्हारे जब कभी हम याद करते हैं॥
हमें बरबाद करने को निकाले सैंकड़ों पहलू।
मगर हम हैं कि हर ज़ुल्मो सितम पर स्वाद करते हैं॥
न कैसे हौसला गैरों को ठुकराने का हो हम पर।
हमारे अपने भाई हम पै जब बेदाद करते हैं॥
हमें करते हैं शामिल हिन्दुओं में अपने मतलब से।
फरीकों के मुकाबिल पेश जब तादाद करते हैं।
नहीं हम पेश भी करते आये हैं कुछ मुहब्बत से।
हमारे आप को मजबूर कुछ इतबार करते हैं॥
वर्ना आपको साया तलक से अपने नफरत है।
मगर कुत्तों को लेकर गोद में दिल शाद करते हैं॥

भजन नं० ९९।

यही दिन हैं दुआ लेलो बिचारे इन अछूतों से।
अरज़ है ब्राह्मणों से वैशों से और राजपूतों से॥१॥

यह जाति मौत के मुंह में बड़ी तेज़ी से जाती है।
बचालो शूरबीरो अब तो इसको यम के दूतों से ॥२॥
मुसीबत जब कभी आई कहीं इस हिन्दू जाती पर।
नहीं बैठा गया खामोश घर में इन सपूतों से ॥ ३ ॥
मुहब्बत प्रेम से इनको लगा लो अब गले अपने।
करो न खौफ छूआछूत के बेजान भूतों से ॥ ४ ॥
तुम्हारे पांव होकर भी फिरें क्यों ठोकरें खाते।
अरज़ है मुअद्दबाना मेरी ऋषियों के सपूतों से ॥ ५ ॥
जो जैसा करता है भरता है वैसा 'चन्द्र रोशन है।
सताओगे इन्हें तो तुम तड़प जाओगे जूतों से ॥ ६॥

भजन नं० १०० ।

हुन भाइयां दी सुनो पुकार हां भाई रोवन विच दुखदे।
भाइयां नूं जो दुर दुर करदे, दुनियां दे विच रुल रुलमरदे,
कोई न उन्हां दा यार हां-भाई
भाइयां नूं जो परां हटावन, नफरत नाल अछूत बनावन।
ओहोई खान्दे मार हां।
गौआं दे जो भगत पियारे, जंजू बोदी दे रखवारे॥
खूयां नूं देन बिगाड़ हां।
हिन्दू ओहनां नाल न लग्गन, मुसलिम यार ईसाई सज्जन
दित्तीए कौम बिसार हां।
बोदी जंजू अछूत कटावन, खूंयां ते फौरन चढ़ जावन,
हिन्दू वी करन पियार हां।
परमेश्वर दा भय कुछ खाओ, चंगी करमीं सब सुख पाओ
करो अछूत उद्धार।

भजन नं०१०१

धन्न धन्न भाग हमारे अज धन्न धन्न भाग हमारे।
सदीयां दे जो विछड़े भाई, रल मिल बैठे सारे। अज०
सन्ध्या हवन और भजन प्रभु दा, मिल के मन्त्र उचारे।
ऊच नीच दे संशय टुट्टे, परम पिता के द्वारे।
कर्मां सेतो होन नबेड़े, जन्म न पार उतारे।
जन्म घमण्डी बड्डा पापी, डुब्बे अध विच धारे।
भाईयां नूं जो करदे दुर दुर, ओहो बड़े नकारे।
छूत छात दा रोग मिटावन परमेश्वर दे प्यारे।
पापां वालो फाई कट्टी, आत्म दर्शन द्वारे।
आत्म-दर्शी स्वामी जी तों जाइये सद बलिहारे।

भजन नं० १०२।

पतितां नूं असी उठावांगे दलितां नूं गले लगावांगे।
कोई अछूत नहीं छोड़ेंगे आर्य सभी बनावांगे। पतितां०
परमेश्वर दे भगत बना के सब नूं ओ३म् जपावांगे।
छूत छात दा भर्म मिटा के सब भाई बन जावांगे।
प्रेम प्रीति दी रीत सिखा के वैर विरोध हटावांगे।
वैदिक धर्मी सारे बन के अपना ज़ोर बढ़ावांगे।
दयानन्द स्वामी दी आज्ञा पूरी कर दिखलावांगे।

भजन नं०१०३।

हुण कौम बचावन दा कोई उपाय करो।
तुसी बन गए भोले, गैरां ने रोले, मार न खावनदा।
तुसां गीता भुलाई, सुध बिसराई, छूत हटावन दा।
तुसी निर्बल सारे, त्रिभयां दे मारे, कर्म कमावनदा।

सब भाई मिलाओ, छूत हटाओ, प्रेम दिखावनदा ।
क्यों मारां खाओ, लाज गंवाओ रल मिल आवनदा ।
तुसी हो गए कुचे, डर विच डुबे, भय नसावनदा ।
तुसी शेरां दे जाये, विषयां मुकाय, आप अनावनदा ।

भजन नं० १०४

विछुड़ों को जामे शुद्धि जल्दी पिलाओ प्यारो ।
जितने पतित हुये हैं सब को मिलाओ प्यारो ॥
वैदिक धर्म को छोड़ा जुलमो सितम के डर से ।
सच्चे धर्म के जल से उनको नहलाओ प्यारो ॥
इन्जील और कुरां अब पढ़ने लगे जो भाई ।
वैदिक धर्म की शिक्षा उनको दिलाओ प्यारो ॥
गौओं के जो थे रक्षक भक्षक वह बन गये हैं ।
मिथ्यामतों को मिलकर जड़ों से हिलाओ प्यारो ॥
गुल्शन से फूल चोरी जोरी से जो गये हैं ।
अपने चमन में लाकर उनको खिलाओ प्यारो ॥
मनकी मलीनता ने छोड़ा है धर्म अपना ।
मुर्दों को वेद ध्वनी से जिन्दा बनाओ प्यारो ॥
जितने विछुड़ गये हैं गफलत में प्राण प्यारे ।
सबको लगा गले से प्रीति दिखाओ प्यारो ।
गोदी से लाल अब तक निकले बहुत तुम्हारे ।
भूखों को पेट भर कर भोजन कराओ प्यारो ॥
वैदिक धर्म का झंडा "प्रेमी" घुमाओ हर जा ।
एक दिल व जान होकर प्रीती दिखाओ प्यारो ॥

भजन नं० १०५

कौमी सरदारो भला हमको मिला लो अब तो ।
धक्के दे दे के घर से न निकालो अब तो ॥
लग रही आंख है सदियों से तुम्हारी ही तरफ ।
आशा रखते हैं पर निरआश न टालो अबतो ॥
तुम तो भूले थे मगर हम न भूले थे तुमको ।
हर एक व्यवहार का अन्दाजा लगाओ अब तो ॥
सर पै टोपी है तो धोती भी है पर तैमद नहीं ।
हमारे फाकों की फेहरिस्त सम्भालो अब तो ॥
चौका बरतन भी हैं त्योहार हिन्दू माने हैं ॥
मसजिद देखी ही नहीं मन्दिर से न टालो अबतो ॥
मौके का वक्त है कर लीजे अब तो भरत मिलाप ।
सारी दुनियां को फिर चैलेंज दिलालो अबतो ॥
चौकड़ी भूल गये ऐसी रोशनी में भी ।
हर जिला फिर मालाबार बना लो अब तो ॥
हमारे मिलने से गौओं की छुरी छुटेगी ।
चाहे कटवा दो उन्हें चाहे बचा लो अबतो ॥
अच्छा हूं या बुरा खोटा खरा तुम्हारा हूं ।
साथ में उदयसिंह के जरा खाना ही खालो अबतो ॥

भजन नं० १०६

तुम्हारे मिलने को मेरे प्यारो यह दिल हमारे भटक रहे हैं ।
हमें ही मालूम कि जुदाई के खार कैसे खटक रहे हैं ॥
उन दोनों भाइयों से यह हकीकत गमे जुदाई की जाके पूछो
भरत अयोध्या में रोते, बन में वो राम सर को पटक रहे हैं ॥
वह कैसे कायम रहे बगीचा बहार में भी खिजां रहेगी ।

कि बज़्मे गैरां में देते बू जो हमारे गुञ्चे चटक रहे हैं ॥
उन्हें भी कैसे है नींद आती सुहाता कैसे है उनको भोजन ।
कि न इधर ही वो न उधर ही हैं जिनके भाई लटक रहे हैं ॥
वो मिस्ल मुर्दों के चुप खड़े हैं और देखते हैं पर उफ नहीं हैं
हजारों लाखों करोड़ों भाइयों को जिनके अजगर सटक रहे हैं ।
गौ की रक्षा पै प्राण देते थे हमने दुर दुर किया तो बस वह ।
आज गाय की ले के बोटी हमारे आगे मटक रहे हैं ॥
ऐ कौम हिन्दू तुझे भला क्या होश आया नहीं है अब तक ।
बांके मुल्लां व मालाबारी हमारी चादर झटक रहे हैं ॥
हकीकी भाइयों के हाथ खाने से आज ईमां चला हमारा ।
मांसो मदिरा के डाक्टर से इधर तो मिकसचर गटक रहे हैं ॥
इस हिंदू जाति की अब कि-किश्ती की-कोर पानी से ढबचुकी है
भला कहां और क्यों उदयसिंहयह प्राण मेरे अटक रहे हैं ।

भजन नं० १०७

नहिं छडना शुद्धि दा प्रचार भाइयो नहीं छडना ।
राजपूत हैं भाई हमारे मुस्लिम कर लये लोकां सारे ।
असां ने दित्ते बिसार ॥ भाइयो नहीं छडना शुद्धि ॥
हुन जो हिंदू होना चांहदे, सिर बोदी गल जनेऊ पांदे ।
राम नाम नूं धार ॥ भाइयों नहीं छडना शुद्धि ॥
भावें साडी जान भी जावे, भावें ज़र दौलत भी जावे ।
देवो सिर तक वार ॥ भाइयो नहीं छडना शुद्धि ॥
इन्हां नूं हुन गले लगाओ, बिछुड़े भाई नाल मिलाओ ।
हैंगे बेशुमार ॥ भाइयो नहीं छडना शुद्धि० ॥
दसवें गुरु गोबिन्द सिंह प्यारे शीश जिन्होंने धर्म पर वारे
गये चारों छोड़ संसार ॥ भाइयों नहीं छडना शुद्धि ॥

हकीकतराय वीर प्यारा, सीस धर्म पर जिसने वारा।
नहीं खाया खौफ़ तलवार ॥भाइयो नहीं छडना०
बेड़ी ठेली बिच दरया ,बिन चप्पू दे पार न जावे।
लाओ जोर ते होवे पार॥ भाइयो नहीं छडना० ॥
इस बेड़ी नूं पार लगाओ, भेंट धन दी खूब चढ़ाओ।
यह डुबे न विच मंझधार॥ भाइयो नहीं छडना ॥
डर न खौफ किसे दा खाना, ऋषियां दी औलाद कहाना
हो जाओ खूब होशियार॥ भाइयो नहीं छडना०
यह साडी अपील है भाइयो, चन्देदी तुसी मदद पहुंचायो
कई लाख हजार॥ भाइयो नहीं छडना० ॥

भजन नं० १०८

जो बैठे हैं उनको उठाना पड़ेगा।
जो सोये हैं उनको जगाना पड़ेगा॥ १ ॥
जिन्हें काट फैंका था नादानियों ने।
उन्हें छातियों से लगाना पड़ेगा॥ २ ॥
चमन में हर इक गुलपै दौरे खिज़ां है।
हर इक गुल को अबतो खिलाना पड़ेगा॥ ३ ॥
प्रग कर लिया है कि जाति की खातिर।
लहू तक भी अपना बहाना पड़ेगा ॥४॥

भजन नं० १०९

शुद्धि वालिया मोड़ मुहारवे

१-विच अगदे ठोकरां खांवदे।
अगवे हिन्दूआं दे वास्ते पांवदे॥
असी दुःख अनेक उठांवदे

साडी कोई ना लेंदा सार वे ॥
शुद्धि वालिया मोड़ मुहार वे
असी होन नूं शुद्ध तयार वे
२—सानूं प्यार इसलाम दे नाल न,
ऐ पर हिन्दू पुछदे हाल न ॥
रखदे करके शुद्ध खयाल न
साडे नाल न करन प्यार वे ॥ शुद्धि वालिया
३—तेरे दम दे नाल ई आस सी,
असां मुसलमाना दे घर बास सी ॥
होके शुद्ध खयाल ऐखास सी,
होसाँ देवतियां विच शुमार वे ॥ शुद्धि वालिया
४—तेरे बाझ न कोई ठोर वे
तेरे बाझ न दरदी होर वे ।
टुट्टी आस उम्मीद दी डोर वे,
कीता ज़ुलम ए बद करदार वे ॥ शुद्धि वालया
५—बिना कीतियां दीद न थकदे,
राह तेरी अछून न तकदे ।
करले शुद्ध आ मूल न झकदे
सुन गरीबां दा हाल पुकार वे ॥ शुद्धि वालया
६—फिर विच भारत इक बार आ ।
बेड़ा अटकया ला जा पार आ,
गैर हिन्दुआं दे सच्चे यार वे ॥ शद्धि वालया

———

भजन नं० ११०

हिन्दुओ अब ख्वाबे ग़फ़लत से ज़रा बेदार हो।
कारवाने दहिर में खुद काफिला सालार हो॥
छोड़ दो बुग्ज़ो हसद तुम संगठित होकर रहो।
हुब्बे कौमी का गरम अय हिन्दुओ बाज़ार हो॥
कौम की और देशकी खातिर करो तनमन निसार।
इसके कुश्ते नाज़ हो और इसके ही बीमार हो।
तुम अगर मिलकर रहो और शुद्धियां करते रहो।
फिरतो भारत कोई दिनमें दहर का सरदार हो॥
राम से बेटे हों और भाई भरत से तुम में हों।
दोस्तो हर एक ज़बां से प्रेम का इज़हार हो॥
शान्ति और रास्ति बस हो तुम्हारा मशग़ला।
ज़ोरपरवर कीनापरवर से हमेशा आर हो॥
दहिल से बातिलपरस्ती का मिटादो नाम तुम।
वेद मन्त्रों से मुनव्वर हर दरो दीवार हो॥
धर्म पर कुर्बान हो जाओ हकीक़त की तरह।
हिन्दू हर एक हिंदू का दिलजान मे गमख्वार हो॥

गज़ल नं० १११

न जीती है न मरती है न सोती है न उठती है।
तेरी ऐ कौम सब दुनियां से मिट जाने की बातें हैं।
खुले फाटक तेरे घर के शबे तारीक है सिर पर।
लुटेरे फिर रहे लाखों यह लुट जाने की बातें हैं॥
हमारे दिल ने दल डाला हमें विषयों की चक्की में।
जिधर देखो उधर इस दिल के बहकाने की बातें हैं॥

ऋषि मुनियों के बच्चे मुसलमां ईसाई बन जावें।
तुम अपनी आंख से देखो यह मर जाने की बातें है॥
हम अख़बारों में विधवाओं का हाल रोज़ पढ़ते हैं।
बुरा मत मानिये सब नाक कट जाने की बातें हैं॥
कहीं दोज़ख है न जन्नत है यह बिलकुल लगव किस्से हैं।
जो सच पूछो तो यह लोगों को बहकाने की बातें हैं।
खियाले इशकिया है यह मैखाने की बातें हैं।
यह मर्दों के समझने और समझाने की बातें हैं॥

भजन नं० ११२

कौन ऐसा संग दिल है जो पिघल जाता नहीं।
तेरे हाले ज़ार पर किसको रहम आता नहीं॥
तंगदस्ती, बेकसी और नातवानी देख कर।
किसका है ऐसा कलेजा मुंह को जो आता नहीं॥
जोफे पीरी से-तू लाग़र हो गई है इस कदर।
ज़ानुओं के बल भी तुझ से अब उठा जाता नहीं॥
वह ब्राह्मण जिनको उस्तादे जहां का था ख़िताब।
अब ८५ फीसदी को एक हरफ आता नहीं॥
वैश्य जाति परवरिश करती थी और अकवाम की।
हाल खुदगर्ज़ी का उसकी अब कहा जाता नहीं॥
यास और अफ़सोस ही सब रह गए हम दम तेरे।
ख़ान्दां में तेरे कोई रंजो गम खाता नहीं॥

आवाहन

भजन नं० ११३

प्राण-प्रिय राम पुनः आपको आना होगा ।
पाप-पथ से हमें अब शीघ्र हटाना होगा ॥
आप से शूर की सन्तान हुई है कायर ।
सिंह-संज्ञा को तुम्हें सार्थ कराना होगा ॥
देव सन्तान असुर होती चली जाती है ।
आसुरी भाव तुम्हें आके मिटाना होगा ॥
मांस-मदिरा में हुई मस्त है सारी जाती ।
राक्षसी रीति-रिवाजों को भगाना होगा ॥
वेद-विधिकर्म सभी लोप हुये जाते हैं ।
आर्य्य-गौरव के लिये कष्ट उठाना होगा ।

भजन नं० ११४

(राम भक्तों की राम से प्रार्थना)

मुद्दत हुई है अब तो ऐ राम प्यारे आजा ।
बिगड़ा हुआ है भारत का इन्तज़ाम आजा ॥
अब तेरी जन्मभूमि लङ्का से कम नहीं है ।
तू देखने को इसका मज़मूम काम आजा ॥
बेचैन कौम सारी आज़ बस मिसाले सीता ।
धीरज दिलासा देनेको सुबह-शाम आजा ॥
भाई का भाई दुश्मन इस वक्त हो रहा है ।

उल्फ़त मुहब्बत का लेकर प्याम आजा ॥
बहरे तनज़्ज़ुली में गर्काब हो रहे हैं।
हम डूबते हुवों को ले जल्द थाम आजा ॥
पुर्सां नहीं है कोई हालत हुई दिगर गूँ।
हर वक्त रट रहे हैं तेरा ही नाम आजा ॥
तेरा जमाशुदः वह खाली हुआ खज़ाना।
बाकी नहीं रही है इसमें छदाम आजा ॥
ऋषियों की यज्ञ भूमि में खून बह रहा है।
गौ पर चढ़े हुये हैं हिंसक तमाम आजा ॥
चीरे फ़लक की चोटें दिन रात खाते खाते।
ऐ "चन्द्र" उड़ चुका है तनकाभी चाम आजा ॥

भजन नं० ११५

(राम का उत्तर)

गर बुलाते हो मुझे होश में आओ तो सही।
मुझसे पहले कोई कौशल्या बनाओ तो सही ॥
राम को चाहते हो राम के चाहने वालो।
राजा दशरथ सा पिता कोई दिखाओ तो सही ॥
किस जगह आके रहूंगा यह बतादो मुझको।
एक अयोध्या नई इस वक्त बसाओ तो सही ॥
काम राक्षसके करो रामकी ख्वाहिश रक्खो।
देवताओं की तरह यज्ञ रचाओ तो सही ॥
खून बहता है हजार हैफ़ मेरी नगरी में।
गाय माता का वहां दूध बहाओ तो सही ॥
किनसे मिलजुलके रहूंगा यह बतादो मुझको!
लक्ष्मण और भरतजी को बुलाओ तो सही ॥

कौन रहने को है तय्यार मेरी खिदमत में।
है हनुमान कहां मुझको बताओ तो सही॥
दोस्त सादिक है कहा जिससे मैं आकर मिललूं।
मैं भटकता हूं उस सुग्रीवको लाओ तो सही।
मुफ्त में चाहते हो "चन्द्र" सुधर जाय कौम।
इसकी बेदी पै तुम बलिदान चढ़ाओ तो सही॥

भजन नं० ११६

मेरी इमदाद को ऐ बंसरी वाले आजा।
हाथ में अपने सुदर्शन को संभाले आजा।
खैंचता चीर है बेदर्द दुःशासन मेरी।
इसको नापाक इरादे से हटा ले आजा॥
आबरू लेनेको आमादा है ज़ालिम कौरव।
पड़ गये आह मुझे जानके लाले आजा॥
बे नुमाई से सुदामा को बचाया तू ने।
मुझको इस ज़िल्लतो ख्वारी से बचाले आजा।
आहो ज़ारी में जान घुली जाती है।
कर रही हूं मैं बड़ी देर से नाले आजा॥
मिस्ले तस्वीर है खामोश कृष्ण और भीष्म।
लग गए द्रोण के भी मुंह पै ताले आजा॥
भीमो सहदेव क्या चीज़ है, अर्जुन तकने।
कर दिया है मुझे किस्मत के हवाले आजा।
लाज मुझ बेबस बेकस की बचाने के लिये।
ऐ ज़माने के ग्वालों के ग्वाले आजा।
कौन हम दर्द फ़लक तेरे सिवा ऐ मोहन।
आके इस कोहे गिरां बारको ढाले आजा।

भजन नं० ११७

"हाथ में अपने सुदर्शन को सम्भाले आजा"

अब नए रूप में ऐ बन्सरी वाले आजा ।
अपने हाथों में गदा चक्र सम्भाले आजा ॥
छोड़ कर मोर मुकट खोद लगा कर सिर पर ।
तरकशो तीरो कमां, पुश्त पै डाले आजा ॥
दौर दौरा है तशद्दद का जहां में हरसू ।
खंजिरो तेगो तबर, तू भी उठाले आजा ॥
तोड़ दे पाप के शिशुपाल की गर्दन आकर ।
जुल्म के कंस का फिर सीस उड़ा ले आजा ॥
कांप उठता था जिसे सुन के जिगर दुश्मन का ।
आज फिर हिन्द में वह शंख बजा ले आजा ॥
खुश्क टुकड़ा भी शरीफों को नहीं मिलता है
भूखे मरते हैं तेरे नाज़ के पाले आजा ॥
ज़िल्लतो आफ़तो आज़ारे सितम से डर कर ।
पी न लें भगत तेरे ज़हर प्याले आजा ॥
गाएं मकतल में तुझे तकती हैं गर्दन डाले ।
सहमे बैठे हैं तेरे गोप ग्वाले आजा ।
धर्मकी डूबती किश्ती को किनारे पै लगा ।
अपनी मरती हुई जाति को बचाले आजा ॥
हिम्मतें हार के बैठे हैं मिसाले अर्जुन ।
फिर से गीता का हमें गीत सुनाले आजा ॥
धर्म पर जान गंवाने की दिलादे ज़ुरंत ।
राह कुर्बानियों की हमको दिखाले आजा ॥

कृष्ण-द्वारों पै तेरे होने लगे हैं हमले।
और खतरे में हैं शिवजी के शिवाले आजा॥
सख्त आफ़त में तेरे धर्म के अनुयायी हैं।
पड़ गए हैं उन्हें जी जान के लाले आजा॥
कौम की देवियों को लाज बचानेको "फ़लक"।
हाथ में अपने सुदर्शन को सँभाले आजा॥

भजन नं० ११८

कहां हो मेरे कृष्ण कन्हैया ?

अति भारत है आजु पुकारत पुनिपुनि भारत भैया !!
देखहु आय रंभाय रही हैं हाय तुम्हारी गैया।
जानत हूं न दया उर आनत तुम बिन कौन बचैया॥१॥
आवहु फेरि गुपाल ग्वाल बनि गोअन के चरवैया।
लाखन लाल मरत हैं निश दिन दूध बिना ही दैया॥२॥
डोलती है मंजधार भंवर में जर्जर मेरी नैया।
कोई कर्णधार कहुं नहीं तुमही एक खिवैया॥ ३॥
वह ब्रज, वोही कूल कालिन्दी, वही समय है भैया।
मुरली लै बिचरहु बन बन में, लउँ तुम्हारि बलैया॥ ४॥

———

भजन नं० ११६

हमको दशाका अपनी गर कुछ भी ख्याल होता।
तो क्यों दुःखी हम होते क्योंकर मलाल होता॥
अंजाम सोच कर हम आपस में गर न लड़ते।
तो फिर विदेशियों का क्यों हम पै जाल होता॥
फिर भी अगर हम अपना घर देख भाल करते।

तो सीमोजर से भारत यह मालामाल होता ॥
गैरों का हम भरोसा करते न बन के काहिल ।
तो और ही शक्ल होती कुछ और हाल होता ॥
अपनी समाज का ही गर हम सुधार करते ।
शिक्षा सभी को मिलती मन्दिर विशाल होता ॥
बेखौफ़ ब्रह्मचारी बन करते जो देश सेवा ।
छिन में मुसीबतों का सब इन्तकाल होता ॥
वह रूप देख मेरा करता हसद ज़माना ।
वह धन्य होती धरती जहां भारत का लाल होता ॥
इकत्तीस करोड़ हम थे गर आज मिलके रहते ।
किसकी मजाल होती कोई हम पै लाल होता ।
न तो होती यह गुलामी न कराल काल होता ॥
"माधव" स्वराज का फिर क्यों कर सवाल होता ॥

भजन नं० १२०

जब दुःशासन द्रुपदसुता का खींच रहा था चीर ।
धर्म्म बद्ध चुप चाप खड़े थे जब वहां पांचों पाण्डव वीर ॥
तब हरि तुमने ही था देखा किया चीरका अति विस्तार ।
अपनी कृपा कोर से खल का गर्व किया था तुमो प्रहार ॥
वही कृपा अब आज दिखा दो हे मधुसूदन कृष्ण मुरार ।
दुश्शासन से भीत द्रौपदी भारत माता रही पुकार ॥

भजन नं० १२१

कृष्ण ! ऐ प्यारे हमारे ओ मुरारे आओ ।
हिन्द माता के दुऊ आंख के तारे आओ ॥ कृष्ण०
भक्त रोते हैं पिता लाज बचाओ उनकी ।

दीन दुखियों के प्रभु ! एक सहारे आओ ॥ कृष्ण०
गाय कटती हैं जिन्हें प्यार से पाला तूने।
जल्द रक्षा के लिए नन्द दुलारे आओ ॥ कृष्ण०
कौरव हों ध्वंस सुदर्शन को ज़रा देना घुमा।
सांवरे कान्हा मेरे बांसुरी वाले आओ ॥ कृष्ण०
ज्ञान गीता का सिखा दे तू सभी भय को भगा।
डूबती हिन्द की किश्ती को किनारे लाओ ॥ कृष्ण०

भजन नं० १२२
(कृष्ण का उत्तर)

मुझको आने में तो कुछ भारत में इन्कार नहीं।
पर बुलाने को मेरे आप ही तैयार नहीं॥
पहले पैदा तो करो देवकी माता कोई।
गोद उसकी में मुझे आने में कोई इन्कार नहीं॥
नन्द बसुदेव की सूरत है वहां किस २ की।
कंस और कालयवन से तो मुझे प्यार नहीं॥
आके बैठूं तो कहां मथुरा व गोकुल में कहां।
कौन से घर हैं यहां मुझ पै जहां वार नहीं॥
अपनी जन्म अष्टमी को दूर से देखूं हूं सदा।
एक भी भारती करता है मुझे प्यार नहीं॥
स्वांग भर २ के मेरा हाय नचाते हैं मुझे।
नाचने गाने से मुझे कोई सरोकार नहीं॥
रास क्यों करता मैं ऊखल से क्यों बांधा जाता।
शोक है शोक मैं चोर नहीं जार नहीं॥
देश और जाति को बस देख के ऐसा कृतघ्न।
रुकती आंखों से मेरे आंसुओं की धार नहीं॥

कोई कहता है कि भारत को किया गारत मैंने ।
मैं न होता तो यहां होती तकरार नहीं ॥
वह किया मैंने धर्म ने मुझ से जो कराना चाहा ।
नीति और योग मेरे वास्ते दो चार नहीं ॥
सुन कर जिस गीता को रणक्षेत्र में कूदा अर्जुन ।
उसको पढ़ कर बने जो त्यागी समझदार नहीं ॥
ऐसे हाथों ही में पड़ होगई गीता बदनाम ।
हुए वेदान्ती वह आता जिन्हें सार नहीं ॥
कर्म खुद नीच करो और बुलाओ मुझको ।
बस करो बस यह मुझे चोचले दरकार नहीं ।
कोई अर्जुन हो तो मैं गीता सुनाऊं जाकर ।
मेरे उपदेश के तुम लोग सज़ावार नहीं ॥
भीष्म हों द्रोण सुत कर्ण से दो चार यहां ।
भीम अर्जुन के सहित आने में इन्कार नहीं ॥
मैं तो यह मानता हूं सत् की जय होती है ।
सत् पै जो हैं उन्हें होती कभी हार नहीं ॥

भजन नं० १२३

ऋषियों के ओ ज़माने इक बार फिर भी आ जा ।
तन मन तेरे निछावर अपनी झलक दिखा जा ॥
चारों दिशा में वेदों का डङ्का बज रहा हो ॥
वह साम गान ऋषियों के मुख से फिर सुना जा ॥
वह दूध घी की नदियां बहती कभी यहां थी ।
पाओं पडूं मैं तेरे इक वार फिर भी आ जा ॥
घर २ में हो सुगन्धि नित्य होम यज्ञ हवन से ।

हैजा प्लेग चीचक सब रोगों को उड़ाजा ॥
अपनी ऋतु में वर्षा जल वायु सुख का दाता ।
धन धान से तू भारत, पहिला सा फिर बना जा ॥
वह सांख्य योग न्याय मीमांसा के कर्ता ।
भारत की गोदियों में, इक बार फिर दिखाजा ।
वह तेज वीरता बल, बुद्धि सभों में हो फिर ।
भीष्म से ब्रह्मचारी बनना हमें सिखाजा ॥ ९ ॥
विद्या का कोष हमारा वापस हमें तू दे दे ।
औरों को भी सिखाने की रीति फिर सुना जा ॥
आलस्य द्वैष अविद्या हम को न तेरी चाह है ।
पीछा हमारा इन से आकर फलक छुड़ा जा ॥
रूठा क्यों हम से इतना तेरा है क्या बिगाड़ा ।
"खन्ने" की मान बिनती, इक बार फिर भी आजा ॥

धर्मवीरों की वीरता

भजन नं० १२४

जां हकीकत की तरह कोई गंवाये तो सही
ताज शाही कोई सिरसे गिराये तो सही।
रामसा बनके हमें कोई दिखाये तो सही॥
मरते २ भी दिया दान था जिस प्यारे ने।
माल मानिन्द करण कोई लुटाये तो सही॥
हाथ भंगी के बिका धर्मकी खातिर जो था।
अपनेमें कोई हरिश्चन्द्र बताये तो सही॥
मायाका जाल गया टूट था जिससे एकदम।
कोई मोहन की तरह गीत सुनाये तो सही॥
जिनकी दहशतसे हिला करते थे शाहोंके निशान।
कोई 'शिव' कोई 'प्रताप' बनाये तो सही॥
यूं तो श्याम सभी मरते हैं इस दुनिया में।
जान हकीकत की तरह कोई गंवाये तो सही॥

हकीकतराय के अपने पिता को अन्तिम शब्द।

भजन नं० १२५

हे पूज्यवर गुरूवर ! हे पिता-मन शान्त अपना कीजिये।
कुछ भय न करके जाईये पर शान्ति मां को दीजिये॥

हां पूज्य माता को सुनाना यह संदेशा तात का।
प्रिय जननी! रख विश्वास मनमें सदा रहूंगा आपका॥
प्रिय जाति के सन्मान हित निज प्राण देना धर्म है।
तन देश वेदी पर चढ़ाना परम पावन कर्म है॥
यह प्राण मेरे जायेंगे निज देश सेवा के लिये।
मैं त्यागता हूं देह भावी विजय की आशा लिये॥
धिक्कार है वह जन्म जो निज देश सेवा हित न हो।
उस मृत्यु को धिक्कार जिससे देश का कुछ हित न हो॥
प्रिय जाति सेवा लक्ष्यच्युत सब कार्य को धिक्कार है।
शुचि देश प्रेम विहीन मन धिक्कार है धिक्कार है॥
मरता हकीकत एक ही है आज अत्याचार से।
होंगे हक़ीक़त सैंकड़ों ही इस रुधिर की धार से॥
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का।
हां नाश होगा उस समय दुःख शोक के लवलेश का॥

हक़ीक़तराय की गर्ज जल्लाद की तलवार को देखकर

भजन नं० १२६

डराता मौत से क्या है अमर है आत्मा मेरी।
नहीं कुछ कारगर होने की उस पर तेग़ यह तेरी॥
इसे छेदे इसे काटे कहां यह तीर की ताक़त।
इसे बांधे इसे जकड़े कहां जंजीर की ताक़त॥
गला सका नहीं उसको सुन ओ बेदाद गर पानी।
जला सकती नहीं है आग की भी शोला अफ़शानी॥
अजल का खौफ़ है हमको न है कुछ मर्ग का धड़का।

डरा सकता नहीं हर्गिज़ उसे बिजुली का भी कड़का ॥
धर्म पर ही मिटूंगा मैं धर्म ही मुझको प्यारा है ।
यही हमदर्द है मेरा यही मेरा सहारा है ॥
धर्म पर कर गये गुरु तेग़ अपनी जान को कुर्वां ।
हुआ सर सबज़ जिनके खून से वह बाग़ हिन्दुस्तां ॥
धर्म के वास्ते गोबिन्द ने खुद जान तक वारी ।
सहे दुःख हर तरह के और मुसीबत झेल ली सारी ॥
गुरु गोबिन्द जी के लाडले बेटे ने सिर वारा ।
चुने ईंटोंमें खातिर धर्म की लेकिन न जी हारा ॥
धर्म के वास्ते प्रहलाद ने सौ आफते झेलीं ।
बलायें सैकड़ों सिर पर हज़ारों आफतें लेलीं ॥
धर्म के वास्ते पूर्ण ने कटवाये थे दस्तो पा ।
ध्रुवने भी धर्म के वास्ते बन में किया डेरा ॥
हरिश्चन्द्र ने छोड़ा था धर्म्म की धुन में राज अपना ।
हवाले विश्वामित्र के किया था तख्तो ताज अपना ॥
लिया बनवास प्यारे राम जी ने धर्म की खातिर ।
धर्म के वास्ते दशरथ ने दे दी जान तक आखिर ।
दिखा दूंगा कि इन वीरों की इक औलाद हूं मैं भी ॥
धर्म पर जान देने के लिये दिलशाद हूं मैं भी ।
कज़ाके खौफ़ से अपने इरादे को न छोडूंगा ।
मरूंगा जान दे दूंगा धर्म से मुंह न मोडूंगा ॥
ग़मो रंजो अलम सिर पर जो आजायें वह ले लेना ।
सुनो ऐ हाज़रीन तुम भी धर्म पर जान दे देना ॥
पिता जी दीजिये रुख्सत मुझे चोला बदलने को ।
न करना ग़म मेरे मरने का माता चैन से रहना ।

भजन ईश्वर का करना याद में मेरे न दुःख सहना ॥
तमन्ना जिन्दगी की है न कुछ जन्नत के लेने की।
जो ख्वाहिश है तो बस अपने धर्म्म पर जान देने की ॥
कर ऐ जल्लाद जल्दी जो तेरे दिल में समाई है।
चला खञ्जर उड़ा सिर देर से गर्दन झुकाई है ॥

हक़ीक़तराय के अन्तिम शब्द।

भजन नं० १२७

रुखसत ऐ भारत ! मुझे तेरी दुःख अवस्था देखकर।
जी है जलता दिल है फटता सूख जाता है लहू ॥
रुखसत ऐ प्यारे पिता ! अब दिन मेरे गिनती के हैं।
तड़पती माता मेरी को तुम तसल्ली दीजिये।
रुखसत ऐ माता मेरी ! अब दूध अपना बख्शियो ॥
बख्शियो खिदमत मेरी तू ने जो बालक पन में की।
सुख दिया था तू ने मुझ को दुःख देता हूं मैं तुझे।
क्या करूं बेबस हूं मजबूर हूं लाचार हूं ॥
रुखसत ऐ प्यारे दोस्तो फूलो फलो जी जान से।
याद रखना कि हक़ीक़त धर्म पर कुर्बान हुआ ॥

हक़ीक़तराय का उत्तर नवाब को।

भजन नं० १२८

तुम प्रबल भय दिखला रहे मुझको न इसका ध्यान है।
मेरे हृदय में तो सर्वथा ही निज धर्म का ही मान है ॥
मैं निज कठिन कर्त्तव्य पथ से विमुख होने का नहीं।
आपत्तियां क्या दृढ़ हृदय को हिला सकती नहीं ॥
अपनी भयानक मृत्यु का मुझको तनिक भी डर नहीं।

पर देखना संकट न आये आप के ऊपर कहीं ॥
फांसी दिखाना सिर कटाना मारना आसान है ।
पर हृदय पर अधिकार पाना तनक टेढ़ा काम है ॥
चाहे भले ही काट लो प्रत्येक अंग शरीर का ।
विचलत कदापि न हो सकेगा मन हकीकत वीर का ॥
शतशै कृपाण प्रहार तन यदि एकदम होवें कहीं ।
आनन्द से यह सब सहूँगा धर्म छोड़ूंगा नहीं ॥

भजन नं० १२९

जान देना धर्म पर इस वीर का ही काम है ।
मौत की परवाह न की जिसका यह नेक अंजाम है ॥
बाप मां औरत को छोड़ा राहे हक में जान दी ।
सिर कटाया शोक से जिसका हकीकत नाम है ॥
मौत आने के लिये है जान जाने के लिये ।
धर्म से मुंह मोड़ना यह वुज़दिलों का काम है ॥
दौलते दुनिया को छोड़ो छोड़ो उलफत खेश की ।
भर्म मत छोड़ो कभी धर्मी का यह पैगाम है ॥
मर गया पर नाम तो दुनिया में रोशन कर गया ।
है हमेशा ज़िन्दा वह जिसका कि ज़िन्दा नाम है ॥
नामुरादो रूस्याह कातिल हुआ खाना खराब ।
चार सू रोशन हुआ धर्मी का लेकिन नाम है ॥
ज़िन्दगी धर्मी की हमको खूब देती है सबक़ ।
नेक को मिलती है नेकी बद का बद अंजाम है ॥
चार दिन की ज़िन्दगी में भूलना मत मौत को ।
सोच कर चलना यहां माया का फैला जाल है ॥

अकबर का पैगाम राणा प्रताप को

भजन नं० १३०

पहुंचा जब अकबर का कासिद वक्त था वह शाम का।
दशत में राना था तन्हा साथ था समसाम का॥
अस्प प्यासा खुद भी प्यासा आब का कतरह न था।
रेग बिस्तर और ढेला तकिया था आराम था॥
खत दिया क़ासिद ने जिसमें था लिखा ऐ नामवर।
है ज़बांज़द आज कल किस्सा तेरे आलाम का॥
किस लिए नाहक उठाता है तू यह रंजो अलम।
पड़ चुका है हिन्द में सिक्का हमारे नाम का॥
यह नहीं मुमकिन कि बरसर हो सके तू जंग में।
क्या करेगा तू बता सामां नहीं गर काम का॥
खतम कर अब जंग और शर्तें इताइत कर कबूल।
है नतीजा हेच तेरे मुद्दआये खाम का॥
आ मेरे दरबार में और कुर्सिये ज़रीं पै बैठ।
ऐश कर और दौर रख हरदम शराबे जाम का॥
मैं फकत यह चाहता हूं ऐ दिलेरे होश मंद।
दूर कर दे दस्ते उल्फत से अलफ इस्लाम का॥

प्रताप का अकबर को पैगाम का जवाब।

भजन नं० १३१

यूं जवाब अकबर को राणा ने दिया पैगाम का।
सिर झुकाऊं किस तरह फ़रजन्द हूं मैं राम का॥
पृथिवी है मेरा तख्त और फलक अपना है कफन।
कौम का गम खाता हूं भूखा नहीं इनआम का॥

क्षत्रियों के वास्ते कब पेशोइशरत है रवा ।
दर्दे मिल्लत का हूं आदि गम नहीं आराम का ॥
हूं सरापा मैं फना हुब्बे वतन में ऐ मुग़ल ।
मुझको गर्दिश में मज़ा मिलता है दौरे जाम का ॥
मुझको है हर दम यह ग़म आज़ादिये मुल्के वतन ।
है मुझे दर पेश किस्सा हिन्द की अक़वाम का ।
इज्ज़ते आबा का मैं ने रक्खा है संगे बिना ।
खास मतलब है मेरे आग़ाज का अंजाम का ॥
ज़िन्दगी बाकी अगर मेरी है तो चित्तौड़ में ।
एक दिन जारी करूंगा सिक्का अपने नाम का ॥
लो ! श्री प्रताप ने जो कुछ कहा पूरा किया ।
बेगुमां वह मर्द था और आदमी था काम का ॥

'चेतक' की मृत्यु पर प्रताप का विलाप ।

भजन नं० १३२

दो०—हा ! मित्र दगा देके अकेले ही सिधारे ।
ठहरो तो हम भी चलते हैं साथ तुम्हारे ॥

प्यारे चेतक ! कहां तुम सिधारे, मुझको छोड़चले प्राण प्यारे ।
तुमने लोचन न अपना उघाड़ा तुमपर रोता है प्रतापबिचारा ।
तुमने मुझको है हा ! यूं बिसारा, तुम बिन सूना लगे संसारा ।
तेरे ऋण से मैं हूं मुक्त कैसे, तेरी सूरत को हा ! भूलूं कैसे ॥
तू तो था मेरा प्राण अधारा, तुम बिन मेरा जीवन व्यर्थ सारा
खोलो चेतक ज़रा अखियां खोलो, अपने प्यारे प्रताप से बोलो ॥
रख के गोदी में तुमको है रोता, नैनवारि से मुख तेरा धोता ।
मेरे दुःखों के ऐ मेरे बन्धु, मेरे प्राणों के रखबीर बन्धु ॥

मुझसे कीनों क्यों हा ? किनारा, देखो रोता प्रताप बिचारा ।
तेरी अङ्गों की वह छबि प्यारी, तेरी बिजली सी वो गति न्यारी ॥
मुझको चेतक बता दे कहां है, ढूंढ़ लाऊं कि बस तू जहां है ।
मुझसे रूठे क्यों चेतक भ्राता, देखो मुद्दत से तुमको हिलाता
चूम मुखड़ा तुम्हें हूं जगाता, लाके आंचल से पानी पिलाता ।
तुमने मुझपर है जान गंवाई, तेरी कैसे सहूं मैं जुदाई ॥
मेरे प्राण पखेरू बिचारे, जाना चाहता हूं साथ तुम्हारे ।

प्रताप की प्रतिज्ञा ।

भजन नं० १३३

इन पापियों की जब तक नखवत न दूर कर दूं ।
जयपुर का किला ढाकर जब तक न चूर कर दूं ॥
महल्लात की कनीजें बेचूं न कौड़ियों पर ।
नीचा न मानसिंह का सरपुर गरूर कर दूं ॥
जिसके लिये लहू को नदियां बही हैं अकसर ।
उस ही चित्तौड़ से जब दुश्मन ना दूर कर दूं ॥
ऋषियों की पुण्य भूमि से दूर हो बिधर्मी ।
तलवार से फना सब फिसको फजूर कर दूं ॥
देहली को जीत कर में झण्डा उड़ाऊं अपना ।
ताकत के अपनी जौहर ज़ाहिर ज़रूर कर दूं ।
अकबर को है तकब्बुर दौलत व सलतनत का ।
गाफिल को ज़रबे खञर से नाशऊर कर दूं ॥
कन्धों पै सर है जब तक शमशीर हाथ में है ।
मुमकिन न सर यह नीचा अकबर हजूर करूं ॥
आखिर ज़िन्दगी तक यह ही रहेगी ख्वाहिश ।
जो कुछ कहा है उसको पूरा ज़रूर कर दूं ॥

आनन्द भोग सारे त्यागे हैं उस घड़ी तक ।
अगियार को न जब तक भारत से दूर करदूं ॥

प्रताप की धीरता

भजन नं० १३४

सर्व क्लेशों ने मिल कर परस्पर सखा ।
राणा प्रताप पै भारी वार किया ॥
न अधिक हुआ धीर कर से न दी ।
लाख दुःखों ने निशदिन प्रहार किया ॥ १ ॥
अति व्याकुल दुःखी हुआ ऐसा बिकल ।
किया यवनों ने छलबल से पलपल में छल ।
बन में बृक्षों के भी न मिले फूल फल ।
शोक फिर भी नहीं एक बार किया ॥ २ ॥
ऐसा हाल बेहाल निढाल हुआ ।
शभकाल निकाला की चाल चला ।

प्रह्लाद को हरणाकुश की धमकियां

भजन नं० १३५

बदल तेवर कहा राक्षस ने हैबत नाक लैहजे में ।
भक्त प्रहलाद हरनाकुश के जब दरबार में आये ॥
नहीं शीरीं आ सकती कभी ज़हरे हलाहल में ।
नहीं मुमकिन सआदत पिसरे नाहंजार में आये ।
मेरे दावा खुदाई का हो मुनकिर मुझ से ही पैदा ।
ग़ज़ब है खूने बुलबुल दुश्मने जां खार में आये ॥

गले पर तेग को चलने दे आ इसरार के पुतले।
तग़ैयर देखना फिर क्या तेरे अतवार में आये॥
तेरा जब होगा सर तन से जुदा मालूम तब होगा।
मज़ा क्या २ तुझे कम्बख्त इस इन्कार में आये॥
उड़ादूं अपने ही फरज़न्द का सिर अपने हाथों से।
मेरा जोशे जनूं हां अब मेरी तलवार में आए।

प्रह्लाद का निष्क्रिय प्रतिरोध।

भजन नं० १३६

पिता अधिकार है तुमको, हमें गिरि से गिराने का।
जलाशय में डुबाने, का और पावक में जलाने का॥
तुम्हें अधिकार है राजन निकालो देश से अपने।
तथा बन्दी बना डालो, हमें इस जेलखाने का।
हमें भी सोलह आना है दिया यह हक ईश्वर ने।
प्रतिज्ञा पालने में शान्ति से दुःख उठाने का॥
तुम्हें अधिकार है हमको दुःख शूली पर चढ़ा दीजै।
हमें अधिकार है तिसपर न पीछे पग हटाने का॥
अहो सुरेन्द्र इस भय से न तुम भयभीत कर सकते।
आत्मिक बल भरा हममें सफलता सुख के पाने का॥
किया है सत् प्रण जो कुछ न जौ भर अब टलेंगे हम॥
कलङ्कित कालिमा अपने नहीं मुख पर लगाने का।
हुआ प्रहलाद था जिसने तजा था डर से सत्याग्रह।
कभी इतिहास में ऐसा नहीं हरगिज़ लिखाने का॥
पवित्रोद्देश्य अपने को तिलांजली दूं नहीं हरगिज।
तुम्हारी इन दुर आज्ञाओं के संमुख सिर झुकाने का॥
हमारा लक्ष है ऊंचा हमारा धैर्य निश्चय है।

सहायक है स्वयं भगवन् जो रक्षक है ज़माने का ॥
तुम्हारी यह दमनशैली अवश्य इक दिन दमन होगी ।
समय भी है उपस्थित अब दमनकारी के जाने का ॥

गुरु गोविन्द के पुत्रों का आत्मसमर्पण ।

भजन नं० १३७

जिक्र इस्लाम का इस वक्त न हमसे कर तू ।
जिस्म तो दब चुका अब शीश पै पत्थर धर तू ॥
जुल्फे गोविन्द के हैं जिनसे दहलती है शाही ।
सिंह पुत्रों को न गोदड़ के बराबर कर तू ॥
जिस्म खाकी तो मिला खाक में मिलना है ज़रूर ।
रूह को मार दिखलादे तो जानूं नर तू ॥
हुक्म ईश्वर का यूं ही इस में उज़र क्या है ।
तमा क्या देता है ले जायेगा हमराह ज़र तू ।
सर को दे तेगबहादुर ने ली थी सरदारी ।
हमको भी आज उसी जेल में ज़ालिम धर तू ॥
शुक्र सद शुक्र हुए धर्म के बदले कुर्बान ।
गौर से देख हकीकत की हकीकत पर तू ॥
धर्म से प्रेम करें जिस्म से उल्फ़त तोड़ें ।
वसल आसान नहीं मरने से पहले मर तू ॥
हाथ तो दब चुके अब आंख उठाकर यह दास ।
अर्ज ईश्वर से यही भक्तों से भारत भर तू ॥

भजन नं० १३८

खौफे आफत से कहां दिल में रया आयेगी ।
बात सच्ची है जो वह लब पै सदा आयेगी ॥



गुरु गोविन्दसिंह के साहिबज़ादे।

दिल से निकलेगी न मरकर भी धर्म की उल्फत ।
मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वफा आयेगी ॥
गैर जुहम और खुदो से जो करेगा हमला ।
मेरी इमदाद को खुद शाने खुदा आयेगी ॥
सामना सबरो शुजायत से करूंगा मैं भी ।
खिच के मुफ तक जो कभी तेगे जफा आयेगी ॥
आत्मा हूं मैं बदल डालूंगा फौरन चोला ।
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी कज़ा आयेगी ॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सिर पर ।
खिदमते धर्म में जो रंजोबला आयेगी ॥
अबरतर अश्क बहायेगा मेरे लाशे पर ।
गम मनाने के लिये काली घटा आयेगी ॥
खून रोयेगी आसमां पर मेरे मरने पै शफक ।
खाक उड़ाने के लिये बाद सबा आयेगी ॥
ज़िन्दगानी में तो मिलने से झिझकती है "फलक" ।
खलक को याद मेरी बादे फ़ना, आयेगी ॥

पं० लेखराम जी का एकपत्र ।

भजन नं० १३९

लिफाफा हाथ में लाकर दिया जिस वक्त माता ने ।
लगे झट खोल कर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को ।
लिखा था उस में कुछ हिन्दू मुसलमां होनेवाले हैं,
तो धोकर हाथ जल्दी से हुए तय्यार जाने को ।
कहा माता ने ऐ बेटा ! अभी तू आ के बैठा है,
अभी फिर हो गया तय्यार तू परदेश जाने को ।

तू माता और बीबी को कुछ ऐसा भूल जाता है,
नहीं आता महीनों ही हमें सूरत दिखाने को।
खबर सुध बुध हमारी तू न लेता है न ले बेटा,
मगर लड़का लबेदम है नहीं खाता है खाने को।
मेरा इकलोता बेटा है गर मरता है तो मरने दो,
मैं जाता सैकड़ों ही लाल जाती के बचाने को।
मुलाजिम भी सवारी उस समय लेकर के आ पहुंचा'
लो माता जी नमस्ते है मैं हूं मजबूर जाने को।
सुबह को तार यह पहुंचा, कि लड़का चल बसा घर से,
तो बोले फिक्र ही क्या है,हर इक आता है जाने को।

शंकर का माता से आज्ञा मांगना

भजन नं० १४०

कहा माता से शङ्कर ने नदी के बीच में जाकर।
मुझे संन्यास की आज्ञा अता कर मातु कृपा कर॥
भुलाया नाम ईश्वर का हुआ है नास्तिक भारत।
जहालत के अब्र में वेद का सूरज छिपा जाकर॥
बने हैं बोद्ध और जैनी प्रजा राजा ज़माने में।
पड़ा अज्ञान का पर्दा उठाना है मुझे जाकर॥
मैं वेदों के लिये सर पर कफन बांधू मेरा माता।
धर्म के वास्ते जन्नत करूं आबाद मैं जाकर॥
ब्राह्मण हैं हमारा फर्ज वेदों की हिफाजत है।
ज़रा कह दीजये जा पुत्र अपना फर्ज पूरा कर॥
जो मुमकिन है उन्हें फिर से ब्रह्मवादी बनाऊंगा।
बनाऊं ब्रह्म का मन्दिर जहालत का किला ढाकर॥
पढ़ाऊं उपनिषद का पाठ मैं सारे ज़माने को।

दिखा दूं फिर से भारत भर में वैदिक धर्म फैलाकर ॥
खुशी से दे मुझे संन्यास की आज्ञा मेरी माता।
हमेशा के लिये दे छोड़ अब सीने से चिपटा कर ॥
यह सुनकर बात शङ्कर की कलेजा थाम कर माता।
ज़रा वह ठहर कर रोते हुए, बोली यों घबराकर ॥
मेरे बेटे जरा तो सोच दिल में मेरा दुनियां में।
सहारा है तू ही नूरुलबसर मत यह इरादा कर ॥
बनाकर मैं तुझे दूल्हा तेरी शादी। रचाऊंगी ।
दुखी मत कर बुढ़ापे में ज़रा मेरा भी कहना कर ॥
कहा सुन कर यह शङ्कर ने न मानूंगा न मानूंगा।
मैं जाऊंगा जरूरी कुछ न तू झगड़ा बखेड़ा कर ॥
पिता माता न सुत भ्राता न कुछ अपना बेगाना है।
यह झूठा जग का नाता है न मेरा मोह माता कर ॥
गृहस्ती में धरा क्या है ना विषयों में मजा कुछ है।
लगी है लौ हरि से मैं न घर बैठूंगा सुस्ता कर ॥
न गर जाने मुझे देगी तो मैं दुनिया से जाऊंगा।
मरूंगा डूब कर इस दम तू फिर रोयेगी पछताकर ॥
लगी फिर मातु यों कहने यह सुन गुफ्तार शंकर की।
करो संसार का दुख दूर ज्ञान आनन्द वर्षा पर ॥
अगर जाता है जा बेटा पिता का नाम पैदा कर।
मगर इक शर्त है कि बादे मुर्दन मेरे लाशे कर ॥
चिता में रख जलाना हाथ से अपने ही तू आकर।
कहा शंकर ने माता से करूंगा शर्त यह पूरी ॥
जहाँ हूंगा मैं आऊंगा रहूंगा कौल पूरा कर।
मुझे आशीश दे माता कमर बसता रहूं हर दम।

करूं कर्तव्य पूरा छोड़ बैठूँ मैं न घबरा कर।
यह कह कर चल दिए शंकर किया प्रचार वेदों का॥

पूर्ण भक्त की पापिन माता को फटकार।

भजन नं० १४१

चाहे लाख कहो नहीं मानूं कभी तेरी सेज पै पांव धरूं न ज़रा
दिल में तेरे है बुरी नीति समाई पापिन।
नाक दोनों ही कुलों की तैं कटाई पापिन।
हाय निर्लज्जता हाय ढिठाई पापिन।
भोग बेटे से करे शर्म न आई पापिन॥
हाय पाप के सिंधु में तू तो बही तेरे साथ मैं पाप करूं न ज़रा।
अग्नि में पड़ के जल जाऊं तो परवा नहीं।
कोह से जाय फिसल पांव तो परवाह नहीं।
सिर को तलवार से कटवाऊं तो परवाह नहीं।
ज़हर की कोई डली खाऊं तो परवाह नहीं॥
चाहे सारे जगत के दुख पड़ें मैं तो भी मन में डरूं न ज़रा॥
आस्माँ टूट गिरे जान गवा जाऊं मैं।
यह जो फट जाये ज़मीं इसमें समा जाऊं मैं॥
अजदहा कोई डसे हस्ती मिटा जाऊं मैं।
तेरा मान कहा तेरी सेज पै चढ़ विषयभोग के फल को चखूं न ज़रा
जख्म तलवार का हो जाता भराया जाता।
जो कहीं सिर फटा होता सिलाया जाता॥
सख्त से सख्त गमो रञ्ज उठाया जाता॥
"चन्द्र" इस जख्म का मरहम तो न पाया जाता।
हाय बानी का बान है कैसा गज़ब न तो जियूं ज़रा कि मरूं न ज़रा

शहीद सन्यासी स्वा० श्रद्धानन्द

मरते २ भी हमें मरना सिखा कर चल दिये

भजन नं० १४२

मरते २ भी हमें मरना सिखा कर चल दिये
यह अमर जीवन का नुसखा था बता कर चल दिये
आपकी हस्ती थी, या तसवीर इस्तकलाल की
गोलियां पिस्तौल को सीना पर खा कर चल दिये
कब तमंचा से कलेजा पर हुए सुराख तीन
तीन अक्षर ओम् के दिल में लिखा कर चल दिये
लग गई अब खूँ की धारा से पक्की दागे बेल
वीर पुत्रों के लिए रस्ता बना कर चल दिये
केस शुद्धि का न अब तनसीख के काबिल रहा
फैसला पर खूँकी मोहरें लगा कर चल दिये
अब चली शुद्धि के पौदे की जड़ पाताल को
खूने दिल से बागवां पानी लगा कर चल दिये
हासदों को था शराफत और असालत पर गरूर
आज़माना था उन्हें बस आज़मा कर चल दिये
देख कर क़ातिल को अपने महज़ बुज़दिल ज़नखिसाल
हथकड़ियां व चूड़ियां कड़ियां पहना कर चल दिये
मुदआ यह था न औरों पर पड़े गरदो ग़बार
धर्म के पथ में लहू अपना बहा कर चल दिये

कोई मां का लाल हो आके अब सज्जादह नशीं
आप तो मठ में पवित्र आसन जमा कर चल दिये
देख तो आशा की लाशा और मनोरथ का विमान
चार दिन जो मोहनी मूरत दिखा कर चल दिये
आगया था बन के अग्नि बान-अग्नि का पयाम
यूं शरण में अग्नि के आनन्द पाकर चल दिये
हो गये बेताब श्रद्धानन्द स्वामी जब शहीद
धैर्य और सन्तोष सब दामन छुड़ा कर चल दिये

भजन नं० १४३

शहीदों के खूँ को बहुत आज़माया
हमारे हक़ीक़त पर तलवार रखकर
चमकती हुई नंगी तलवार रख कर
बड़ी शान से था कहा धर्म छोड़ो
नज़ाकत से गर्दन पर तलवार रखकर
मगर क्या बहादुर का दिल डगमगाया
खुशी से तेरे वार को आज़माया
लिया देख दीवारों में भी चुना कर
गई रुक तेरी ईंट शानों पर आ कर
लिया आजमा दावते दीन देकर
कहा शेर बच्चों ने गर्दन उठा कर
खुशी से करो इरादे दिल के पूरे
नहीं खौफ़ खाते शेरों के बच्चे
किसी को था चरवाया आरे चला कर
किसी को था मरवाया ज़िन्दाजला कर

किसी की थी जल्द उखड़ी चिमटों से खिचकर
मगर इन शहीदों के बदले न तेवर
खुशी से पीया सबने जामे शहादत
सभी ने किया ऊंचा नामे शहादत
कभी पेट में आके खंजर को घोंपा
बहादुर की यूं जान ली देके धोखा।
कभी करके बीमार पुरसी बहाना।
बनाता है रीवाल्वर का निशाना
बहुत आजमाया बहुत आज़माया
शहीदों के खूं को बहुत आज़माया
नहीं खौफ खाने के आज़ार से हम।
न सहम जाने के तलवार से हम
डरेंगे न पिस्तौल के वार से हम
न पीछे हटें धर्म प्रचार से हम
मिटेगी न सखती से हस्ती हमारी
दबाने से होगी न पस्ती हमारी

भजन नं० १४४

बनें श्रद्धानन्द आज यह हिन्दू सारे।
बला से चलें सिर पर तेशे वा आरे॥
गले पर फिरें याकि खन्जर दो धारे।
अदु गोलियां चाहे सीने पर मारे॥
हटेंगे न शुद्धि से शुद्धि के प्यारे।
इसी राह में शौक से मर मिटेंगे।
न लेकिन फिरेंगे कभी रुख हमारे।
फिदा जिसमों जां करेंगे खुशी से॥

हों गर लाजपत मालवी के इशारे ॥
न समझो कि डर जायँगे कतल से हम।
है जोशे शहादत दिलों में हमारे ॥
किया कतल स्वामी को कातल हुआ क्या।
बने श्रद्धानन्द आज हिन्दु यह सारे ॥
करेंगे अब हम सब निडर होके शुद्धि।
अगर हौसलों में है कुछ दम हमारे ॥
जो शुद्धि का चक्कर चलेगा नज़ामी।
नज़र आयेंगे फिर तुम्हें दिन को तारे ॥

भजन नं० १४५

बुज़दिलो! गैरत का कुछ इज़हार होना चाहिये।
ख्वाबे गफलत से हमें बेदार होना चाहिये ॥
हिन्दुओ अब वक्त है होशियार होना चाहिये।
कौन कहता है कि नामुमकिन है हिन्दु सङ्गठन।
इस खयाले खाम से दो चार होना चाहिये ॥
विस्वसे सब दूर हो जायें दिलों से इस लिये।
हर जगह पर वेद का प्रचार होना चाहिये ॥
हो रहे हैं हरसू अत्याचार हिन्दू कौम पर।
बुज़दिलो! गैरत का कुछ इज़हार होना चाहिये ॥
गर्क हो जायेंगे इस तूफान के मँझधार में।
बहरे गफलत से हमें अब पार होना चाहिये ॥
ले के आईना ज़रा सूरत तो देखो कौम की।
कुछ तो जाति से तुम्हें अब प्यार होना चाहिये।
बामे रफतन पर चढ़ाना गर है अपनी कौम को।
"बर्क" मरने को हमें तय्यार होना चाहिये ॥

स्वा० दयानंद और आर्यसमाज

स्वामी विरजानन्द का दक्षिणा मांगना ।

भजन नं० १४६

ऋण गुरु जी का दयानन्द चुकाना होगा ।
जाना घर दक्षिणा देके ही तो जाना होगा ॥
यूं तो हैं लौंग अनमोल रत्न से बढ़ कर ।
मेरी इक भूख का भी दुःख मिटाना होगा ॥
मन को मारे हुए आंखों के बिना बैठा था ।
तुमको लाठी की जगह हाथ में आना होगा ।
पास था जो कुछ मेरे तुमको दिया क्या दूं अब ।
तुम मुझे दोगे तो कृतज्ञ ज़माना होगा ॥
शिष्य हो सच्चे तुम तो मान लो मेरी आज्ञा ।
आपका पढ़ना सफल मेरा पढ़ाना होगा ।
द्रव्य धन कुछ न चाहूं यही है इच्छा मेरी ।
जगत में वेदों का डंका बजाना होगा ॥
वेद को ऋषियों की सन्तान ने त्यागा हाय ।
अब सरल भाषा में ही भाष्य बनाना होगा ॥
जो कलङ्कित किए बैठे हैं महीधर आदि ।
उन अनर्थों को कर पुरुषार्थ मिटाना होगा ॥
आर्य्य जाति की हस्ती "चन्द्र" मिटी जाती है ।
मौत के पंजे से अब इसको छुड़ाना होगा ॥

स्वामी विरजानन्द का गुरु दक्षिणा मांगना

भजन नं० १४७

वेद वेदांग सारे पूर्ण जब ऋषि कर चुके ।
हाथ में कुछ लेके लौंगें आये गुरु चरणन झुके ॥
बोले ऋषिवर करके चरणों में गुरु के बन्दना ।
कीजिए स्वीकार मेरी अल्प सी यह दक्षिणा ॥
है नहीं कुछ पास मेरे और देने के लिये ।
प्राण तक तय्यार हैं गुरुभेंट करने के लिये ॥
सुनकर बचन यह शिष्य के मुनि का कलेजा भर गया ।
सोच कर कहने लगे कृत्य कृत्य गो अब हो गया ॥
मांगता हूं तुमसे केवल वह ही जो कुछ पास है ॥
पूरी करोगे पुत्र तुम ही मेरी जो कुछ आस है ॥

स्वामी विरजानन्द की दीक्षा स्वामी दयानन्द को विदा करते समय

भजन नं० १४८

अन्धेर आलम में है कि दुनियां गई है वेदों को भूल बेटा ।
भटक गए सब हैं राहे हक्क से, किया है बातिल कबूल बेटा ॥
कोई है गद्दी पै अपनी नाज़ां, बना के मठ यां कोई है गुल्तां
बिना पै सब रेत के खड़े हैं, हिला हिला उनको भूल बेटा ॥
न उनकोदुनियां कीकुछखबरहै,नउनकोउकबाकाकुछ खतर है ।
खुदा व शैतां को बीच लाकर, हैं करते झगड़े फजूल बेटा ॥
कोई है शोहरत पसन्द इनमें, तो कोई खुदगर्ज कोई ज़िद्दी ।
अकील या बेसमझ हैं सारे, हैं सब हमादां जहूल बेटा ॥
न जाने ग़ैरत को हो गया क्या, है आत्मा तक गुलाम उनकी ।

बशर तो क्या कहिये उन पै हाकिम, हैं जंड पीपल बबूल बेटा ॥
जो रहनुमा थे वह राहज़न हैं, जो देवता थे वह लेवता हैं ।
किसी का मज़हब है खीर पूरी, टका किसी का वसूल बेटा ॥
ग़रज़ वह हालत है आदमी की, इससे हैवां है लाख बरतर ।
कि उनके हैं सिर्फ दांत चरते, हैं इनके चरते अकूल बेटा ॥
पढ़ाया तुझको सिखाया तुझको, जो राज़ था सब बताया तुझको ।
वह बेद का इल्म तुझको बख्शा, न था जो सहलुलहसूल बेटा ॥
जो नज़र देनी है नज़र वह दे, हस्बेशां मेरे फैज़ के हो ।
तू वेद लेकर है लौंग देता, करूं मैं क्योंकर कबूल बेटा ॥
है जान से बढ़कर वेद मुझको, पढ़ा दिया जिसको बेगरज़ हो ।
है जान क्या खाक भेंट इनकी, है आगे जिस्म इनके धूल बेटा ॥
जो चाहे सरसे यह कर्ज़ उतरे तो आम आलम में वेद करदे ।
भरी है झोली तेरी किसी ने, तू जा ज़माने की झोली भरदे ॥

स्वामी दयानन्द की प्रतिज्ञा

भजन नं० १४९

अय गुरु ! ताबये फ़रमान दयानन्द होगा ।
आपके बचनों पै कुरबान दयानन्द होगा ॥
मुझसे नाचीज़ को जो आपने अमृत बख्शा ।
बादे मुर्दन मेरे अहसान दयानन्द होगा ॥
मिस्ल लक्ष्मन जो यह बेहोश हैं भारतबासी ।
चारागर मिस्ले हनूमान दयानन्द होगा ॥
प्राण जिन कालिबों में नामको बाकी नरहे ।
ऐसे मुर्दों का यह प्राण दयानन्द होगा ॥
खानाये भारत में जो है घोर अन्धेरा छाया ।
उसमें इस वक्त रोशनदान दयानन्द होगा ॥
शमाए हुक्कानी वेद पै तन मन धन से ।

सूरते परवाना कुरबान दयानन्द होगा ॥
गुल्शने कौम के गुल हाय गिरे जाते हैं ।
उन सबकामुहाफिज़ो निगाहबान दयानन्द होगा ॥
जां बलब गाये व बेवा और हैं कौमी बच्चे ।
खोल के सीना मेहरबान दयानन्द होगा ॥

शिवरात्रि की याद में

भजन नं० १५०

घर घर चरागे वहदत शिवरात्रि जला जा ।
तारीकी सब मिटाजा, भारत को जग मगा जा ॥
प्रेम और दया बढ़ा जा, बदबखती सब उड़ा जा ।
भारत निवासियों के, आ भाग फिर जगा जा ॥
मन मैल दूर कर जा, सुख शान्ति दिखा जा ।
वैदिक धर्म को गंगा, संसार में बहा जा ॥
दुनिया के दुःख छुड़ा जा बिछुड़ों को फिर मिला जा ॥
अबलाओं को बचा जा पतितों को भी उठा जा ।
शिवरात्री अभी तक छोड़ा नहीं बुतों को ।
शिव मन्दिरों में फिर से अपना सबक पढ़ा जा ॥
शिवलिंग पर चढ़ा कर फिर एक वार चूहा ।
मूरत से चित हटा जा, शंकर को शिव दिखा जा ॥
गंगा में मूरतों का प्रवाह फिर बहा जा ।
वेदों की जय का नारा काशी में फिर लगा जा ॥
हां असलियत बता जा कुफ़रो जहल हटा जा ।
शिवरात्रि दयानन्द इक और फिर बना जा ॥
पहले जहां न हरगिज अहसान तेरा भूलें ।
"शादां" दिलों में सिक्का अज़मत का फिर बिठा जा ।

एक आर्य पुरुष की घबराहट और महर्षि का उपदेश।

गजल नं० १५१

आर्य्य—तुम्हें बदनाम ऐ भगवन् सरे बाज़ार करते हैं?
महर्षि—मुझे मशहूर करते हैं बहुत उपकार करते हैं।
आर्य्य—चढ़ाकर एक गधे पर आदमी मुंह कर दिया काला।
पुकारें नाम से भगवन् कि अत्याचार करते हैं?
महर्षि—मुनव्वर चान्दसा मुखड़ा तो है असली दयानन्द का
वह मसनूई दयानन्दों की मिट्टी ख्वार करते हैं॥
आर्य्य—उठा पत्थर यह मारे हसिया पर और कहते हैं।
यह देखो किस तरह स्वामी का सत्कार करते हैं॥
महर्षि—यही पत्थर था उनका इष्ट जिसे वह फैंकते हैं अब।
वह गोया इस तरह से इष्ट का तिरस्कार करते हैं॥
आर्य्य—वह देते सैंकड़ों ही गालियां हैं शोक भगवन् को।
वह दुर्बचनों की भगवन् नाम पर बौछाड़ करते हैं॥
महर्षि—जो दुर्वचनों का होगा खातमा शुभ वचन सीखेंगे।
इन्हें हम आप शिक्षा के लिए तैयार करते हैं॥
आर्य्य—तुम्हें वह नीच जाति से बताकर तालियां पीटें।
तुम्हारी जाति से नफरत का वह इज़हार करते हैं॥
महर्षि—ब्राह्मण जन्म से मैं था वह मुझे नीच कहते हैं।
जन्म से नीच हैं सारे यह खुद प्रचार करते हैं॥
आर्य्य—तुम्हारे जिस्म की शक्ति का वह खाका उड़ाते हैं।
जो देकर सांड से तशबीह बहुत धिक्कार करते हैं॥

महर्षि—प्रभु का शुक्र है सारे मेरी शक्ति के हैं कायल।
जता ब्रह्मचर्य की अज़मत जगत् उपकार करते है॥
आर्य्य—जबां को आपकी नश्तर कहैं छोटे बड़े भगवन।
बड़े ही क्रोध से वह लानतो फटकार करते हैं॥
महर्षि—जो कहते हैं बुरा है डाक्टर नश्तर चुभोने में।
उसी की दयालुता का बाद में अकरार करते हैं॥
आर्य्य—गर्जं भगवन वह निन्दा भूढ़ हर प्रकार करते हैं।
महर्षि—यह है उनकी दया वह दास का उद्धार करते हैं॥

भजन नं० १५२

अमृतसर की घटना।

दयानन्दे निकोसीरत जो अमृत सर में आनिकले।
सदा खैरे मुकद्दम आई, हर दीवारो दर से॥
गुज़र होता जिधर से आपकी सूरत मुबारिक का।
निकल आते उधर से दर्शनों को लोग घर २ से॥
सदाये ओ३म् से पाको मुस्सफा हो गई वायु।
मुकानो महल सब गूंज उठे वेद मन्त्र से॥
लगाकर कान तुम मुझ से सुनो इक शाम का किस्सा।
किया खुश आपने पीरो जवां को अपने लैक्चर से।
मनोहर और दिलकश आप का उपदेश था ऐसा॥
हुई काफूर जिससे वेदली हर जाने मुज़तर से॥
मगर कुछ मूढ़ ऐसे थे जिन्होंने जोश में आकर॥
सरे मैदान फैंके ईंट पत्थर संग ऊपर से।
किसी को आंख फूटी और किसी का सर हुआ ज़ख्मी।

रहे महफूज़ स्वामी खुश नसींबे नेक अख्तर से ॥
मगर इस हरकते बद से न घबराये ज़रा स्वामी ॥
हुई ज़ाहिर न रंजश आपके बेबाक तीवर से।
गरज कर शेर की मानिन्द बेखाफो खतर होकर।
ज़बान अपनी मुबारिक से फरमाया यह फर फर से ॥

शेर की गर्ज।

गजल नं० १५३

डराते हैं अबस नादान मुझे वह ईंटो पत्थर से।
मुझे तो खौफ और खतरा नहीं शमशेरो खंजर से ॥
डरूं आलाम और आफात से मैदान में क्योंकर।
कि मैं निकला हुआ हूं बांध कर सिर पर कफन घर से ॥
समझता हूं मैं है मगलूब मैंने कर लिया सब को।
दलाइल का मेरे देने लगे उत्तर जो पत्थर से ॥
मुझे विश्वास है वह वक्त भी इक रोज़ आवेगा।
बदल जायेंगे जब यह ईंट और पत्थर गुलेतर से ॥
मुझे मंजूर है निर्णय सदाकत और बातिल का।
मेरा मतलब नहीं मुत्तलिक फसादे फितनाओ शर से।
फिदाये वेद हूं सब को बराबर मैं समझता हूं।
मुहब्बत है मुझे एकसां ब्राह्मण और शूद्र से ॥
अमूरत है अचल है एक है भगवान् को हस्ती।
बदल सक्ता नहीं इस भाव को मैं मौत के डर से ॥
सुनी जब यह दलेराना "फ़लक" गुफ्तार स्वामी की।
मुखालिफ जिस कदर थे रह गये हैरानो शशदर से ॥

———

रियास्त उदयपुर की घटना

भजन नं० १५४

(उदयपुर नरेश की विनय ऋषि दयानन्द से)

कहा कर जोड़ शाहे उदय पुर ने ऋषिवर से।
गुरुजी! आप की है नज़र गद्दी मेरे मन्दिर की॥
है लाखों का मुनाफा साथ इस गद्दी के ऐ भगवन्।
यह गद्दी सर जमीं पर कान है गोया जवाहर की।
खुशी से ज़िन्दगी के दिन गुज़ारो बैठ कर इस जा।
कमी कुछ रह नहीं सकती यहां पर माल और ज़र की॥
मुखालिफ आप की दुनियां है सारी आप हैं तनहा।
मुझे डर है न कर बैठे मुखालिफ बात कुछ शर की॥
ज़हे किसमत कि आप आये मुझे उपदेश देने को।
मुझे थी जुस्तजू मुद्दत से स्वामी एक रहबर को॥
मेरा परीवार खिदमत में रहेगा आपकी भगवन्।
मैं खुद हर वक्त दर्बानी करूंगा आप के दर का॥
बहुत पापों में डूबा है बहुत मुद्दत का बिगड़ा है।
सुधारो अब कृपा करके प्रभु हालत मेरे घर की॥
फकत एक मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ना होगा।
न पूजें आप खुद बेशक कभी मूरत को पत्थर की॥

गजल नं० १५५

ऋषि का उत्तर।

यह सुन कर बात राजा को ऋषि ने हंस के फरमाया।
तेरी ख्वाहिश करूं पूरी या मर्ज़ी अपने ईश्वर की॥
मेरे जीने का मकसद गुमराहों को राह पै लाना है।

मुझे इज़हारे हक़ के काम में परवाह नहीं सरकी ॥
राहे हक़ पर जो सर चलते हुए तन से जुदा होगा।
मेरी गर्दन रहेगी मुद्दतों मम्नून खञर की।
जिन्होंने जिन्दगी के कर लिया उद्देश्य को पूरा।
नहीं फिर मौत उनके वास्ते बस्तु कोई डर की॥
कदम इक इञ्च हट सक्ता नहीं राहे सदाकत से।
अगर मिलती है मुझको सल्तनत भी कुछ सिकन्दर की
तेरी गद्दी ही क्या गद्दी है तिस पर धर्म को छोडूं।
न छोडूं साथ मिलती हो अगर गद्दी भी इन्द्र की॥
किसी दुनियां के कुत्ते ही को पालो ज़र के टुकड़ों पर।
न बांधो हम गरीबों को मगर जंजीर से ज़र की॥
मैं अपने दिल के उस मन्दर का मुद्दत से पुजारी हूं।
कि जिस मन्दिर से आती है सदा दिन रात हर हर की
मैं उस दर का गदा हूं रिजक जो हर घर को देना है।
गदाई हो नहीं सकती है राजन् मुझसे दर दर की॥
मेरा मालिक वह मालिक जो शाहों का शाहनशाह है।
मैं खिदमत छोड़ कर उसकी करूं कैसे तेरे घर की॥
वही मालिक वही मालिक वही पालिक जहां का है।
हकूमत है उसी कादिर की लहरों पर समुंद्र की॥
मैं चुप कैसे रहूं ऐसे प्रभु को छोड़ कर राजन्।
परस्तिश कर रही है जब कि दुनियां ईंटो पत्थर की॥
बगल में कहके यह आसन दबाया बस ऋषिवर ने।
कमंडल हाथ में ले छोड़ दी भूमि उदय पुर की॥
हुआ जब आशकारा आत्मिक बल का नज़ारा यूं।
तो कदमों पर ऋषि के झुक गई गर्दन मुसाफिर की॥

भजन नं० १५६

अजमेर के आर्यों का महर्षि को रोकना

आर्य्य—न जाओ जोधपुर भगवन् विनय यही हमारी है ।
अकेले आप हैं दुश्मन वहां की प्रजा सारी है ॥
दयानन्द—है मेरा मुद्दआ प्रचार वेदों का घर घर हो ।
तो फिर क्या जोधपुर जाने में मुझको शर्मसारी है ।
आर्य्य—विमुख है देश भारतवर्ष वैदिक धर्म से सारा ।
सफलता हर जगह लेकिन यहां तो उलटी ख्वारी है ।
दयानन्द-नज़र में डाक्टर की सब बड़े छोटे बराबर हैं ।
लगाये उसके फाहा जिसके तन पै ज़ख्म कारी है ॥
आर्य्य—यहां के लोग अक्सर सङ्गदिल खुदसर घमंडी हैं ।
कभी अड़ बैठें भगवन् से हमें यूं बेकरारी है ॥
दयानन्द-धर्म से दुनियां की आफत हटा सकती नहीं मुझको
तपा जो आग पर सोना उसी में आबदारी है ॥
आर्य्य—है उनमें जोश सा कोई बुरी हरकत न कर बैठें ।
वह भी खाली न रह जावें जिन्हें उम्मीद भारी है ॥
दयानन्द-मेरी उंगलियों को बत्ती बना कर भी जलाएं गर ।
हों सब तारीक घर रोशन यह अपनी जीत भारी है
आर्य्य—मधुर शब्दों में ही प्रचार करना उस जगह जाकर ।
यही नीति है पालिसी है इसी में होशियारी है ॥
दयानन्द-किया है नाश पालिसी ने वैदिक धर्म का बिलकुल ।
यह अय्यारी है मक्कारी है और मतलब बरारी है ॥
आर्य्य-ऐ भगवन् आपको तो धर्म का प्रचार करना है ।
यही तो अर्ज़ हम लोगों ने खिदमत में गुज़ारी है ॥

दयानन्द-कलम करने में कैंची से शजर फूलें फलेंगे सब।
जड़ों के खोदने के वास्ते खंडन कुल्हाड़ी है॥
ऋषि ने जोधपुर जाकर किया प्रचार बेखटके।
करो तकलीदउनकी "चन्द्र" तब भक्ती तुम्हारी है॥

भजन नं० १५७

देश हितैषी

दयानन्द देश हितकारी तेरी हिम्मत पै बलिहारी॥ टेक
अविद्या जग में छाई थी, गफलत की नींद आई थी।
तेरा आना था गुणकारी, तेरी हिम्मत के बलिहारी॥१॥
पातञ्जलि व्यास हो गुज़रे, भारत तेरे दाग धो गुज़रे।
तेरे आने की थी बारी॥ तेरी हिम्मत०। २॥
तू वेदों का प्यारा था, तू भारत का सितारा था।
तेरे दर्शन पै बलिहारी॥ तेरी हिम्मत०॥ ३॥
तेरे पास जो आते थे, दिली संशय मिटाते थे।
सभी भारत के नरनारी॥ तेरी हिम्मत०॥ ४॥
तेरे तेजस्वी चेहरे से, तेरी ब्रह्मचर्य विद्या से।
डरे थी दुनियां तो सारी॥ तेरी हिम्मत०॥ ५॥
चलाई ब्रह्म की पूजा, समाजें बन गईं हरजा।
तेरा उपकार है भारी॥ तेरी हिम्मत०॥ ६॥
भारत के भाग खोटे थे, हुआ स्वामी जुदा हमसे।
हुआ दुःख सबको है भारी॥ तेरी हिम्मत०॥ ७॥

भजन नं० १२८

थहल का सा मच गया काशी में जबप्रचार से ।
भर गया दिल में कर्ण जोशे जनूं आसार से ॥

ज़ेबे तन कर उसने तलवारें कमर बस्ता हुआ ।
याने स्वामी जी को समझाने चला तलवार से ॥

खून आंखों से टपकता था यह दिल में जोश था ।
यूं ख़िताब आकर किया स्वामी जी नेको कार से ॥

क्यों यह कहते हैं टीके और गंगा जल से आप ।
ख़ाक भी हासल न होगा मुफ्त की तक़रार से ॥
हंस के स्वामी ने कहा सुन ले सदा अब की कर्ण ।
ऐसी बातों का पता ले वाक़िफ़े इसरार से ॥
दिल दुखाने से मुझे कुछ मुद्दआ हासिल नहीं ।
है ग़रज़ कोई मेरी तो देश के उद्धार से ॥
तोप के मुंह पर भी रखदो तो भी सच बोलूंगा मैं ।
तुम डराते हो मुझे गज़ भर की क्या तलवार से ॥
जो बनेगी मुझ पर झेलूंगा खुशी से जान पर ।
रुक नहीं सकता मैं अमर वाजबुल इज़हार से ॥
नूरे वहदत से मिटाना है स्यादे कुफर को ।
दूर करना है ज़ुलमो जहल को संसार से ॥
गंगा जल पानी है तो टीका है चन्दन की लकीर ।
न वह अमृत है न यह मुक्ति का साधन यार से ॥
वेद बाणी और पुराणों की कथा में फर्क है ।
झूठे मोती को नहीं निसबत दुरेशाहवार से ॥
रास्तो पर हूं मैं तू नारास्ती पर है कर्ण ।

क्या तेरी तलवार की निसबत मेरी तलवार से ॥
यह खुदा लगती सुनी तो और भी जल भुन गया ।
वार स्वामी पर किया कम्बख्त ने तलवार से ॥
जब कि ब्रह्मचारी ने देखा अपनी नज़र तोड़ कर ।
गिर पड़ी तलवार धरती पर कर्ण बदकार से ॥
सख्त शरमिन्दा हुआ शशदर हुआ नादिम हुआ ।
कट गया ब्रह्मचर्य की तलवार जौहरदार से ॥
दूसरी तलवार लेकर फिर वार स्वामी पर किया ।
मुंह की खाकर भी न बाज़ आया वह अत्याचार से ॥
यह भी स्वामी ने कलाई से पकड़ कर छीन ली ।
और टुकड़े कर दिये उसके इस प्रकार से ॥
देख कर प्रताप स्वामी का कर्ण शशदर हुआ ।
हौसला दिल से गिरा सब एक दम दीवार से ॥
पानी पानी होगया औसान ठिकाने आ गए ।
सब जनूं जाता रहा दीवार सिफ्त आसार से ॥

ऋषि दयानन्द का राव कर्णसिंह को जवाब ।

भजन नं० १५६

डराता है मुझे क्या ए कर्ण तू तेग़ोखंजर से ।
मेरी भगवान रक्षा करता है हर आफतो शर से ॥
मुझे मक्सूद है प्रचार वैदिक धर्म दुनिया में ।
इसी के वास्ते फिरता हूं मैं बांधे कफ़न सिर से ॥
जो शास्त्रार्थ करना है तो जा अपने गुरु को ला ।
जो लड़ना है तो जाकर लड़ किसी राजा व ठाकुर से ॥
दशा भारत वर्ष की देख कर मैं खूब रोता हूं ।
निकलती है हमेशा आहें मेरे कल्बे मुज्तर से ॥

भड़कता है मेरे खण्डन पे तू जो तुझको क्या मालूम।
बहुत है दूर यह बातें तेरे हद्दे तसव्वर से॥
अरे क्या पड़गये पत्थर तुम्हारी अक़लो दानिश पर!
मुरादें मांगते हो बेवकूफों ईटो पत्थर से॥
प्रभु ने गर मुझे तौफीक दी तो देखना इक दिन।
निकलवा करके छोडूँगा बुतों कों मैं मनादिर से॥
वजाय इसके होंगे सन्ध्या और यज्ञ हवन हरजा।
धुनि उठा करेगी ओ३म् की भारत के हर घर से॥
मुझे जागीरों और गद्दियों का क्या लालच दिखाते हो।
मैं मस्तुग़नी हूं बिलकुल ज़र और सीमो जवाहिर से॥
मैं अपने जिस्मो जां सब धर्म पर कुर्बान कर दूंगा।
यही प्रण करके निकला था मैं अपने बाप के घर से॥
मेरी बातें बुरी लगती हैं तुमको आज पर एक दिन।
मज़ा मेरे वचन देंगे सिवा कन्दे मुकर्रर से॥
करण ने सुनी ऐ "प्रेम" जब गुफ्तार स्वामी की।
गिरा कदमों पे निकली बूए नखवत एक दम सर से॥

भजन नं १६०

वदां वालियो ऋषिया, तेरे आवन दी लोड़।
शिवरात्री जो आई, शिव दी पूजा कराई॥
दित्ता चूहा जो दिखाई दित्ता अक्खियां नू खोल॥ वेदां०॥
कहा पिता जी बताओ, गल्ल आख सुनाओ।
मेरे शंसय मिटाओ, देवो भरमां नू तोड़॥ वेदां०॥
पिता आख सुनाई, तैनूं अक्ल न काई।
कानूं पाई आ दुहाई, ऐ हे,जै बोल न बोल॥ वेदां०॥
स्वामी ज्ञान जो पाया, उठ जंगलां नूं धाया।

विद्या पढ़या पढ़ाया सच्चे शिव दी है लोड़ ॥ वेदां० ॥
मथुरा नगरी जो आई, दित्ती कुटिया दिखाई ।
स्वामी पुछदा है भाई, एथे रहंदा है कौन ॥ वेदां ॥
कहे रहंदा इक स्वामी जेड़ा वेदां दा है हामी ।
विरजानन्द है नामी, रहंदा ईश्वर दे कोल ॥ वेदां ॥
स्वामी आन पधारे, विरजानन्द द्वारे ।
कर जोड़ पुकारे, रख लो चरणां दे कोल ॥ वेदां ॥
चारों वेद पढ़ाये सच्चे अर्थ सिखाये ।
सत्यशास्त्रार्थ धियाय, दित्ता नयनाँ नूं खोल ॥ वेदां ॥
कीती खतम पढ़ाई गुरु दक्षिणा चढ़ाई ।
गुरु आख्या है भाई नहीं है लौंगां दी लोड़ ॥ वेदां ॥
गुरु आज्ञा जो पावां, उसनूं तोड़ निभावां ।
चाहे प्राण गवावां, देवां जिन्दड़ी नूं घोल ॥ वेदां ॥
देश देश में जावीं चारों वेद फैलावीं ।
सच्चा ईश पुजावीं, देवीं बन्धना नूं तोड़ ॥ वेदां ॥
ऋषि हुक्म जो पावां, चरणों शीश नवावाँ ।
वैदिक धर्म फैलावां, वज्जे वेदां दे ढोल ॥ वेदां ॥

भजन नं० १६१

जग बिच धुमाँ पइयां दयानन्द तेरियां ।
ऋषि मुनियां दी रीति चलाई, इक प्रभु दी पूजा सिखलाई ।
हुन तां मत्तां लइयां दयानन्द तेरियां ॥
ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बताया, बान प्रस्थ सन्यास जताया ।
शास्त्र गलाँ कहियां दयानन्द तेरियां ॥
छोटी उमर बिच विवाह न करना, हो निमाना महादुःखमरना ।
सफल हो गईयां कूकां दयानन्द तेरियां ॥

बिन विद्या नहीं ब्राह्मण बनदा, लखां फिरे चाहे ताने तनदा।
दसीयां खोल के कहियां दयानन्द तेरियां॥
मद्रा मांस ते चित हटावो, पेटां दे विच न कबर बनावो।
सच्चियां गलां कहियां दयानन्द तेरियां॥
पापी मनुष्य परे ही रहन, देश द्रोही पास न बहन।
सत्यार्थ विच कहियां, दयानन्द तेरियां॥
खद्दर पावो सादे बन जाओ, करो कमाई देश उठाओ।
असां अजे न मत्तां लइयां दयानन्द तेरियां॥
जिस तैनूं ज़हर खिलाई, उस दी भी तूं करी भलाई।
वाह कहियां ने बेपरवाहियां दयानन्द तेरियां॥

भजन नं० १६२

स्वामी सुत्याँ नूं आन जगा गया।
हाँ डुबदा जांदा सी देश बचा गिया॥
हाँ मचया देश विच अन्धकार सी।
हाँ वेदां नाल न सानूं पियार सी॥
हां सच्चे धर्म दा राह बता गया।
हाँ स्वामी सुत्यां नूं० ॥
स्त्री जाति नूं आन उभारिया।
हाँ गऊ माता दा कष्ठ निवारिया॥
हाँ दुखड़ा विधवा दा आप मिटा गया।
हाँ स्वामी सुत्याँ० ॥
छोटे बचयाँ दा विवाह रचांवदे।
ब्रह्मचर्य्य न पूरा नभांवदे।
ब्रह्मचर्य दी रीति सिखा गया॥
हाँ स्वामी सुत्यां० ॥

अछूत जाति दा हाल बेहाल सी।
हाँ पुछदा उन्हां दा न कोई हाल सी॥
छाती उन्हां नूं आन लगा गया।
हाँ स्वामी सुत्याँ नूं आन जगा गया॥
लालच दे नाल इन्हां नूं प्यार सी।
सच कहने ते इन्हां नूं आर सी॥
सच कहके प्राण गवां गया।
हां स्वामी सुत्यां० ॥
वदिक धर्म नूं सारे फैलावना।
जांदी बारी इक वाक सुना गया।
कहे ठाकुर मन लो प्यारयो।
ओहदा इहसान न दिल तो वसारयो॥
हां सीधे राह ते सानूँ पा गया।
हां स्वामी सुत्यां० ॥

भजन नं० १६३

पंजाबी बैत

बागवान सच्चा बागे हिन्ददासी, ऋषि दयानन्द खलक पुकारदीए
देके आबरहमतशफकतनाल कीतो हालतउस ताज़ा गुलज़ार दीए
करके दूर खिज़ां अविद्या दी, लाई लहर ज्ञान बहार दीए
पुस्तक गैरछुड़ा तलकीन सच्ची, कीती उसने वेद सुच्यार दीए
लगा फल हकीकीदा बूटयां नूं, खलकत ओम् ही ओ३म् उचारदीए
धर्म कर्म दो पई खुशबू सुन्दर, फुलां विच प्यारे लपटां मारदीए
चले पवन ठंडी वेद मन्त्रां दी, जले हुए जो दिलां नू ठार दीए
हिन्दू कौम दी जिन्दगीशानअज़मतसारी मेहर उसे वफादारदीए

चाहे शर्क थीं कढ दिखाई, उसने, सानूं सैर तोहीद बाज़ार दीए
सच्ची शिक्षा "बालमुकन्द" दित्ती, करके दया-आनन्द-प्यारदीए

———

जानबुझ खलकत फानी समझदुनियां; पईमेरीहोमेरीपुकारदीए
निकलगई जद फूक वजूद विचों,बाकी रही मिट्टी किसकारदीए
जेड़े विषय विकार दे विच डुब्बे, खबरउन्हां की ज्ञानविचारदीए
छड वहम नवेकला बैठ गोशे, फानी समझ प्रीत संसार दीए
सब खौफ खुदा भुला बैठे खलकत ऐवें पई उमरगुजार दीए
मकर झूठ फरेब ते दगाबाज़ी, रौनक अजकल इस बाज़ार दीए
चंडू भंग सुलफे विच मस्त कोई,आदत किसेनू जूएदीमारदीए
कोई ईश्वर तो मुनकिरहो कहन्दानेचरसारे ही कम्मसवारदीए
बन्दया बन्दगी कर हरदम,छड खुदी जेड़ीपईऐवें तैनूं मारदीए
नेकी कर ते छड व्यापार झूठे सच्ची समझ ऐ गल्ल व्यवहारदीए
मनमार जेड़े बिके नाम उत्तों पाई उन्हांने रमज़ दिलदार दीए
रख सिदक गमगान फिदा होजा मेहर तुझते आपकरतारदीए

———

दयानन्द की प्रतिज्ञा

भजन १६४

खिदमते मुल्क में यह जान रहे या न रहे।
उल्फते मुल्क में यह शान रहे या न रहे॥
क्यों मना करते हैं जाने से मुझे राजस्थान।
क्या उन्हें डर है मेरी जान रहे या न रहे॥
जाऊंगा २ प्रचार की खातिर मैं ज़रूर।
मैं न मानूंगा मेरी जान रहे या न रहे॥
जीते जी वेदों का डंका मैं बजाऊंगा वहां।

हाथ में चाहे वह मैदान रहे या न रहे ॥
साफ़ कह दूंगा हज़ारों में बिला खौफ़ो खतर।
कोई फिर मेरा महरबान रहे या न रहे ॥
रास्त गोई को छोड़ा है न छोडूंगा कभी।
सर रहे या न रहे जान रहे या न रहे ॥
जान के खौफ से कर्तव्य से हटूंगा न कभी।
काम रह जायगा इनसान रहे या न रहे ॥
कुछ रहे या न रहे पास मेरे अन्त समय।
ध्यान ईश्वर का रहे प्राण रहे या नरहे ॥
आजमाइश की घड़ी मिलती है किस्मत से कभी।
आन रह जाय प्रभु जान रहे या न रहे ॥
मैं दयानन्द हूं ईश्वर की दया का भुक्षु।
प्रेम में मग्न रहूं जान रहे या न रहे ॥

भजन नं १६५

स्वामी वेदां वालिया, जान्दा धर्म बचा लिया।
मुर्दियां दी तू पूजा छुड़ाई, जिन्दा प्रभू जपा लिया। स्वा०
छूत छातदे बन्धन तोड़े, सबनूं भाई बना लिया।
ऊंच नीचदा भरम मिटाके, सबनूं गले लगा लिया।
आत्म रूप देख कर अपना, जगत् वल्लों मन चा लिया
पूर्ण योगाभ्यास कमा के, ईश्वर दर्शन पा लिया।
आत्मदर्शि प्यारा स्वामी, सच्चा गुरु बना लिया।
उपदेश जहाज बना के, डुबदा जगत बचा लिया।

वेदों का डंका

भजन नं १६६

१ वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
हर जगह ओ३म् का झंडा फिर, फहरा दिया ऋषिदयानन्दने

२ अज्ञान अविद्या की हरसू, घनघोर घटायें छाई थीं ।
कर नष्ट उन्हें जग में प्रकाश फैलादिया ऋषि दयानन्द ने ॥

३ सरपर तूफान बला का था, नज़रों से दूर किनारा था ।
बनकर मल्लाह किनारे पर, पहुंचा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥

४ घुस गये लुटेरे घर में थे, सब माल लूट कर ले जाते ।
सद्गुरु हाथ सोतों को पकड़ बिठलादिया ऋषिदयानन्दने

५ मक्कारी दग़ा फरेबों से, वह माल मुफ्त खा जाते थे ।
सबपोल खोलकर दिल उनका दहलादिया ऋषि दयानन्दने

६ उड़ गये होश मतवालों के मैदान छोड़ कर दफा हुए ।
हथ्यार तर्क का निकाल जब चमका दिया ऋषि दयानन्दने

७ कब्रों में सरको पटकते थे, कई दैरो हरम में भटकते थे ।
दे ज्ञान उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखा दिया ऋषि दयानन्द ने

८ करते थे हमेशा चीख़ चीख़ तोहीन वेदे अकदस की जा ।
सर उनका वेदों के आगेझुकवादिया ऋषि दयानन्द ने ॥

९ सब छोड़ चुके थे धर्म कर्म गौरव गुमान ऋषि मुनियों का
फिर संध्या हवन और यज्ञ करना सिखला दिया ऋषि द०ने

१० विद्यालय गुरुकुल खुलवाए कायम हर जगह समाज किए।
आदर्श पुरातन शिक्षा का, बतला दिया ऋषि दयानन्द ने ॥

११ बलिदान किया बलि वेदी पर जीवन प्रकाश हंसते हंसते ।
सच्चे राहबर बनकर सबको चेता दिया ऋषि दयानन्दने ॥

भजन नं० १६७

देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है।
भारत निवासियों को बेदार कर गया है॥
बेहोश बे खबर हम सोये हुए पड़े थे।
सब को जगा २ कर हुशयार कर गया है॥
भारत की दुर्दशा में कोई कसर नहीं थी।
करके समाजें क़ायम शुभ कार्य कर गया है॥
वेदों का नाम तक भी जाने नहीं था कोई।
वह हर जगह पर उनका प्रचार कर गया है॥
वेदों का भाष्य करके विद्या व योग बल से।
सच्चे धर्म के ज़ाहिर असरार कर गया है॥
संस्कृत वा मातृ-भाषा जो हो चुकी थी मुर्दा।
इस को पुनः जिला कर जानदार कर गया है॥
हिन्दू गुलाम काफ़िर जो हो गये थे आर्य।
आर्य बना फिर उनको सरदार कर गया है॥

भजन नं० १६८

कीन्हा उपकार दयानन्द स्वामी ने।
वेदों का भाष्य बनाया, सीधा मार्ग बतलाया।
जहाँ मत खड़े हज़ार॥ दया० १॥
कई विद्यालय बनाये, कई दीनालय खुलवाये।
किया विद्या का प्रचार॥ दया० २॥
जाती अभिमान मिटाया, वर्णाश्रम ध्यान दिखाया।
उठे सोते नर नार॥ दया० ३॥

ऋषियों के यज्ञ बताये, हमको करने सिखलाये।
दूर हुआ वायु विकार ॥ दया० ४ ॥
रिपु भी उपमा करते हैं, अब अर्थ लोट धरते हैं।
खूब कर रहे विचार ॥ दया० ५ ॥
गोपी इन्द्रिय बतलावें, चारों का हरन छिपावें।
कृष्ण तो चोर न जार ॥ दया० ६ ॥
है धन्यवाद ऋषि तुमको, गये प्राणदान दे हमको।
मोक्ष के पहुँचे द्वार ॥ दया० ७ ॥

भजन नं० १६९

धन २ दयानन्द महाराज, हमें ग़फ़लत से जगाने वाले।
करके निद्रा से हुशियार, कीन्हा वेदों का विस्तार।
दीन्ही बिगड़ी दशा सुधार, ऐ सत्यार्थ बनाने वाले ॥ धन ०१॥
करके सत्यासत्य की छान, मारा पाखण्डी का मान !
किये वेदों से अलग पुरान, ऐ अज्ञान मिटाने वाले ॥ धन० २ ॥
होकर वेदों पर आरूड़, खोले शब्द अर्थ सब गूढ़।
खाली फिरन लगे बहुमूढ़, मुफ्ती माल उड़ाने वाले ॥भन०३॥
भारत नैया थी मँझधार, तुमने आन लगाई पार।
ऐसी कीन्हीं दया अपार, खेवा पार लगाने वाले ॥ धन० ४ ॥

भजन नं० १७०

पराई आग में जलना मरीज़ों की दवा होदा।
कोई सीखे दयानन्द से धर्म पर जान फिदा होना॥
भंवर में जब कि किश्ती हो, नज़र में मौत बस्ती हो।
लगाना वेद का चप्पू न अन्देशा ज़रा होना ॥

शमा सा आज जल के ग़ैर को प्रकाश दे देना।
मिटा देना निशां अपना, धर्म पर यों फ़िदा होना
कभी खंजर कभी नेज़े कभी पत्थर की बौछारें।
न इनको दिल में लाना और फिर भी रहनुमा होना॥
दयानन्द की तरह कुर्बान होना सत्य के मार्ग पर।
कठिनता से नहीं ख़ाली "सुदर्शन" बावफ़ा होना॥



आर्य्य समाज

भजन नं० १७१

आर्य समाज का शिकवा

मैं तड़पूं कब तलक तेरे अलम में नीम जां होकर।
मेरे जख़्मों का मरहम तुमसे जो पे मेहरबां होकर॥
हवन सन्ध्या का जो इकरार था सबने भुलाया है।
तुम्हारी अहद शिकनी हैफ़ पाबन्दे ज़ुबां होकर॥
प्रण क्या २ किये जब आप सभासद बनने आये थे।
कोई दे फ़ैसला मेरे तुम्हारे दरम्यां हो कर॥
तुम्हारी ग़फ़लतों ने आह मुझको मार डाला है।
नहीं तुम चारा करते हो महरमे दरदे निहां होकर॥
कहां तक चीखूं चिलाऊं नहीं सुनता कोई मेरी।
पड़ी ख़ामोश हूं अब बेदहन और बेजबां होकर॥
तुम्हारी शेखियां लफ़ज़ी रहीं खुद को मिटाने की।
मेरी धुन में दिखाया किसने बे नामों निशां होकर॥
कहां है 'ओं' का झण्डा जिसे तुम कहते फिरते थे।
कि जग में यह रहेगा फ़तहो नुसरत का निशां होकर॥
तुम्हें पेशोतरव ने बाज़ रखा काम करने से।

गलत है यह कि बैठे हो ज़ईफ़ो नातवां होकर ॥
न रखा ध्यान तुमने यम नियम का कुछ कबोले में ।
न कोई संस्कार अब तक किया था खानमां होकर ॥
मेरे पैरो बने थे तुम मुझे बदनाम करने को ।
फंसे खुदगर्ज़ियों में हो निगाहबाने जहां हो कर ॥
करूं किस किस का शिकवा आर्यों तुमने मुझे अबतक ।
सताया बच्चे होकर, बूढे होकर नौजवान हो कर ॥

भजन नं० १७२

चेतावनी

टेक—जगा दे अब ऐसमाज उनको पड़े, जो गफ़लत में सो रहे हैं ।
धर्म कर्म से हुये हैं बेमुख अकारथ आयु को खो रहे हैं ॥
भटकते फिरते हैं जो बिचारे, फिरे हैं दर दर पै मारे मारे ।
लगादे उनको भी अब किनारे, निराश सब से जो हो रहे हैं ॥
कर ऐसा काम अब ब्रह्मज्ञानी, फैला दे दुनियां में वेद बानी ।
डाल दे उनमें भी ज़िन्दगानी, जो तेरे दुश्मन से हो रहे हैं ॥
आस करे है तेरी ज़माना किसी को कुछ न करना कराना ।
तुझे ही आखिर इन्हें उठाना, धर्म के प्यासे जो हो रहे हैं ॥
लाखों करोड़ों हमारे भाई, जो आस तकते फिरें पराई ।
होवेगा उनका तूही सहाई, धर्म जो अपना डुबो रहे हैं ॥
जहालत अब दुनियां से मिटादे, वैदिक धर्म का सिक्का बिठादे ।
मुर्दा दिलों को फिर से उठा दे, तेरे मुखालिफ जो हो रहे हैं ॥
ज़माना हो जायगा तेरा शैदा, गर ऐसी आत्मायें होवें पैदा ।

भूलगया है तू अपना वायदा, तुझे जताते भी गो रहे हैं ॥
किया अविद्या ने ऐसा डेरा, भारतवर्ष में मचा अन्धेरा ।
चिल्लाया "यशवंतसिंह" वहु तेरा, इक इक के रस्ते दो रहे हैं ॥

भजन नं० १७३

आर्य समाज ने क्या किया

मुझे मेरे प्यारे समाज ने दरे गंज वेद बता दिया ।
मैं पड़ा भटकता था दर बदर, मुझे राहे रास्त दिखा दिया ॥
न था आखरत का मुझे ध्यान, मेरी उमर गुजरे थी रायेगां ।
था ख्याले धर्म मुझे कहां, मुझे एक उस ने सिखा दिया ॥
न ज़मीं व ज़र की है चाह मुझे, मेरी अब निगाह बुलन्द है ।
मैं पड़ा था लौटता खाक पर, मुझे आसमां पर बिठा दिया ॥
कभी बहरे इश्के बुतां में मैं, बहा जा रहा था खबर न थी ।
तेरे सदके ऐ मरे मेहरबां, मुझे तू ने आके बचा दिय ॥
मैं फिदा था गैरों की चाल पर, न थी अपने हाल पै कुछ नज़र ।
न रही थी मिटने में कुछ कसर मुझे आके उसने चिता दिया ॥
वह जो सारे इल्मों की जान थी, वह जो सब ज़बानों की कानथी
वह जो देवबाणी ज़बान थी, मुझे उसने पढ़ना सिखा दिया ॥
मैं अली मुहम्मद मुस्तफा, के मुदाम नाम पै था फ़िदा ।
न था अपने ऋषियों से आशना, मुझे उसने उनका पिता दिया ।
करो शुक्र दिलसे ऋषिका तुम, दिया जिसने "प्रेम" जगा तुम्हें।
कि पिला के अमृत वेद का तुम्हें जिसने फिर से जिला दिया ॥

भजन नं० १७४

वेदों पर क्या २ गुज़री

बतलादे प्यारे वेदो क्या २ सितम उठाया ।
बेकस समझ के तुझ को किस किस ने है सताया ॥
अपना भी होके हाय फेरी छुरी गले पर ।
यह है अनर्थ कैसा गो मांस तक मिलाया ॥
खुद पढ़ सका ज़रा न, मतलब समझ सका न ।
गैरों से सुन सुना कर इल्ज़ाम था लगाया ॥
यह ढीठता है कैसी, ईश्वर के ज्ञान को भी ।
दहकानियों के गीतों का मजमुआ बताया ॥
सुन २ तुम्हारे संकट आता है रोना हमको ।
सेवक तुम्हारे मारे तुम्हें आग में जलाया ॥
पानी गरम कराके मुंह हाथ पैर धोये ।
यह ज़ुल्म सब रवा था दिल में जो उसके आया ॥
शाबाश इतने ताओ खाकर भी निकले कुन्दन ।
तब ही तो आर्यों ने दिल में तुम्हें बिठाया ॥
रोवो न इस कदर तुम तड़पो न बिलबलाओ ।
ईश्वर ने तुम्हारे कारण एक महर्षि बिठाया ॥
लोगों ने दोष तुम पर जो जो लगा दिए थे ।
सारे मिटा के सिक्का दुनियां में फिर जमाया ॥
वेदों का कोई निन्दक आया जो इसके सनमुख ।
प्रमाण और युक्ति से आस्तिक उसे बनाया ॥
उपदेश से उसी के भारत खड़ा हुआ है ।
रक्षा का चंद्र ! बीड़ा हाथों में है उठाया ॥

भजन नं० १७५
आर्य समाज के काम

टेक–है केवल आर्य समाज सब की भलाई चाहने वाला ।
होवे जहां तुम्हारी हान वहां पर होता यह बलिदान ॥
अर्पण करके अपने प्राण तुम्हारा धर्म बचाने वाला ।
जहां पर तुम्हारे लाखों भाई, बनते मुसलमां ईसाई ॥
आखिर बनेगा यही सहाई, उनको गले लगाने वाला ।
देश में लाखों विधवा नार, निस दिन करतीं हाहाकार ।
फैला हुआ था अत्याचार, उनका यही बना रखवाला ।
जब उजड़ा था बीकानेर, मचा था चारों तरफ अन्धेर ।
वहां पर पहुंचा थो यही शेर, भूखे मरतों को बचाने वाला
जब पाटा धरती का सीना, वहां इसी ने पुरुषार्थ कीना ।
जहां गिरे तुम्हारा पसीना, वहां पर खून बहाने वाला ॥
सच पूछो तो आर्य समाज, रखता हिन्दू धर्म की लाज ।
जिसको बुरा कहो तुम आज, वही था तुम्हें जगाने वाला
जो तुम चाहते हो कल्याण, इसको अर्पण करदो प्राण ।
वैदिक धर्म में आवे जान, बिनती करे टुहाने वाला ॥

भजन नं० १७६
वैदिक धर्म की महिमा

सदा रहते हैं आनन्द वैदिक धर्म पै चलने वाले ॥
दुश्मन होवें चाहे हज़ार, ज़माना हो दर पै आज़ार ।
दुनियां बुरा कहे सौ बार, चाहे पड़ जायें जान के लाले ॥

वैदिक धर्म पर हम कुरबान, इसी का है यह जिस्मोजान।
लिख लो हज़ार दफ़ा बयान, हम हैं वेदों के मतवाले॥
जिनका ईश्वर पर विश्वास, रखते नहीं किसी की आस।
वह नहीं होते कभी निराश, जिसका दिल चाहे अज़माले॥
सुन लो बात मेरी इक मीत, न छोड़ो सत्य धर्म को प्रीति।
आख़िर सत्य धर्म की जीत, चुगलीखारों के मुंह काले॥
उठो भारत के नर नार, बांध कमर होवो तय्यार।
करो तुम वेदों का प्रचार, तुमको कौन हटाने वाले॥
मिलते रहें कष्ट अत्यन्त, रहना दृढ़ प्राण पर्यन्त।
करले प्रण यही "यशवंत", निस दिन ईश्वर के गुणगाले॥

भजन नं० १७७

हिंदू बच्चों का गीत

वेदों से आज तक है कायम निशां हमारे।
हम मोहतकिद हैं इनके यह पासबां हमारे॥
सौंपे हैं ईश्वर ने अपने यही खज़ाने।
रोज़े अज़ल से यह हैं आरामे जान हमारे॥
कुछ जानते हमीं हैं जो कुछ लिखा है इन में।
हम राज़दां हैं इन के यह राजदां हमारे॥
मखज़न हैं कुदरतों के मनबे हैं हिकमतों के।
रहते हैं रोज़ो शब यह दरया रवां हमारे॥
लज़्ज़त सरूर की वह इनकी ऋचाओं में है।
दायम हैं जिससे ताज़ा पीरो जवान हमारे॥
जानों से भी ज़्यादा इनको अज़ीज़ रखा।

तेगों से हो रहे थे जब इमतहान हमारे ॥
गौतम कणाद अर्जुन राम और कृष्ण नानक।
इस अमर में रहे हैं सब हमज़बां हमारे ॥
वह सर जमीं तिबत छत है जो इक जहां की।
सदियों बने रहे हैं इस पर मकां हमारे ॥
कह दो मुखालफों से किस वहम में पड़े हो।
हरगिज़ नहीं मिटेंगे नामो निशां हमारे ॥
करते हैं खोशा चीनी अबतक हमारी चीनी।
यूनां के रहने वाले हैं मदाखवां हमारे ॥
बहदानियत में हमने क्या कुछ दिखाये जलवे।
हैं राज़ यह अभी तक सब पर अयां हमारे ॥
दुनियां को आके हमने जन्नत बना दिया है।
ए काश्मीर तुझ में थे आशयां हमारे।
अपने हशम को लेकिन ग़फ़लत से खो दिया है।
इबरत से कोई देखो खाबे गरां हमारे ॥
"उल्फत" की यह दुआ है ऐ दो जहां के मालिक।
दुनियां में हर जगह हों कायम निशां हमारे ॥

भजन नं० १७८

वेद पढ़ो

वेद पठन क्यों छोड़ दिया, तूने ॥ टेक ॥
हिंसा न छोड़ी चोरी न छोड़ी।
होम करन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० १ ॥
मोह न छोड़ा मान न छोड़ा।
इन्द्रिय दमन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद २ ॥

ठगी न छोड़ो धोका न छोड़ा ।
शास्त्रमनन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ३॥
धन के गर्व में फिरे मस्ताना ।
शुद्ध चलन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ४ ॥
"पाठक" मिथ्या तजी न वासना ।
ईश भजन क्यों छोड़ दियरे ॥ वेद० ५ ॥

भजन नं० १७९

मन तरसे।

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तर से ।
अंगों की सड़कें उप अंगों की रोसें, उपनिषदों की क्यारी में ।
गुल बरसे ॥मेरा ० १ ॥
कर्म उपासना ज्ञान ध्यान जहां, वहां आने को बिनती करूं हरिसे
यज्ञ हवन से हो पवन सुगंधित, सींचें जइयो भक्ति के जल से
पुराणोंने कांटों की बाढ़ लगाई, मैं जाने न पाऊं इन्हीं के डर से ॥

भजन नं० १८०

ऋषि संतान ईसाई मुसलमां होते जाते हैं ।
यह हिन्दू क़ौम के महशर के सामां होते जाते हैं ॥१॥
छुरी गर्दन पै चलती है मगर तुम उफ़ नहीं करते ।
हज़ारों चश्म गिरियां सीने गिरियां होते जाते हैं ॥ २ ॥
तेरी ग़फ़लत में लाखों बे ज़बां को क़त्ल कर डाला ।
कि ख़िरमन पेश बर्के आह से सोज़ां होते जाते हैं ॥ ३ ॥
गौ रक्षा का दम भरते थे उनको आज देखो तो ।
है खंजर हाथ में जल्लाद हैवां होते जाते हैं ॥ ४ ॥

बुझाओ प्यास गंगा जल से इन तृष्णा लबों की तुम ।
जो पी के आबे ज़मज़म दीना ईमां खोते जाते हैं ॥ ५ ॥
जो गंगादास जमनादास कल थे आज देखो तो ।
फ़िदा वह नकद दिल से हूरो गिल्मां होते जाते हैं ॥ ६ ॥
कहां वह राम और लक्ष्मण कहां वह भीष्म और अर्जुन ।
तेरी कम हिम्मती से अब पशेमां होते जाते हैं ॥ ७ ॥
सफ़ह हस्ती से सब नामों निशां मिट जायगा तेरा ।
जो गुमराह होते जाते हैं तेरी जां को रोते जाते हैं ॥ ८ ॥
मिलाया खाक में ऋषियों की और वीरों की इज्ज़त को ।
तेरी गफ़लत से गीदड़ शेर गुरां होते जाते हैं ॥ ९ ॥
ना मिलाया शुद्ध दिल से शुद्ध करके लख्ते जिगरों को ।
तेरे नूरे नज़र नज़रों में पिन्हां होते जाते हैं ॥ १० ।
उठाओ ओ३म् का झंडा चलो मक्के मदीने को ।
मुसलमानों के बस अब होश परां होते जाते हैं ॥ ११ ॥
शजर शुद्धी को सींचा खूने शीरीं से मुसाफिर ने ।
कि जिस के ज़ेर साया लाखों शादां होते जाते है ॥ १२ ॥

भजन नं० १८१

लहराती है खेती दयानन्द की —टेक ।
वैदिक धर्म का बीज नमूदार हो गया ।
गुरुकुल सा बियाबान भी गुलज़ार हो गया ॥ १ ॥
प्रचार करते आर्य करके गदागिरी ।
करते हैं अहले कौम का ये मुफ्त चाकरी ॥ २ ॥
छुप छुप के गुल चुराते, थे ईसाई मुसलमां ।
अब आर्यों की फौज बनी उनकी पासबां ॥ ३ ॥

जो चीख़ चीख़ करते थे वेदों की बुराई ।
देखो उन्होंने डाढ़ी मुंडा चोटी रखाई ॥ ४ ॥
"चन्द्र" जो गुरुकुल से ब्रह्मचारी आयेंगे ।
लन्दन में जाके आर्य मंदिर बनायेंगे ॥ ५ ॥

भजन नं० १८२

बजाये जाओ जी दयानन्द जी की आज्ञा—टेक ।
देखो विचारो बैठो ना आंखों को मोच के ।
अपने लहू से जिसको गये स्वामी सींच के ॥
इसमें थोड़ा सा जल तो बहाये जाओ जी ॥ १ ॥
गुरुदत्त इसकी रक्षा में ही जान दे गये ।
कुर्बां होके लेखराम प्राण दे गये ॥
तुम भी अपने प्रण को निभाये जाओ जी ॥ २ ॥
फल मीठे मीठे लग रहे, शुद्धी की शाख पर ।
कई भाई इसे खाके जिसे हो गये अमर ॥
सारी दुनियां को यह फल चखाये जाओ जी ॥ ३ ॥
हिम्मत से घड़ी आर्यों की ऐसी आयेगी ।
यह शाख फूट फूट के मक्के को जायगी ॥
ज़रा हिम्मत को अपने बढ़ाये जावोजी ॥ ४ ॥
'चन्द्र' कहे तोफ़ा यह फल सबको खिलाओ ।
गौ कन्या दीन अनाथ की आहों से बचाओ ॥
इनके दुखड़े का कूढ़ा हटाये जाओ जी ॥ ५ ॥

स्त्री शिक्षा

भजन नं० १८३

टेक—तुम भारतनारी जागोरी । रैन गई प्रभात भई ॥ तुम०॥

विद्या का प्रकाश हुआ अन्धकार को त्यागोरी ॥ तुम० ॥

जगदीश्वर का ध्यान धरो,

तुम आलस को दूर भगाओरी ॥ तुम० ॥

प्यारी बहिनों जो सुख चाहो,

सत्पथ मारग आओरी ॥ तुम० ॥

भजन नं० १८४

टेक—भोर भयो पक्षीगण बोल उठे, उठ अब प्रभुगुणगाओरी

लखि प्रभात प्रकृति की शोभा'

वार वार हरषाओरी ॥ उठ० ॥

प्रभु की दया सुमिर निज तन में,

सरलभाव उपजाओरी ॥ उठ० ॥

हो कृतज्ञ प्रेम में उनके,

नैनन नीर बहाओरी ॥ उठ० ॥

ब्रह्मरूप सागर में मन को,

बारम्बार डुबाओरी ॥ उठ० ॥

निर्मल शीतल लहरें ले ले,

आत्म ताप बुझाओरी ॥ उठ० ॥

भजन नं० १८५

क्यों पड़ी है स्वप्न में, भई भोर निद्रा त्यागरी।
सास नन्द देत निहारे, जागरी तू जागरी ॥ १ ॥
हे पतित ! अधम बुद्धे सो गई आलस भरी ॥ २ ॥
स्नान कर उठ अम्बर कर शृङ्गार लगा सुगन्ध।
ज्यों पिय रीझे रिझाले, मन से कर अनुरागरी ॥ ३ ॥
सफल यौवन कर ले मुग्ध, यह जनम दुर्लभ है।
पश्चाताप न रहे "अमींचन्द" चार दिवस का फागरी ॥

भजन नं० १८६

टेक—शरण प्रभु की आओरी, यही समय है प्यारी।

मक्र फरेब और झूठ को त्यागो,

सत्य में चित्त को लाओरी ॥ यही० ॥

उदय हुआ ओंकार का भानु

आओ दर्शन पाओरी ॥ यही० ॥

प्रभु की भक्ति बिना नहीं मुक्ति,

दृढ़ विश्वास जमाओ री ॥ यही० ॥

मनुष्य जन्म अमोलक है यह,

वृथा न इसको गंवाओ री ॥ यही० ॥

कर लो नाम ईश का सुमिरन,
अन्त को न पछताओरी ॥ यही० ॥
धन्यवाद जो सब को पाले,
मत उसको बिसराओरी ॥ यही० ॥
छोटी बड़ी सब मिल कर खुशी से,
यश ईश्वर के गाओरी ॥ यही० ॥

भजन नं० १८७

टेक—शरण पड़ी हूं मैं तेरी दयामय,
शरण पड़ी हूं मैं तेरी ।
जगत सुखों में फंस कर स्वामी,
तुझ से लिया चित्त फेरी ॥ दयामय० ॥
पाप ताप ने दग्ध किया मन,
दुर्मति ने लिया घेरी ॥ दयामय ॥
बही जात हूं भवसागर में,
पकड़ लेओ भुज मेरी ॥ दयामय० ॥
अनेक कुकर्म गिनो मत मेरे,
क्षमा दृष्टि दियो फेरी ॥ दयामय० ॥
सत्संग ज्ञान मधुर सुख अपना,
करो प्रकाश इक बेरी ॥ दयामय० ॥
पाप मलीन हृदय में मेरे,
ज्योति प्रकाशे तेरी ॥ दयामय० ॥
प्रेम तरंग उठे मन अन्दर,
नाथ विनय सुनो मेरी ॥ दयामय० ॥

भजन नं० १८८

एक पतिब्रत धर्म निबाह लो, जो चाहो सुख से रहना।
कीजो नित्य पति की सेवा, दोनों लोकन में सुख देवा।
सब से उत्तम है यह मेवा, बड़ी रुची से खाय लो।
नहीं पड़े तुम्हें कुछ देना ॥ जो० १ ॥
सास ससुर और नंद जिठानी, चाहे भाभी हो चाहे देवरानी।
उन से कटु न बोलो बानी, सब से प्रीति बढ़ाय लो।
जो कहें करो वही कहना ॥ जो० २ ॥
झूठे सब श्रृंगार छोड़िये, राग ईर्षा मन से तोड़िये।
विद्या से निज नाता जोड़िये, सब श्रृंगार बनाय लो।
है सब से उत्तम गहना ॥ जो० ३ ॥
रहो पति की आज्ञाकारी, मिले तुम्हें सुख सम्पति सारी।
जिससे होवे गति तुम्हारी, मन चाहा फल पाय लो।
कहे शर्म्मा कुछ शक है ना ॥ जो० ४ ॥

गजल नं० १८९

उठो बहनो पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है।
बिना विद्या के पढ़ने से, बुरी हालत तुम्हारी है ॥
तुम्हारा नाम शूद्रों में, हुआ शामिल है ऐ बहनो।
बनी हैं पैर की जूती वही जो मूर्ख नारी है ॥
तुम्हारा मान और इज्ज़त नहीं अब कुछ रहा बाकी।
सबब इसका यही है री अविद्या तुमको प्यारी है ॥
तुम्हीं को कहते थे लक्ष्मी, तुम्हारा ही नाम था देवी।
तुम्हारे ही मूर्ख होने से हुआ भारत दुखारी है ॥

यही वासुदेव की बिनती, न जब तक तुम पढ़ो विद्या।
तभी तक यह बुरी हालत हमारी और तुम्हारी है॥

दादरा नं० १९०

पहनो पहनो री सुहागिन ज्ञान गजरा ।
दया धर्म की ओढ़ो चुनरिया,
शील का नेत्रों में डालो कजरा ।
लाज करो तुम पर पुरुषों से,
अपने पति का देखो मुखड़ा ॥
सास ससुर की सेवा कीजो,
अपने पति से न कीजो झगड़ा ।
कहे अनाथ बिन विद्यारी बहनो,
सहती हो तुम अति दुखड़ा ॥

भजन नं० १९१

तुम अपना धर्म विचार लो क्यों फिरती मारी मारी ॥
तीर्थ देवता और न दूजा केवल करो पति की पूजा ।
जगन्नाथ का जाना सूझा कहीं पहुंची हरिद्वार लो ।
क्या यहां ईश नहीं प्यारी ॥ क्यों० १ ॥
पति के संग फिरे जब फेरे, क्या बहिन थे करार तेरे ।
आज्ञा में रहूं स्वामी तेरी, याद रहे दिन चार लो ॥
अब भूल गई हो सारी ॥ क्यों० २ ॥
स्याने पण्डा तुम्हें बतेरे, गृह वाले ठग मिले घनेरे ।
तुम उनके नहीं जाओ नेरे, अपनी दशा निहार लो ॥
कहां बुद्धि विसारी ॥ क्यों० ३ ॥

आप पढ़ो सन्तान पढ़ाओ, वृद्धों की सेवा चित लाओ।
कहे पाठक भ्रम से छुट जाओ, घर के काम सँवार लो ।
यह मानो सीख हमारी ॥ क्यों० ४ ॥

भजन नं० १६२

टेक—सीता की ओर निहार लो जो थी सतवन्ती नारी।
गई साथ पति के वह बनको, लात मार सुखसम्पति धनको।
कष्ट दिया अति अपने तन को, मन में ज़रा विचार लो
सब छोड़े महल अटारी, जो थी सतवन्ती नारी ॥ १ ॥
रहती थी वह रंग महलमें, खड़ी टहलनी उसकी टहलमें।
नंगे पैरों गई पति की गैल में, ऐसा व्रत तुम धार लो।
जो धारा जनक दुलारी। जो थी सतवन्ती नारी ॥ २ ॥
हुई कान्ति दूने मुखकी, नहीं परवाह करी कुछ दुख की।
सभी लालसा अपने सुख की, दई पति के ऊपर वार लो।
रही सदा वह आज्ञाकारी। जो थी सतवन्ती नारी ॥ ३ ॥
पति सेवा में हित चित्त दीजो, कभी भंग आज्ञा न कीजो।
मेरा कहा मान अब लीजो, यह जीवन का सार लो।
कहे बहनो खड़ा मुरारी। जो थी सतवन्ती नारी ॥ ४ ॥

भजन नं० १६३

टेक—सँभल सँभल पग धारियो री बहनो देश बिगाने जाना होगा। सास बिगानी ननद बिगानी ससुरा कंत बिगाना होगा ॥ स० ॥ ना बावल ना वीर लाडला, किस को रोय सुनाना होगा ॥ स० ॥ एक जान पर दुःख हजारों, सो सब रोय बहाना होगा ॥ स० ॥ सौ सौ मार और झिड़की खाकर, फिर भी शीश नवाना होगा ॥ स० ॥ वहां पर कोई न देगा सहारा, स्त्री धर्म निभाना होगा ॥

भजन नं० १६४

टेक—बहनो री कर लो सच्चा शृंगार ।

जिस शृंगार से प्रभु मिल जावे, सब के प्राण अधार ।

जिस भूषण में होवे न दूषण, कर लो उसी से प्यार, बहनो०१॥

सच्चा भूषण जो है विद्या, लूटे न चोर चकार ।

ना वह टूटे ना वह घिसती, जिसका लगे नहीं भार, बहनो० २

पति के प्रेम की माला पहनो, सेवा समझ लो हार ।

धर्म की चारी चूड़ी समझ लो, आरसी तत्व विचार बहनो० ३

पति-आज्ञा को नथ इक समझो, भक्ति को कंकण जान ।

ब्याह से प्रथम हँसली सो हसलो,शीलको हँसली मान बहनो०४

दया धर्म दो झुमके बनालो, टीका परउपकार ।

लौंग बुलाक है घर की सेवा, गहना यह कीमतदार, बहनो० ५

होय बिछोहा ना सन्ध्या का, यह बिछुआ दरकार ।

विद्या धर्म में कीर्ति होवे, झांझन की झनकार, बहनो० ६ ॥

बन्दी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का सुरमा डार ।

मुकुन्द कहे सब सुख से रहेगी, मान करे संसार, बहनो० ७ ॥

भजन नं० १६५

टेक—प्रभु के संग में क्यों न गयी री ।

प्रभु संग जाती सोना बन आती, अब माटी के मोल भई री ।

जो प्रभु हैं मेरे प्राण अधारे, तिन्ह की क्यों न मैं शरण गई री ।

प्राण के प्राणको छोड़ सखीरी,मैं माया के जाल में उलज रहीरी

सार को छोड़ असार से लिपटी,धृग् धृग् मैं मति मन्द भईरी ।

प्रभु मेरे स्वामी मैं दासी प्रभु की,स्वामी न भूलैं मैं भूल रहीरी ।

भजन नं० १६६

बिना पति सूना सब संसार ॥ टेक ॥

पति ही प्राण पति ही जग जीवन, पति ही है भरतार ।

पति ही से पत है निज तन की, पति पत राखन हार॥
बिना पति सूना संसार॥
जब तक पति है तब तक पत है, बिना पत बिपत हज़ार।
जाको प्रेम स्वपति चरणों में, धन्य धन्य वह नार।
बिना पति सूना संसार॥
एक पति व्रत राखे जो नारी, तो सब बेकार।
बिना पतिव्रत राखे नारी के, जीवन पर धिक्कार॥
बिना पति सूना सब संसार॥

भजन नं० १९७

पति प्यारे की सेवा क्यों भुलाऊँ।
बढ़ाकर प्रीति प्रीतम को रिझाऊं॥
सखी उनसे मैं सुन्दर गुन को पाऊं।
सुहागिन भाग्यवन्ती मैं कहाऊँ॥
करूं सेवा कि उनसे सुख हो।
कि सुख उनके से मुझको भी न दुःख हो॥
हितु परिवार और संसार सारा।
खुशी हो मुझसे ईश्वर दे सहारा॥
सभी सुख से हों फिर खुश जिन्दगानी।
जो सांची प्रीति प्रीतम मन समानी॥
पावे पद प्रेम से शोभा है जानी।
यह सून्दर रूप बाबू मीठी बानी॥

भजन नं १९८

बहनों तुम्हारा असली पर्दा तो यह नहीं है।
करना जहां हो पर्दा करती कोई नहीं है॥
सासोससुर की सेवा करना था फर्ज पहिला।

जिनके मुक़ाबिले में बोले कोई नहीं है ॥
स्याने चमार भंगी चाहे हो ज़ात कोई ।
करने में बात उनसे बिल्कुल उज़र नहीं है ॥
हैं ज्येष्ठ और पिता जो इनसे भी तख्त परदा ।
आवाज़ दें खड़े वह उज़र तो कुछ नहीं है ॥
चाहे ससुर का ताऊ हो जेष्ठ का बाबा ।
मेले में आप जावें पर्वाह कुछ नहीं है ॥
इससे झूठा पर्दा छोड़ो री माता भगनी ।
कहे रामचन्द्र इससे बिल्कुल वक़्त नहीं है ॥

भजन नं० १९९

करसां मैं हार श्रृङ्गार, जिस बिच पिया मेरे बस आवे ।
प्राण आधार नी सैय्यो०

जिस भूषण विच होवे न दूषण सो मेरे दरकार । नी०
न ओहटुट्टे न खिस जाए न लेवे चोर चकार । नी०
भट्ट पवे ओ सोना चांदी जो लगे कन्नानूं भार । नी०
गजरयां बंगां थीं हुण संगां कच्चा कच उतार । नी०
अन्त मुलम्मा है गहणा निकम्मा एह सौदा सुनियार । नी०
न धन रहसी न धन बालियां एह जोबन दिन चार । नी०
प्रेमदी माला ओडम दी नामा, पाओ नो गल बिच हार । नी०
दान अनन्त धर्मदा धागा, धुरमुडा धर्म प्रचार । नी०
चरचा चूड़ा करनी कंगन, आरसी तत्व विचार । नी०
दयादी दाओणी झुमके क्षमा वाले, टिका परउपकार । नी०
शुभ लक्षण दी लच्छी अच्छी बांकां प्यार अप्यार । नी०
पावांगी मैं छल्ले मैं निरछल्ले, रखसां पग सुधार । नी०
सुन न सके मेरी सौकन वैरण, झांजर दी छनकार । नी०

लौंग बुलाक है नथ खावंद हथ, चुटकी दा चमकार । नी०
चौक चौंप सच्चा कल भक्ति, गहणा है कीमतदार । नी०
बिन्दी बंदना करान स्वामी की, ज्ञान कजलाधार । नी०
दर्शन पावां खुशियां मनावां, तन मन देवां वार । नी०
'अमीर' प्रीतम नू वश करसां, देसी पल विच तार । नी०

भजन नं० २००

वेला सतियां दा तुसी विसर गइयां ।
नल दी खातिर दमयन्ती ने लाखों कष्ट उठाये,
विच जंगलां सही मुसीवत, दशा सुनी न जाय,
ओह सुमत्या दा, तुसी विसर गइयां ।
कपट दे बेष बना के रावण सीत लई चुराय,
सत्य छलन नू उस सती दे कीते बहुत उपाय,
हाल यह सतियां दा तुसो विसर गइयां ।
घर दे करने काम हजारों जरा नहीं घबराना,
शिखर दोपहरे भत्ता लेकर बिच खेत दे जाना,
यह हाल जट्टियां दा तुसी विसर गइयां ।
पति दे नाल लड़ाई झगड़ा उल्टा तन दिया ताना,
दौलत विच नरक दे डोलन होवेगा मुंह काला,
ओह कुपत्तियां दा, तुसी बिसर गइयां ।

———

उपदेश ।

भजन नं० २०१

शरण प्रभु की आओरे यही समा है प्यारे ।
मक्र फरेब और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओरे ।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओरे ।
पान करो इस अमृत रस का, उत्तम पदवी पाओरे ॥
हरि की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओरे ।
मनुष्य जन्म अमोलक है ये, वृथा न इस को गंवावोरे ॥
कर लो नाम हरि का सिमरन, अन्त को न पछताओरे ॥
धन्य दया जो सब को पाले, मत उसको बिसरावोरे ॥
छोटे बड़े सब मिल कर 'खुशी' से, यश ईश्वर के गावोरे ॥

भजन नं० २०२

ऊधो कर्मन की गति न्यारी
सब नदियां जल भर भर रहियां,
सागर किस विधि खारी ॥ ऊधो ॥
उज्ज्वल पंख दिये बगुला को,
कोयल कित गुणकारी ॥ ऊधो ॥
सुंदर नैन मृग को दीने,
बन बन फिरत उजारी ॥ ऊधो ॥

मूरख मूरख राजे कीने,
पंडित फिरत भिखारी ॥ ऊधो ॥
सूरशाम मिलने की आशा,
छिन छिन बीतत भारी ॥ ऊधो ॥

भजन नं० २०३

कोई दमका यहां है बसेरा रे।

जिस घर को तू अपना जाने, वह तो नहीं तेरा रे ॥ १ ॥
बड़े २ भूप वीर अरु योधा, कर गये यहां पर डेरा रे ॥ २ ॥
कालवली ने यक दिन सव को, आय यहां से खदेरा रे ॥ ३ ॥
विषय भोग में फंस मन मूरख, ईश्वर से मुख फेरारे ॥ ४ ॥
ना जाने कब आवे बुलावा, करले काम सवेरा रे ॥ ५ ॥
करले जीवरे धर्म कमाई क्यों आलस ने घेरा रे ॥ ६ ॥
सालिग राम ईश को जप ले, पार होय तेरा बेड़ारे ॥ ७ ॥

भजन नं० २०४

चलना है पथिक रह जाना नहीं।

क्योंसोवे गफलत में ऐसा, यहां एक पलका ठिकाना नहीं ॥१॥
तेरे संघाती कितने चले गये, तेरा यह कुछ थाना नहीं ॥ २ ॥
इस सराय में चोर बसत हैं, उनसे गांठ कटाना नहीं ॥ ३ ॥
बली पहलवां हजारों आये, चलते समय काहू जाना नहीं॥४॥
जिस मालिक ने तुझको पाला, उसको तू पहचाना नहीं ॥५॥
झख मारत फिरता दुनियां में,दीवाना नहीं कुछ दाना नहीं।६॥
यम को उत्तर दे किस मुख से, है कोई बाकी बहाना नहीं।७॥
अजहुं जाग बलदेव नींद से, फिर २ तन मन पाना नहीं ॥ ८ ॥

भजन २०५

बांधो न गठरिया अपयश की ।
है थोड़ी उमरिया दिन दश की । बांधो न० ॥
अकड़ वेग यहां कितने ही आये, गये धरणि में सबधसकी॥१॥
कोई दिन का मेहमान यहां तू, मत ले चाट विषय रस की॥२॥
नहीं कजा से बली है कज़ा की, ठसक रहेगी सब ठसकी ॥३॥
अजहुं विचार धर्म अपने को, धीरे २ उमर जात खसकी ॥४॥
यम के द्वार मार पड़े मोटी, बदी निकसि जाय नस २ की ॥५॥
भज प्रभु को बलदेव वेगि अब, न तो काल लेत तोहि भसकी ६

भजन नं० २०६

क्या तन मांजतारे आखिर माटी में मिल जाना ।
माटी ओढ़न माटी पहिरन माटी का सिरहाना ।
माटी का कलबूत बनाया जिसमें भंवर समाना ॥क्या०१ ॥
माटी कहती कुम्भकार से तू क्या रूंधे मोये ।
एक दिन ऐसा भी तो होगा, मैं रूंधूंगी तोय ॥ क्या० २ ॥
चुन चुन लकड़ी महल बनाये बन्दा कहे घर मेरा ।
नहिं घर मेरा नहिं घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा ।क्या०३॥
फाटा चोला भयो पुराना कब लग सोवे दर्ज़ी ।
दिल का मरहम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्ज़ी॥
दिल के मरहम सतगुरु मिल गये उपकारन के गर्ज़ी ।
नानक चोला अमर भयो सन्त मिलगये गर्ज़ी० ॥ ५ ॥

भजन नं० २०७

उठ जाग रे मुसाफिर किस नींद सो रहा है ।
जीवन अमूल्य प्यारे क्यों मुफ्त खो रहा है ॥

रहना ना यहां पै होगा दुनियां सराय फानी।
फंस कर बदी में प्यारे क्यों मस्त हो रहा है॥ १॥
ले ले धर्म का तोशा मत भूल ऐ दीवाने।
नेकी की खेती कर ले क्यों पाप बो रहा है॥ २॥
माता पिता व भाई होगा कोई न साथी।
क्यों मोह रूपी बोझा नाहक में ढो रहा है॥ ३।
किश्ती तेरी पुरानी हिकमत से पार करना।
ये दल अथाह जल में क्यों तू डुबो रहा है॥ ४।

भजन नं० २०८

टेक-जीना दिन चार का रे, मन मूरख फिरे मस्ताना।

मंदिर महल अटारी माड़ो, नकदी माल खज़ाना। जिस दिन कूच करेगा मूरख सब कुछ हो बेगाना॥ जीना०१॥

कौड़ी कौढ़ी माया जोड़ी, बन बैठा धनवान्। साथ न जावे फूटी कौड़ी, निकल जावें जब प्राण॥ जीना० २॥

अपने आप को बड़ा जानकर, क्यों करता अभिमान। तेरे ऐसे लाखों चले गये, तू किसका मेहमान॥ जीना० ३

राम गये और रावण चले गये, बाली और हनुमान। राजा दुर्योधन और युधिष्टिर, भीम सेन बलवान॥जीना०४

मान ले शिक्षा खन्नादास को, जो चाहे कल्यान। पर स्वारथ और नित्यकर्म कर,देदीनों को दान॥जीना०।

भजन नं० २०९

कर्म गत टारे नहीं टरी॥

मुनि बशिष्ठ से पंडित ज्ञानी सोध के लगन धरी।
सीता हरण मरण दशरथ को बन में बिपत परी॥ १॥
कहां वह कन्द कहां वह पार्थ कहां वह मृग चरी।

सीता को हर ले गया रावण स्वर्ण लंक जरी ॥ २ ॥
नीच हाथ हरिश्चन्द्र बिकाने बली पाताल धरी।
कोटी गाय नित पुन करत निरग गिरगट जूनी परी ॥ ३ ॥
पांडव आर जिनके सार्थी तिन पर विपत परी।
दुर्योधन का गर्व मिटाओ यदुकुल नाश करी ॥ ४ ॥
सति सावित्री महा सति भारी, बन की रक्षा करी।
स्वर्ग लोक गई पति के कारण जम से जाय लड़ी ॥ ५ ॥
साधु सुदामा अति संतोषी बुद्धि भूक हरी।
सूरश्याम करनी सो भरनी खोटी हो या खरी ॥ ६ ॥

भजन नं० २१०

स्टेशन जिस्म है मेरा नफस की रेल चलती है।
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फारम निकलती है ॥
नहीं आता जब तार उधर से लैनकलीयर का।
करो दिल की सफाई फिर ज़रा फुरसत न मिलती है ॥
टिकट नेकी का हो जिसके पास वह अन्दर निकलताहै।
बगैर अज़ टिकट के दुनियां, खड़ी ही हाथ मलती है ॥
बजा करती है सीटी रात यां मौत की लोगो।
बदों के वास्ते हर दम पुलिस दर पै टहलती है ॥
करे नेकी अगर ज़ायद तो पाये दर्जा भी अव्वल।
टिकट लेलो अभी कुछ देर है इंजन बदलती है ॥
गया बचपन जवानी ने बजाई दूसरी घण्टी।
चलो जल्दी नहीं तो तीसरी घण्टी उछलती है ॥
उठा असबाब अपना हक शनाशी का चढ़ो जल्दी।
नहीं तो बिछुड़ जाओगे घड़ी उसकी न टलती है ॥
खड़े रह जांएगे चुपचाप फाटक पर जो गाफिल हैं।

वह चलदी रेल है 'श्रद्धा' तो अब क्या पेश चलती है॥

भजन नं० २११

कर मन प्रभु से प्रीति।

ऐसो समय बहुरि नहिं पटे हो, जैहें अवसर बीत।
तन सुन्दर छवि देख न भूलो, यह बालू की भीत।
सुख सम्पति सुपने की बतियां, जैसे तृण पर शीत।
जाही करम परम पद पावे, सोई करम कर मीत।
शरण आए सो सबही उबारे। यह प्रभु की रीति।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चल हो भो दलजीत।

भजन नं० २१२

भज मन चरण सकल अविनाशी

जे दूं है बसे धरणी गगन विच, ते ताई सब उठ जाती।
क्या भयो तीर्थ व्रत कीन्हे, क्या लिए करवट कासी।
घर में वस्तु धरी नहिं सूझे, बन २ फिरत उदासी।
क्या भयो जो भगवा पहिने, घर २ तज हुए संन्यासी।
जोगी हुए जुगति नहीं जानी, उलट जन्म कर फांसी॥
अर्ज करूं अबला कर जोरी, हरि तुम्हारी दासी।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, काटो जम की फांसी।

भजन नं० २१३

नाम भजा सोई जीता जग में; नाम भजा सोई जीतारे।
हाथ समरणी पेट कतरनी, पढ़े भागवत गीता रे॥
हृदय शुद्ध किया नहीं बौरे, कहत सुनत दिन बीता रे।
अन देव की पूजा कीन्ही, हरि ते रहा अभीता रे।
धन जोबन तेरा यहीं रहेगा, अन्त समय चल बीता रे।

बावरया के बावर डारी, फंद जाल सब कीता रे।
कहत कबीर काल आय खैये; जैसे मृग को चीता रे।

भजन नं० २१४

जिनके हृदय हरिनाम बसे; तिन और कानाम लिया न लिया।
जिनके मन प्रभु के रंग रंगे, तिन तनका वस्त्र लिया न लिया।
जिनके घर एक सपूत जिया, तिन लाख कपूत जिया न जिया।
जिनके द्वारे पर गंग बहे, तिन कूप का नीर पिया न पिया।
जिन बात करी परमारथ की तिनहाथ से दान दिया न दिया।
तुलसी जिन चरण गहे हरि के, तिन अन्यदेव लिया न लिया।

भजन नं० २१५

अगर है जीने की तुझको ख्वाहिश।
धर्म पै तन मन निसार कर दे।
मिसाले तुख्म अपनी खोके हस्ती,
जहां को रश्के बहार करदे॥
तुझे इमारत की गर तलब है,
लुटा दे दौलत को बे कसों में।
मिसाल दरया जो पावे दे दे.
मिलेगा मत इन्तजार करदे॥
खुदी में नुकसान है सरासर,
जो फायदा है तो बे खुदी में।
खुदा से भी मांग-नाखुदा बन;
कि तेरे बेड़े को पार कर दे॥
यह माल कि है सख्त आजमाइश,

बिछा है माया का जाल हरसू।
तू वेद का पढ़के इसमे आजम,
तलिसम यह तार तार कर दे।।
मिटाया चाहे जो दर्दे दुनियां,
तो सूरते दर्द बन सरापा।
किसी के पाओं में खार टूटे,
तो तेरा सीना फिगार कर दे॥
मिसाले बुलबुल न हो जहां में,
तू गुल की मानिंद खंदाज़न हो।
खिल और बागे खिजां रसीदा,
को सर बसर ला ला ज़ार करदे।
कशा कशी जिन्दगी से बचकर,
कभी तू खिलवत नशीं हुआ कर।
है उसमें कुदरत कि बूंद पानी,
को गौहरे आबदार कर दे॥
लिबासे हस्ती को अपने नादां,
तू रंगे इश्के खुदा में रंग दे॥
मगर खबर दार दागे इसीयां,
न फिर इसे दाग दार कर दे॥
सितम सहेजा कर्म किये जा,
यही था तर्जे अमल ऋषि का।
इसी पै आमिल "प्रेम" तू हो,
कि हक तुझे काम गार कर दे॥

भजन नं० २१६

न तड़प ख्याले ज़र में, तू खुदा का यार हो जा॥
तेरा प्यार हो उसी से उसी पर निसार होजा ॥
न खजां की कुछ गमी हो, न बहार की खुशी हो ।
किसी गुल की याद में तू मेरी जान खार होजा ॥
दरबार तक रसाई अभी तक नहीं जो पाई ।
तू मिटा के अपनी हस्ती, हमातन गुबार होजा ॥
वह तारीक मैं बताऊं कि हो धर्म की अशायत ।
तू मनुष्य बन के अच्छा हमा इश्तहार होजा ॥
जो करेगा तू तवाजा तो अरूज पाही लेगा ।
दिल दागदार लेकर महे नूर बार होजा ॥
किसी काम की नहीं है, तेरी होशियारी अकमल ।
किसी मुस्तबा में जाकर अभी बादा ख्वार होजा ॥

भजन नं० २१७

मैं गिरिधर संग राती गुसीयां, मैं गिरिधर संग राती०
पंज रंग चुनरिया रंगा दी सखी मैं झुरमुट खेलन जाती ।
वा झुरमुट मेरा पिया मिलेगा, वाही को गलवा लगाती ।
सुरत निरत का दीवड़ा संजोले मन्सा की करले बाती ।
प्रेम हटी का तेल मंगाले, जग रह्यो दिन और राती ।
जिनका पिया परदेश बसत है, लिख २ भेजें पाती ।
मीरां के प्रभु हृदय बसत है न कहीं आती न जाती ।

भजन नं० २१८

मिटे जो दूसरों के वास्ते कुरबानी कर कर के ।
हयात अब्दी करें हासिल वही आलम में मर मर के ।

नहीं है जुर्म हुब्बे क़ौमियत से कौम वालो जब ।
तो क्यों इस रास्ते पर तुम कदम धरते हो डर डर के।
ख़बर लो उन यतीमों की जो भूखे पेट के मारे।
फिरें कई कुत्ते भौंकाते हज़ारअफ़सोस दर दर के।
ठिकाने बे ठिकानों को लगाओ रे रईसो तुम।
तुमहारे भाई जाले झारते फिरते हैं दर दर के ।
अगर है साकिया मंजूर कुछ ख़ातिर तुझे मेरी।
पिलादे जल्द हुब्बे क़ौमयित का जाम भर भर के ।
बंधेगा "चन्द्र" सेहरा उस के सर पर इस्लाह क़ौमी का।
करेगा इस की ख़िदमत सर हथेली पर जो धर धर के।

भजन नं० २२०

राग भैरवी **तीन ताल**

सब दिन होत न एक समान।
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह संपति मेरू समान ।
एक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर मसान ।
एक दिन दूल्हा बनत बरात बराती चहुंदिशि गड़त निशान।
एक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ।
एक दिन सीता रुदन करत है महा विपन उद्यान।
एक दिन राम चन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान।
एक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान्।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुःशासन तान।
प्रकट है पूरव की करनी तन मन सोच अजान।
सूरदास गुन कह लग वरुणों विधि के अंक प्रमान ।

भजन नं० २२१

सदा तुम करते रहो सदाचार से प्रेम ।
सदाचार है जीवन भाइयो कर्म की जान ।
सदाचार ही से फलदायक होता है सत् ज्ञान ॥
जीवन को तुम वृक्ष समझ कर सदाचार जड़ जान ।
कर्म धर्म के जल से सींचो हो जावे कल्यान ।
दुराचारी धनवान हो चाहे हो विद्वान् ।
सदाचारी कंगाल के आगे हैं वह तुच्छ समान ।
विद्या है इक रत्न अमोलक सदाचार प्रकाश ।
जहां मिलें यह दोनों मित्रो अंधकार हो नाश ॥
यही दो गुन थे ऋषी में भाइयो भारत दिया सुधार ।
उजड़ा वैदिक धर्म का गुलशन फिर कीन्हा गुलज़ार ।
सन्धया करना शास्त्र पढ़ना वेदों का सत्ज्ञान ।
सदाचार के बिना है निष्फल रक्खो इस का ध्यान ॥
सदाचार हो दृढ़ विद्या हो कर्म धर्म सत् ज्ञान ।
मुक्त होवें छुटे दुःख सारे मिले आनन्द महान् ॥
ऐशो इशरत के दिलदादा हो मन में करो विचार ।
सदाचार के बिना तुम्हारा नहीं होगा उद्धार ।
सदाचार का ले के आश्रय हो जाओ तैयार ।
काम आदि से विकट हैं शत्रु दोजो इनको मार ॥
पूरण होकर सदाचारी तुम करो वेद प्रचार ।
निसन्देह फिर याद रखो तुम, होगा देश सुधार ।
बेकस करता अन्तिम बिनती छोड़ो ऐशो आराम ।
कहा सुना अब करके दिखाओ, है मर्द का काम ॥

भजक नं० २२२

भूला २ क्यों फिरे जगत् में कैसा तेरा नाता रे।
ना किसी से लेना देना न किसी से नाता रे॥
ना किसी की भैन भाणजी न किसी की माता रे।
चौन्सी ओढ़ी पैन्सी ओढ़ी ओढ़ी मलमल खासा रे॥
शाल दुशाल सब कोई ओढ़ै अन्त खाक में बासा रे।
ज़ार ज़ार तेरी माता रोवे भैन रोवे दस मासा रे॥
मरघट में तेरी तिरिया रोवे हंस अकेला जाता रे।
कौड़ी २ माया जोड़ी जोड़ी लख पचासा रे।
कहत कबीर सुनो भई साधो संग चले न आसा रे॥

भफन नं० २२३

अगर इच्छा है दर्शन की तो भक्ती को बढ़ाता जा।
धुला कर अपनी पोशष प्रेम के रंग में रंगाता जा॥
पका कर ज्ञान का चूना हृदय को साफ़ कर लेना।
यह पहिला फर्ज़ है तेरा विकारों को छुड़ाता जा॥
समेट पंच अंगन और माला किताबें डाल पानी में।
प्रथम सत्संग में चल कर कुटिल मन को मिटाता जा॥
फिर अपने शह पर जाकर दोई और मन का सौदा कर।
इन्हीं से प्रेम धन लेकर उन्हीं पर बस लुटाता जा॥
न राधे श्याम घबराना कहां अपना व बेगाना।
दुई को दूर करके भसम इकताई रमाता जा॥

भजन नं० २२४

प्रभु लगाये पार वे हरिनाम सिमर ले
नेक कमाई कर कुछ प्यारे, इन्द्रियां नूं दे मार ।
वे, प्रभुनाम सिमर ले ।
धर्म बिना कोई संग न जावे, कैंहदे ने वेद पुकार ।
वे प्रभुनाम सिमर ले ।
विषय भोग बिच गई जवानी, अजे वी सोच विचार ।
वे प्रभुनाम सिमर ले ।
मानस जन्म अमोलक हीरा मिले न बारमबार ।
वे प्रभुनाम सिमर ले ।
ना कर निन्दे कठिन है पैंडा, करसी बहुत ख्वार ।
वे प्रभुनाम सिमर ले ।
मूढ़ मना जो सोचे नहीं, मैं तो अति गंवार ।
वे प्रभुनाम सिमर ले ।

भजन नं० २२५

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है ॥ १ ॥
कोई दिगम्बर कोई पिताम्बर, पहने शाल दुशाला है ॥ २ ॥
कोई विभूति कोई सन्यासी, कोई गडरिया ग्वाला है ॥ ३ ॥
कोई अन्धा कोई लूला, कोई गोरा कोई काला है ॥ ४ ॥
कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मधु पी मतवाला है
कोई मदकी भंगी चरसी, कोई पीवे प्रेम का प्याला है ॥ ६ ॥
जब तक मनका फिरे न मनका, क्या तसबी क्या माला है
निस दिन भजे जो हरि को, "अमीचन्द" सोई करनीवाला है

भजन नं० २२६

सिमरन बिन गोते खाओगे ।

क्या लेकर तुम जन्म लियो, क्या लेकर चले जाओगे ।
मुट्ठी बांधकर जन्म लियो है, हाथ पसारे जाओगे ॥
यह तन है काग़ज की पुड़िया, बूँद पड़त गल जाओगे ॥
कहत कबीर सुनो भई साधो, हरिनाम बिन पछताओगे ॥

———

भजन नं० २२७

सिमर प्रभु, दिन रात रे मन ।
उस बिन तेरा कोई नहीं सहाई ॥ सिमर०
सिमरन कर अन्तर्यामी का ।
जग कोई दम की बात रे मन ॥ उस बिन० ॥
कर संध्या और पढ़ गायत्री,
दूर होवें कुल आफ़ात रे मन ॥ सिमर० ॥
परिपूर्ण की कर उपासना,
तब हो मुक्ति पात रे मन ॥ सिमर० ॥
दुनियां मिसल सराय मुसाफिर,
लाये रहा यम घात रे मन ॥ सिमर० ॥
खुश होकर, सिमरण ईश्वर का,
'बेकस' मुक्ति पात रे मन । सिमर० ॥

———

भजन नं० २२८

जो चाहता है हयाते अब्दी तो राह पै लग मिटे हुओं की ।
लिखा दे नाम जल्दी अपना, फेहरिस्त में सिर कटे हुओं की ।
यह माल कब्ज़े में उनके कोई न तोप गोलान तेगे आहन ।

मगर थतह होती है हां हमेशा रास्ते पर डटे हुओं की ॥
है हस्ती जिनकी बराय आलम वह आप अपनी गुजरते जां से
मगर है मदे नज़र हमेशा इन्हें शफा दम छुटे हुओं को ॥
मिलेगा उकबा में सूद दर सूद इनाम की भी बरतरी हो ।
तमाम दौलत जमा रहगी धर्म की खातिर लुटे हुओं की ॥
जो दूध फटता है इसका गाहक नहीं है कोई भी किसी भाव ।
यह ही तो कीमत है 'चन्द्र' जग में बाहमी दिल फटे हुओं की

भजन नं० २२९

अरे मति मन्द अज्ञानी जन्म हरि भक्ति बिन खोया ।
बिगाड़ा सब काम तूने रहा अज्ञान में सोया ॥
पड़ा परदा जहालत का, अकल की आंख पै तेरे ।
सुधा को छोड़ कर मूरख, जहर का बीज क्यों ढोया ।
क्रोध और काम के बश हो जन्म बरबाद करदीना ।
बिमुख निज ईश से होकर, वृथा शिर भार क्यों ढोया ॥
करो उपकार दोनों का, कपट छल को ज़रा त्यागो ।
भलाई कीजिये सब से, तो तेरा भी भला होगा ।
समझ 'बलदेव' निज मन में, न तेरा कोई यहां साथी ।
रहा तू नींद में गाफिल न उठ कर हाथ मुँह धोया ॥

भजन नं० २३०

कांटे से भी खराब है जिस गुल में बू न हो ।
वीराना के समान है जिस दिल में तू न हो ॥
गूंगी ज़बां हो जिस पै तेरी गुफ्तगू न हो ।
जल जाये दिल वह जिस में तेरी जुस्तजू न हो ॥
जो स्याह दिल सताये किसी बेज़बान को ।

मालिक के रूबरू वह कभी सुरखरू न हो ॥
इनसां है वह जो आप सा जाने जहान को।
तफ़रीक़ जिसके दिल में कभी मैं व तू न हो ॥
दुनियां में रह के पाक चलन वह बनाइये।
बरबाद जीव का कभी यारो लहू न हो ॥
कुछ काम कर तू नेक कि फुरसत का वक्त है।
हासिल है आज बात वह कल हो कभू न हो ॥
खोले हुये हों हाथ जहां से बवक्ते कूच।
लिपटी हुई कफन में कोई आरजू न हो ॥
मखमूर है शराबे हक़ीक़त का जाम पी।
इस "राग" के हयाब का खाली सुबू न हो ॥

भजन नं० २३१

(१)

तमाम आलम में ढूंढ आया, वलेक तुम सा तुम्हींको देखा
हजारों देखे जहां में दिलबर, मगर दिलारा तुम्हीं को देखा ॥

(२)

फिरा मैं मन्दर व कोह-बनमें, लखा—हजारों हैं गुल चमनमें;
मिला मुझे तू मेरे ही मनमें, हटा जो परदा, तुम्हींको देखा ॥

(३)

तुम्हारे मिलने की चाह दिलमें, मुझे दिखाती थी राह दिल में:
उठी मुहब्बत की चाह दिलमें, सरापा-जलवा तुम्हींको देखा ॥

(४)

जहांमें मैंने ये बात पाई,—कभी विसाल-ओ-कभी जुदाई:
पै जब से तुम तक हुई रसाई, जुदा न होता तुम्हींको देखा ॥

(५)

ये सारी हस्ती फिदा है तुमपर, हर एक शैदा हुआ है तुमपर
बक़ा है तुमसे फना है तुमसे, खुदा-ओ-बन्दा तुम्हींको देखा ॥

(६)

कुरानमें, बेद-ओ-बाइबिलमें, हर एक कलममें हर एक दिलमें
हवामें, अतिशमें, आब-ओ-गिलमें, खुदा! खुदारा, तुम्हींको देखा

(७)

निसार 'बिह्वल' है एक तुम पर, फिदा-ओ-कुरबां कदम कदमपर
बिका तुम्हारे रहम करम पर कि तुम-सा दाता, तुम्हींको देखा

भजन नं० ३२

जीवन पुष्प

जीवन बन तू फूल समान ॥ जी० ॥
पर उपकार सुरभि से सुरभित संतत हो सुख दान ॥
जीवन ! बन तू फूल समान ॥
स्वच्छ हृदय हो खिजला प्यारे ! तू भी परम प्रेम को धारे ।
सुखदाई हो सबको जग में पा सब से सम्मान ॥
जीवन ! बन तू फूल समान ॥
कठिन कंटक के घेरे में, दारुण दुखदाई फेरे में ।
पड़ कर विचलित कहीं न होना बनना नहीं अंजान ॥
जीवन बन तू ! फूल समान ॥
शत्र मित्र दोनों का हित हो, पावन यह तेरा शुभ व्रत हो ।
मधुदाता बन सबका प्यारा तज कर भेद बिज्ञान ॥
जीवन बन तू फूल समान !

दे तू सुरभि टूटने पर भी, पैरों तले कूटने पर भी ।
इस विधी से प्रभु की माला में पाले प्रिय स्थान ॥
जीवन बन तू ! फूल समान ॥

बिनती

भजन नं० २३३

कहां हो चातक के चित चोर ! कहां०
बरस परो प्रेमामृत बन के दुखिया जम की सोर।
मुरझा दो जीवन को प्यारे उरझ रही जो डोर ॥
कहां हो चातक के चित चोर ?
दिखला दो चन्द्रबन है यह मरणासन्न चकोर।
प्रीतम ! बिरह बिकल तद मन है क्यों बन गए कठोर ॥
कहां हो चातक के चित चोर ॥
दिनमणि मिठा अबोध अंधेरा करो बोधमय भोर।
मानस कमल खिला दो मोहन ! डाल कृपा की कोर ॥
कहां हो चातक के चित चोर ॥
प्रेम ! प्रेम धन शब्द सुना दो नाच उठे मन मोर।
दीन मलीन मीन यह अति निज रस में दो बोर ॥
कहां हो चातक के चित चोर ॥
उजड़ा कुंज कुटीर बना दो फिर से नंद किशोर।
खाली पात्र प्रेम का भर दो ! छूटे छल की छोर ॥
कहां हो चातिक के चित चोर ॥
पाप ताप संझानित हमको नाथ रहा झकझोर।
सुधा पिला दो ! हमें जिला दो ! बिनती यह कर जोर ॥
कहां हो चातक के चित चोर ॥

आग्रह

भजन नं० २३४

ऋतुराज बनके प्यारे मन की कली खिलादो !
अपनी सुरभि निराली करके कृपा दिलादो ?
ऋतुराज बनके मोहन मन की कली०
यह पिक तरस रहा है प्राणेश हा तुमहारा।
जी जाय हे सुधाधर ! ऐसी सुधा पिलादो !
ऋतुराज बनके दिलबर दिल की कली०
बुलबुल यह बावला सा व्याकुल विकल पड़ा है,
हे विश्व के मिलापी गुल से इसे मिला दो ।
ऋतुराज बन के प्रीतम मन को कली०
प्रेमी परम पपीहा पी पी पुकारता है,
इक बूंद प्रेम इसको बारिश की तुम पिलादो !
ऋतुराज बन के मोहन मन की कली०
रो रो मचल रहा है कब से तिरा पतंगा,
वह रोशनी दृगों में झट पट से झिल मिला दो।
ऋतुराज बनके प्रियवर मन की कली०
निर्गुण हुई यह बीणा बेकार सी पड़ी है,
फिर बज उठे सुरीलीकुछ ऐसी कर हिला दो !
ऋतुराज बन के दिलबर दिल की कली०
आंखों से झड़ रही हैं सावन की स्याह झड़ियां,
ओ मन चले खिलाड़ी ! खुल खुल के खिल खिला दो।
ऋतुराज बन के प्यारे मन की कली खिलादो।

—०—

भजन नं० २३५

लाखों मनुष्य विश्व में आये चले गये।
दुःख बोझ अपने सिर पै उठाये चले गये।
ईश्वर की याद की न किसी का भला किया।
जीवन को अपने मुफ्त गंवाये चले गये॥
जीवन सफल है उनका जो उपकार में मरें।
पापी तो काल व्यर्थ बिताये चले गये॥
बनते थे ब्रह्म वह न बचे काल चक्र से।
सन्मुख हमारे भू में समाये चले गये॥
धन उनका धन्य है जो अनाथों के हित लगे।
कंजूस माल भू में दबाये चले गपे॥
साधू है जिसका मन रंगा है उसके प्रेम में।
औ धूर्त लाल वस्त्र रंगाये चले गये॥
ईश्वरका ध्यान जिसने किया 'राम' तर गया
बे धर्म अपनी नाव डुबाये चले गये॥

भजन नं० २३६

राम राज्य ऐसा जमाना फिर भी दिखलादे प्रभु।
पैवों को राम के दुःखों से छुड़ा दे प्रभु॥ १॥
हुक्म पर मां बाप के ओलाद फिर कुर्बान हो।
बाप बनना देश के बा ों को सिखला दे प्रभु॥ २॥
राम लक्ष्मण सा हमारे भाइयों में प्यार हो।
भरत सी कुर्बानियों की हमको शिक्षा दे प्रभु॥ ३॥
माताओं बिहनों को हमारी करदे सीता सी सती।
और पुरुषों का यतीपन लक्ष्मणसा बनादे प्रभु॥४॥

हों महाराजा हमारे राम से धर्मात्मा ।
राम की प्रजा सा हमको प्रेम उनका दे प्रभु ॥ ५ ॥
हमको विधवाओं का रोना मत सुनाई दे कहीं ।
बूढ़ों को बच्चों के मरने का न सदमा दे प्रभु ॥ ६ ॥
वेद की आज्ञा को मानें सब सदाचारी बनें ।
सुन विनय 'रौनक' की उसको प्रेम अपना दे प्रभु ॥७॥

दूध और पानी का प्रेम

भजन नं० २३७

प्रेम प्यारो परस्पर बढ़ाते चलो जी ॥
पानी ने प्रेम दूध से जिस दम बढ़ा लिया ।
अपना ही रूप दूध ने उस को बना लिया ।
तुम भी दूई दिलों की मिटाते चलो जो ॥
अपनाया दूध ने हित प्यार से जिसे ।
बिकवाया अपने मोल ही बाज़ार में उसे ।
तुम भी छोटों को उपर उठाते चलो जी ॥
यह प्यार देख दूध का पानी विचारता ।
जो कष्ट दूध पर पड़े स्वयम सहारता ।
इस का बलिदान दिल में बिठाते चलो जी ॥
हलवाई ने जब दूध को अग्नि पै धर दिया ।
तो इससे पहले पानी अपने आप जल गया ।
तुम भी मित्रों के दुःख को हटाते चलो जी ॥
यह देख दूध अग्नि को आंखें दिखा रहा ।
ले के उबाला गिर पड़ा मानों बुझा रहा ।
ऐसा आदर्श तुम भी दिखाते चलो जी ॥

छींटा तभी हलवाई ने पानी का दे दिया।
संतुष्ट दूध बैठ गया मित्र मिल गया।
तुम भी छाती से छाती मिलाते चलो जी॥
संभव नहीं है इस समय कोई भी विघ्न हो।
दीपक पतंग की तरह जाती की लग्न हो।
"चन्द्र" जाती की नैय्या बचाते चलो जी॥

भजन नं० २३८

नौजवानों धर्म का कुछ काम करना सीखलो।
धर्म के मैदान में कट कट के मरना सीखलो॥
तुम सहो सौ आफतें लेकिन न हो अबरू पै बल।
सर को वैदिक धर्म पर कुर्बान करना सीखलो॥
दुश्मनों को भी सिखाओ नख्ले वैदिक का समर।
सत्य के रस्ते पै तुम हर दम विचरना सीखलो॥
कौन कहता है कि मुल्की काम में हिस्सा न लो।
धर्म के झण्डे तले एकत्र होना सीखलो॥
जान दे दी थी 'शहीदे अकबर' ने जैसे धर्म पर।
वैसे ही तुम धर्म का उद्धार करना सीखलो॥
था 'मुसाफिर' दर असल मैदान अपने का धनी।
मित्रवर अब तुम भी कुछ उपकार करना सीखलो॥

भजन नं० २३९

कर जाओ काम दोस्तो भारत की शां रहे।
दुनियां में तुम रहो न रहो पर निशां रहे॥
तूफां है रात तीर है लहरें हैं जोश पर।
उठ बैठो जिसमें किश्ती बचे बादबां रहे॥

तुम नस्लके हफ़ीज़ बन कुछ कर तो दिखाओ ।
तो नाम लेवा कोई तो पे मेहरबां रहे ॥
कैसा ज़माना आया कि तख्ता पलट गया ।
अब वह न गुल न बाग न वह बागबां रहे ॥
अब गौर करने सोचने का वक्त है कहां ।
खूं भर दो अपना जिस में कि यह नीमजां रहे ॥

भजन २४०

दुनिया को दिखा दूंगा

अगर जिन्दा रहा कुछ दिन तो दुनियां को दिखा दूंगा ।
किसे हुब्बे वतन कहते हैं यह सब को सिखा दूंगा ॥
खुशामद मैं कभी सीखा नहीं इन्सान की करना ।
सदाकत पर बिला शक ही मगर सिर को कटा दूंगा ॥
कभी भी पालसी से काम लेने का न हूं काइल ।
यह मक्कारी है हर एक खानये दिल से मिटा दूंगा ॥
चमन जो कौम का सूखा पड़ा है एक मुद्दत से ।
इसे मैं आबे खून से सींचकर गुलशन बना दूंगा ।
कोई गर नाम चाहेगा मेरा तहरीर में लाना ।
कि मैं कौमी दिवाना हूं यह नाम अपना लिखा दूंगा ।

भजन २४१

एक आर्य की प्रतिज्ञा

जिन्दगी कौम की सेवा में लगा दूं भगवन् ।
देश जाति के लिये खुद को मिटा दूं भगवन् ॥
हुब्बे कौमी का नशा मस्त बना दे ऐसा ,

आप ही आप तन मन को मैं भुलादूं भगवन् ॥
झाडूकश को अगर जलसे में बुलावे कोई।
सब से पहिले मैं अपना नाम लिखादूं भगवन्।
कौमी मन्दिर अगर भारत में बनाना चाहें।
मिसल पानी के मैं अपना खून बहा दूं भगवन् ॥
झांका करता हूं जो मिल जाय मेरा शत्रु।
हो न खाना तो जिगर अपना खिला दूं भगवन् ॥
यज्ञ मन्दिर पर हित को रचना करा चाहे कोई।
सब से पहिले मैं अपना नाम लिखा दूं भगवन्।

भजन २४२

दिन अब फिरने वाला है।

हमें विश्वास है भारत का दिन अब फिरने वाला है।
हमारे देश के बच्चों ने होश अपना संभाला है॥
बहुत दिन हो गये हम को अंधेरी रात में सोते।
मगर जल्दी ही परदा आंखों से अब हटने वाला है।
भंवर घबराता है क्योंकर कि अब थोड़ी सी बाकी है।
निकल आया है अब सूरज कंवल अब खिलने वाला है॥
मलेंगे हाथ वह सुन कर बिचारे तंग दिल वाले।
सुनहरे बादलों से आसमां अब घिरने वाला है॥
जिगर हो जायगा रोशन अंधेरा बेनिशां होगा।
मिलेगा खुदबखुद तुमको जो माधव मिलने वाला है॥

भजन २४३

वह असीरे दामे बला हूं मैं, जिसे सांस तक भी न आ सके।
वह कतीले खंजरे नाज़ हूं जो न आंख अपनी फिरा सके॥
मुझे आसमां ने मिटा दिया, मुझे हर नज़र से गिरा दिया।
मुझे खाक ही में मिला दिया, कि न हाथ कोई लगा सके॥
मेरी दुश्मनी पै हज़ार हैं भरे खातरों में गुबार हैं।
मेरे दिल में जखम हजार हैं, इन्हें कोई क्योंकर दिखा सके॥
मेरे शूरवीर कहां गये, मेरे किलागीर कहां गये।
मेरे महमुनीर कहां गये, जो फिर पलट के न आ सके॥
मेरे लम्बे बरछों को क्या हुआ, न कड़ी कमान को जेर किया
मुझे थोथे तीरों पै रख लिया, कभी इक निशाना उड़ा सके।
मरा हिन्दूकश हुआ हिन्दूकुश, वह हिमालिया है दिवालिया।
मेरे गंगा जमना उतर गये, बस अब इतना है कि नहा सके॥
न वह माला मोतियों के भरे, न वह छत्र सिर पर लगे हुये।
मेरे बाल खाक में हैं अटे, नहीं इतना कोई धुला सके॥
न वह दिल्ली है न वह आगरा, न बिहार और न कलकत्ता।
जो नगर है उजड़ा पड़ा हुआ, नये सिर से कौन बसा सके॥
मेरे ऊंचे २ जो कोट थे वह हैं अब जिमीं से मिले हुए।
वहां उल्लू आके हैं बोलते, जहां बाज पर न हिला सके॥

वह तख्त जिस पै कि मोर था, वह जहां में जिसका शोर था।
उसे छीन छान के ले गये, वही जोर मुझ पै जता सके॥

मेरा कोहनूर बहा दिया, उसे टुकड़े कर के उड़ा दिया।
मुझे हर तरह से मिटा दिया, कि नजर में ही न समा सके॥
मेरे बच्चे भीख हैं मांगते, इन्हें टुकड़ा रोटी का कौन दे।

जहां जायें कह दें परे परे, कोई पास भी न बिठासके ॥
मेरे लाल जो कि सिखाते थे, वही अब हैं औरों से सीखते ।
यह प्रभु की शान तो देखिये, मेरी बिगड़ी कौन बना सके ॥
"उलफत" बजे उसकी ही बंसरी, न रहे किसी की न है रही ।
यह बड़ी फिसलनी ज़मीन है, यहां पांव कौन जमा सके ॥

भजन २४४

भूले जाते हो तुम यार, भारतवर्ष के रहने वाले ।
हम तुम उनकी हैं सन्तान, जो थे भूमी में विद्वान् ।
गौतम पातंजली महान, सब तत्वों को जानन वाले ॥
थे श्री रामचन्द्र महाराज, पितु आज्ञा पर छोड़ा राज ।
नहीं स्वीकारा पद युवराज, पुरुषोत्तम कहलाने वाले ॥
अर्जुन भीष्म हुए बलवान, जिनके लख संहारी बान ।
अब तज ब्रह्मचर्य की बान, हो बलछीन करावन वाले ॥
कर के जाती का अभिमान, निर्बल हो गये बलवान ।
देते नहीं दशा पर ध्यान, जड़ को चेतन मानन वाले ॥
तुम ही तो थे सब गुणवान, गाड़ी ये क्या रची विमान ।
अब परदेशी भये धनधाम, नई कल तार बनावन वाले ॥
अब भी मानो बात हमार, मिल कर करलो वेद प्रचार ।
"पाठक" तब ही होय सुधार, होजाओ मान बढ़ावन वाले

भजन २४५

देश भक्तों का गीत ।

विजय दशवत रंगत प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥
सदा शक्त बरसाने वाला, प्रेम सुधा बरसाने वाला ।

वीरों को हर्षाने वाला मातृ भूमि का तन मन सारा ॥
इस झण्डे के नीचे निश्चय, हो स्वराज्य का सुन्दर उदय ।
बोले भारत माता की जय, स्वतंत्रता का देह हमारा ॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बल बल जाओ ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा
तेरी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए ।
ईश्वर विजय करके दिखलाये, वही है हम सबका सहारा ॥

भजन २४६

अभिमान वाले मिट गये

शोर है हरसू कि हिन्दोस्तान वाले मिट गये ।
दूसरों की शान रख कर शान वाले मिट गये ॥
ढूंढ लो उन की भी कब्रें अपने महलों के करीब ।
चार दिन की बात है बलकान वाले मिट गये ॥
किस हवा से उड़ रहे हो देख लो अब गाफिलो ।
आसमां पर पहुंच कर यूनान वाले मिट गये ॥
तुम तिजारत की इमारत को अटल समझा करो ।
एक ही भूचाल में जापान वाले मिट गये ॥
'तेजसिंह' फिर से सुनो हर बात का यह सार है ।
जहां कहीं जिस ने किया अभिमान वाले मिट गये ॥

आवाहन

भजन नं० २४७

पावन प्रमोद प्याला प्यारे हमें पिलाओ ॥ प्यारे हमें०
अज्ञान का तिमिर जब अन्धा बना रहा हो ।

अनुराग की झलक तब अपनी हमें दिखाओ ॥
यह मन मयूर मेरा घनश्याम जब विकल हो।
पावन पियूस बरसा तब तुम इसे जुड़ाओ ॥
दुर्भाव चोर घुस कर जब चित्त को डिगावें।
उज्ज्वल विवेक का तब पहरा प्रभू बिठाओ ॥
रसना यह रात दिन जब तेरी रटन लगाये।
स्वर्गीय निज सुधा का शुभ स्वाद तब चखाओ ॥
मेरा यह प्रेम मन्दिर जब जब पड़ा हो सूना।
मोहन ! तभी अचानक आ कर इसे बसाओ ॥
आंखें इधर पधर जब ढूंढे तुम्हें जगत में।
तब प्राणधन ! उन्हें तुम छबि को दिखा लुभाओ ॥
जब भ्रान्तियां भयानक आकर हमें सतावें।
तब शान्ति का सुरीला गाना हरे ! सुनाओ ॥

———

मोहन मंत्र।

भजन नं० २४८

मोहन मंत्र सिखा दे मैया,
मोहन मन्त्र सिखा दे।
आ ! स्वर्गीय शान्ति की प्यारी अनुपम प्रभा दिखादे।
मैया मोहन मन्त्र सिखा दे।
हत्तंत्री के तार हिला दे जीवन शंख बजा दे
आशा का संगीत सुनादे साहस साज सजादे ॥
मैया मोहन मन्त्र सिखा दे।
भस्म बना दे देश प्रेम की बूटी हमें पिलादे।

द्वेष हटा दे मोह घटा दे भरत। हिन्द जिलादे ॥
मैया मोहन मन्त्र सिखादे ।
पौरुष दीप जला दे क्षण में बाधा विघ्न भगादे ।
सोई हुई कला कौशल को कौशलमयी जगादे ॥
मैया मोहन मन्त्र सिखादे ।

भजन नं० २४९

दिलों में छाले पड़े हुए हैं ।
खुदाया कैसी मुसीबतों में ये हिन्द वाले पड़े हुए हैं ।
कदम २ पर हमारो खातिर सितम के लाले पड़े हुए ॥
हमारे मेहमां जो आए बनकर वह ज़ुल्म करने लगे हमीं पर ।
गज़ब है अपने मकान वाले मकान से बाहर खड़े हुए हैं ॥
सिरों पै आफत पड़ी हुई है गले पै खंजर अड़े हुए हैं ।
दिलों पै नश्तर चुभे हुए हैं जिगर में छाले पड़े हुए हैं ॥
हजारों बच्चों से बाप बिछुड़े वह तेग किस्मत के होके टुकड़े ।
सुहागनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुए हैं ॥
हवा ज़माने की बिगड़ो 'नेय्यर' वह ज़ुल्म होने लगे सरासर
सुनाएं फरियाद किस को जाकर दिलों में छाले पड़े हुए हैं ॥

भजन नं० २५०

भारत के हित बन जोगन हम, बन उपवन में जावेंगी ।
देश दिशान्तर घूम घूम कर, निज सन्देश सुनावेंगी ॥
सोए पड़ों को कर उत्साहित, संमार्ग में लावेंगी ।
नगर ग्राम में शिक्षा देकर, भारत मान बढ़ावेंगी ॥
बिछुड़े भाई जो हैं सारे, उन का मेल करावेंगी ।
फूटादि जो भारत वैरी, मार के उन्हें भगावेंगी ॥

यश जितने हैं रूठे यहां से, सादर वापस लावेंगी।
भारत-हित-साधन के हेतु, पार सुमुंदर जावेंगी॥
प्रिय जननी के जो हैं शत्रु वांकी धूल उड़ावेंगी।
देश हितार्थ रक्त बहा कर, नोच नोच कर खावेंगी॥
रोक सकेगा हमें न कोई वक्र से नाद बजावेंगी।
शंख चक्र गदा धारण करके, अक्षर कीर्ति पावेंगी॥
बाएं कर में खड्ग हमारे, दाएं पुष्प उठावेंगी।
वीणा अरु खरताली लेकर, जग में शान्ति लावेंगी॥
मधुर स्वरों से गीत सुना कर, दुखड़े सकल मिटावेंगी।
दण्डनीय को दण्ड ही देकर, रिपुदल को कम्पावेंगी॥
प्रेम के सुंदर जलधर बन कर, अमृत जल बरसावेंगी।
विद्युत सम तेजस्वनी होकर, तीक्षण बाण चलावेंगी॥
मित्रों को संमान दिला कर, शत्रु को पटकावेंगी।
ऊषा आशा शक्ति बन कर, जलविद नाम धरावेंगी॥

भजन नं० २५१

पीते जाना जी महाशय प्याला प्रेम का।
नहीं स्वांग तमाशा मित्रो यहां थियेटर॥
यां तो बजता है नकारा सच्चा प्रेम का।
नहीं यहां कुछ धोखा नहीं यहां लालच॥
सब को रोशन करे यह तो इक नियम प्रेम का
सीधा रस्ता बताया दयानन्द ने आ के।
यश क्योंकर नहीं गावें उसके सच्चे प्रेम का
सब जनों से कहता प्रेमी हाथ जोड़ कर
तुम भी पालन कर लो आ कर ऐसे नियम का॥

बिखरे फूल।

भजन नं० २५२

मिट गया दागे जिगर वह रङ्गो बूए दिल कहां।
बुझ गई जब शमा तो फिर रौनके महफल कहां॥
हम तेरे घर से चले आए तो ज़ाहिर हो गया।
ज़िन्दगी आसा कहां है, ज़िन्दगी मुश्किल कहां॥
जा रहा है वादिये उल्फत में इतमीनान से।
चलने वाले को खयाले दूरिए मंजिल कहां॥
डूबने वाले को ऐ बादे मुखालिफ़ क्या खबर।
मैं कहां, किश्ती कहां, दरिया कहां साहिल कहां॥
उनका दिल मिल जाय मेरे दिल से यह दुश्वार है।
आज तक मिलते हुए देखे किसी ने दिल कहां॥
मरने वालों को जो हसरत जल्द मर जाने की हो।
पूछ ले खुद मौत से है कूचये कातिल कहां॥
दिल से अहले दिल यह कहते हैं मेरा दिल देख कर।
दिल तो है पहलू में सब के लेकिन ऐसा दिल कहां॥
मैं यह कहता हूं शरीके बज़्म मुझको कीजिए।

वह यह फरमाते हैं मुझ से तू है इस काबिल कहां ॥
पहली मंजल का पता हमको लहू से मिल गया।
है अब इसकी जुस्तजू, है आखरी मंजिल कहां ॥
कल तो यों बेखुद न थे, बे दिल न थे, बेदम न थे।
आज बिसमिल हो गये तुम हज़रते 'बिसमिल' कहां ॥

भजन नं० २५२

दाग उल्फत का हमारे खानए दिल में नहीं।
रौनके महफिल हो क्या जब शमअ महफिल में नहीं ॥
तुम कभी आकर जो देखो तो तुम्हें मालूम हो।
अब वह दुनियाये तमन्ना क्यों मेरे दिल में नहीं ॥
कर दिया शायद हवाये शौक ने बरबाद उसे।
खाक परवानों की चुटकी भर भी महफिल में नहीं ॥
दिल अगर मुश्किल में है तो जान भी मुश्किल में है।
दिल नहीं मुश्किल में तो फिर जान मुश्किल में नहीं ॥
हमने देखा आजमाया जाके जांचा चन्द बार।
पूछने वाला भी कोई उनकी महफ़िल में नहीं ॥
कल ये रोना था कि लाखों आरजूयें दिल में हैं।
आज यह रोना है कोई आरजू दिल में नहीं ॥
शमअ के बुझते ही परवाने भी रुखसत हो गये।
कोई जलने के लिए अब उनकी महफ़िल में नहीं ॥
उसका नूर, उसका जहूर, उसका कयाम, उसका मुकाम
कौन से घर में नहीं या कौन से दिल में नहीं ॥
किस पतंगे ने यह दी है शमआ जल कर बददुआ।
तुझको रोने के सिवा कुछ काम महफिल में नहीं ॥

देख लूंगा मैं किसी दिन सूरते आईनागर ।
मैल अगर पे हम नशीं आईनए दिल में नहीं ॥
ऐब जूयाने जहां हो दिल से देता हूं दुआ ।
सच वह कहते हैं कि खूबी कोई "बिसमिल" में नहीं ॥

भजन नं० १५४

वतन के वासते यह जान जाती है तो जाने दो,
मुसीबत लाख आती है खुशी से सर पै आने दो ॥ १ ॥
अमर है आत्मा सबकी यही आदेश गीता का,
हथकड़ी तौक जंजीरें पिन्हाते हैं पिन्हाने दो ॥ २ ॥
अड़ा दो अपने सीने को सदाकत पर रहो कायम,
जहर के तीर कातिल गर चलाते हैं चलाने दो ॥ ३ ॥
अगर तकलीफ आती हो मुबारक समझो उस दिन को,
गले का हार समझो तुम न दिल पर मैल आने दो ॥ ४ ॥
वतन की खाक में गर दफन होते हो तहे दिल से,
शहीदाने वतन तुम भी बनोगे दिन वह आने दो ॥ ५ ॥
ज़माना रंग बदलेगा "त्रिवेदी" कुछ दिनों में यह,
हकीकत की तरह लाखों को अब तो सर कटाने दो ॥६॥

भजन नं० २५५

हाय ! पशुओं पर दया कुछ न दिखाई तुमने ।
काट कर रक्त की धारा है बहाई तुम ने ॥
स्वाद जिह्वा के लिए तुमने उतारी गर्दन ।
भेंट देवी का बहाना है बताई तुमने ॥
अपने पुत्रों के लिए नाश किया है इनका ।
पाप कर कर के भी सोची है भलाई तुम ने ॥

जगत की मातु बताते हो जो देवी को तुम ।
उनके पुत्रों ही की क्यों सृष्टि मिटाई तुमने ॥
देखते शेर के हो जाता है सुथना ढीला ।
मार कर निर्बलों को पाप कमाई तुमने ॥
दिल के बहलाने को चिड़ियों का निशाना करते ।
मीन के मारने में ध्यान लगाई तुम ने ॥
ले ले मुर्दों को सदा पेट में भरते क्यों हो ।
शोक ! इस पेट को है कब्र बनाई तुम ने ॥
त्याग कर धर्म अहिंसा को बने कस्साई ।
राक्षसी भाव सदा अपनी बनाई तुम ने ॥
ध्यान दे दीजिए सादक़ की विनय पर यारो ।
क्यों सदा पाप में आयू है बताई तुम ने ॥

भजन नं० २५६

अफसोस ! अपने धर्म की उल्फत नहीं रही ।
और अपने भाइयों से मुहब्बत नहीं रही ॥
गोशान पर है फख्र बुज़ुर्गों को अपने पर ।
अपनी नज़र में अपनी ही वकअत नहीं रही ॥
थी कांपती दुनियाँ कभी जुरअत से हमारी ।
अब अपने ही बचाव की ताकत नहीं रही ॥
हम फ़र्द थे कमाल में ताकत में बे मिसाल ।
अब वह हमारी शान और शौकत नहीं रही ॥
थियेटर और सेनिमा में रातें गुज़ार दें ।
पर लेक्चरों में आने की फुरसत नहीं रही ॥
विधवा अनाथ बच्चे गैरों में जा पलें ।

पर हम को इससे कुछ भी गैरत नहीं रही ॥
सादिक हमारी हालत मुर्दों सी हो गई ।
दुनियां में अब हमारी इज़्ज़त नहीं रही ॥

भजन नं० २५७

तू जो हाथों में खंजर उठाए फिरे,
तेरे दिल में ज़रा रहम आता नहीं ।
ज़ुलम करना बहाना लहू हर घड़ी,
किस जगह है लिखा क्यों दिखाता नहीं ॥ १ ॥
जो कि जीवों को मारे सताये निडर,
मांस आदि का सेवन करे हैं जो नर ।
किन शास्त्रों में ऐसा लिखा है बशर,
वह तो मुक्ति के सुखों को पाता नहीं ॥ २ ॥
वेद द्वारा है ईश्वर ने यह कह दिया,
है अहिंसा का उपदेश सबको किया ।
हमने सारी किताबों में देख लिया,
इसका खाना कहीं पाया जाता नहीं ॥ ३ ॥
मनु आदि स्मृति है यों कह रहे,
वह तो पापी हैं जीवों को दुख दे रहे ।
जहां लाखों ही मुर्दे जमा हो रहे,
क्या वह कबरिस्तान कहलाता नहीं ॥ ४ ॥
सिक्ख गुरुओं की बाणी को दिल से पढ़ो,
अब जरा हाथ छाती पै रख के कहो ।
तुम को किस ने कहा है कि झटका करो,
गुरुग्रन्थ तो तुम को सिखाता नहीं ॥ ५ ॥

हादी ईसा ईसाइयो तुम्हारा हुआ,
खून उसको कहां से गवारा हुआ।
है मति बाब उन्नोस में देख लो,
वह तो खून किसी का कराता नहीं ॥ ६ ॥
सूरष हज और चार कुरान में,
आयत छत्तीसवीं दिखलाऊं इस आन में।
तुम तो फंस बैठे सारे कुफरान में,
खुदा गोश्त किसी का मंगाता नहीं ॥ ७ ॥
यह तो हो नहीं सकता साबत ज़रा,
कि किसी मज़हब में हो गोश्त का खाना रवा।
"चन्द्र" दीन और दुनियां में वह हो भला
जो खून किसी का बहाता नहीं ॥ ८ ॥

भजन नं० २९८

भलाई कर चलो

भलाई कर चलो जग में तुम्हारा भी भला होगा।
किया जो काम नेको बद वह इक दिन बरमला होगा।
सताते दीन दुखियों को न खाते खौफ मालिक का।
सितमगर भी कोई देखा जो फूला और फला होगा ॥
समझ कर जान अपनो सी दुखाओ मत किसी का दिल।
जलावेगा तुम्हें बेशक जो तुम से खुद जला होगा ॥
फ़रायज़ अपने को हरदम अदा करते रहो फौरन।
मज़ा "बलदेव" विषयों का तुम्हें इक दिन मिला होगा ॥

भजन नं० २५९

मेरे कहां गए रखवाले

टेक—मारी जाऊं बिना अपराध मेरे कहां गए रखवाले ।

हिन्दू मुसलमान ईसाई जैनी बौद्ध खालसा भाई ।
देकर माखन दूध मलाई, मैंने पुत्रवत सब पाले ॥ १ ॥
हल सब बच्छड़े मेरे चलाते कोटों मन अनाज उपजाते ।
दुनियां में जो जन्मे खाते, सारे वृद्ध युवक और बाले ॥२॥
मर कर दे जाऊं अस्थि चाम, जिससे चले हज़ारों काम ।
पर मत लो नेकी का नाम, नेकी के सिर चलते भाले ॥३॥
काटे जावें शीश हमारे, हम पर चलते सितम के भाले ।
हो गए क्यों पशू सम सारे, कोई उपकारी हमें बचाले ॥४॥
ऐसा कोई उपाय बतावे, बूचड़खानों को उठवावे ।
"रौनक" मेरी जान बचावे, मुझको दुष्टन से छुड़वाले ॥५॥

भजन नं० २६०

गाय और बछड़े की बात चीत

बछड़ा-सुन बात मात मेरी प्यारी, तुझे दर्द न मेरा आरी ।
जब दूध निकाले तेरा, तब ख्याल रखा कर मेरा ।
कुछ दूध चढ़ाय घेरा, मुझे देना छुपकर पिलारी ॥सु०॥
गाय—सुन बेटा बात हमारी, तेरी गई अकल क्यों मारी ।
जो गाय दूध के नाटें, सिर उसका कसाई काटें ॥
तेरी बचपन की सी ब.तें नहीं सुनती मात तुम्हारी ।
बछड़ा-ऐ माता मैं तेरा जाया, हूं व्याकुल भूख सताया ।
मेरा स्वास लबों पर आया, मुझे देकर दूध बचारी ॥

गाय—हाल देख मेरा जी जलता कुछ ज़ोर न बेटा चलता।
कहूं किस से हाल जिगर का जो काटे बिपत हमारी॥
बछड़ा-मेरा भूख से जी घबरावे, नहीं माता दूध पिलावे।
दुख किस से कहूं सुनाय, ऐ माता मेरी बतला री॥
गाय—तेरी माता हाथ पराय, तुझे क्योंकर दूध पिलाय।
तेरा भूख से जी घबराय हुआ नीर नयनों से जारी॥
बछड़ा-दे भूख रही है झटकी, मेरी जान लबों पर अटकी।
मेरी फूटी उमर की मटकी अब लेलो प्राण हमारी॥
गाय—बेटा भूखाही हो गया राहो, बस गैर के थी महतारी।
वाह तेरी बेपरवाही, दे सकी न दूध बेचारी॥सुन०॥
बेटा सामने ही मर जाए कुछ पेश न मां की जाय।
कोई ऐसा समथ बचाए दयानन्द सा आ ब्रह्मचारी॥
दर तेरे प्रभु मैं आई मुंह घास की तिनक दबाई।
संग धर्मबीर के आई हरी काट दो विपद हमारी॥

भगवान कृष्ण के दरबार में गाय की पुकार

भजन नं० २६१

बंसी वाला

बंसी वाले नन्दलाल जी गौआं देन दुहाईयां।
होवो छेती रक्षपाल जी, कहियां देरां ने लाइयां॥
गौआं वच्छियां बछड़े तेरे, गैरां ने आके जबरन घेरे।
कोतियां कई हलाल जी डाडियां अत्तां ने चाइयां॥
पेट भरनद नूं पठा नहीं मिलदा, तेरे बिन केड़ा मरहम दिलदा

रख लज्जा दीन दयाल जी; तेरी शरणागत आईयां ॥
दूध पींदे मैनूं तड़ी खवांदे, कतल करन तों नहीं शमांदे ।
बिपता पई कमाल जी दुःखां घेर के फाईयां ॥

भजन नं० २६२

डूबते भारत को बचाने आओ

नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ,
नाओ मंझधार में है पार लगाने आओ ॥
प्यार जिस भूमि से गौ लोक में रखते हो
आज इस भूमि की बिपदा को मिटाने आओ
नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ
जिन जीवों के लिए तुम अपना कहा करते हो
फन्द उन अपनो को गोबिन्द छुड़ाने आओ
नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ
कर्म योगी बनें धर्म के फिर वीर बने
देश वालों को यह उपदेश सुनाने आओ
नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ
अपने ही घर में लड़ा करते हैं जो "राधे श्याम"
उन्हें घर वालों को फिर प्रेम सिखाने आओ
नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ

भजन नं० २६३

जाती नहीं

आग में पड़ कर भी सोने की दमक आती नहीं ।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं ॥

सिल पर घिस देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू।
फूल की मिट्टी में मिल कर भी महक जाती नहीं॥
कूट कर आता नहीं कुछ लाल को रङ्गत में फरक।
तोड़ देने से भी मोती की चमक जाती नहीं॥
रंज में आता नहीं नेकों की पैशानी पै बल।
धूप की तेज़ी में सबजा की लहक जाती नहीं॥
जा नहीं सकती कटहरों में कभी शेरों की धाक।
दस्ते गुलचीं में भी गुंचा की महक जाती नहीं॥
खौफो खतरे में बदल सक्ती नहीं मरदों को खू।
अदंलीबों की कफस में भी चहक जाती नहीं॥
साहिबे हिम्मत नहीं दबता मुखालिफ से कभी।
ज़ोर से आंधी की आतिश की भड़क जाती नहीं॥
नारा ज़न रहता है आफतों हवादस से दलेर।
बादलों से घिर के बिजली की कड़क जाती नहीं॥
मुल्क की उल्फत का जज़बा दिल से मिट सकता नहीं।
कौम की खिदमत की ख्वाहिश ऐ "फलक" जाती नहीं॥

भजन नं० २६४

ताराना फ़लक

बाग़ से सर सर का झोंका आशयाना ले गया।
अन्लीबों को कफस में आबोदाना ले गया॥
कौन कहता है ज़बर दस्ती से हम पकड़े गए।
जेल में खुद हमको शौके जेलखाना ले गया॥
कुछ गुलो गुलचीं का शिकवा बुलबुले भारत न कर।

तुझको पिंजरा में है तेरा चहचहाना लेगया ॥
एकसौ चौबीस की तोहमत का झगड़ा है अबस ।
जेल में तुझ को तेरा मुलकी तराना लेगया ॥
देश भक्ति की सज़ा देनी उसे मंजूर थी ।
ज़ाहिरा करके बगावत का बहाना लेगया ॥
क्यों घटा अदबार की छाई है अहले हिंद पर ।
छीन कर यूरप है सब मालो खज़ाना लेगया ॥
पूछते क्या हो ज़मीदारों की दौलत क्या हुई ।
कुछ वकील और कुछ नशा कुछ मालयाना लेगया ॥
शामिए किस्मत से इक दाना को हम तरसा किए ।
झोलियां भर कर वगरना कुल ज़माना ले गया ॥
भूख से क्यों न तड़पें हिंद के बच्चे "फ़लक" ।
खैंच कर राली बरादर दाना २ ले गया ॥

भजन नं० २६५

गाफिल हिन्दू

लुट रहा जिनका खजाना किस तरह सोते हैं वह ।
आंख खुलने पर हमेशा पीट सर रोते हैं वह ॥
बेज़वां गौवों की जो सुनते नहीं फ़रियाद को ।
अपनी बरबादी का दुनियां में समर बोते हैं वह ॥
कम से कम हररोज लाखों परचले तेगो तबर ।
फिर कहां दर्दे जिगर की औषधी पाते हैं वह ॥
कुछ नहीं जिनको खबर भारत के अबतर हाल की ।
स्वास अपनी ज़िन्दगी के मुफ्त ही खोते हैं वह ॥

है हमारी तन्दुरुस्ती की दवाई दूध घी।
उसकी जड़ को काट कर नामो निशां खोते हैं वह॥
अपने पैसे से गरज़ कोई जीये कोई मरे।
पाठ इन बेचारीयों के क़तल का देते हैं वह॥
जिनके बछड़ों की कमाई से भरें अपने उदर।
हाय उनके वास्ते खंजर लिये फिरते हैं वह॥

भजन नं० २६६

दिल अपना राह हक़ पै लगाये चले चलो।
आगे ही आगे पांव बढ़ाये चले चलो॥ १॥
रस्ते से वेद पाक के जो हो रहे जुदा।
उनको भी राह रास्त दिखाये चले चलो॥ २
बद पतकादियों को दिलों से उखाड़ कर।
वेदोक सारे कार कराये चले चलो॥ ३॥
बदरस्मियात देश में फैली हुई हैं जो।
चुंगल से इन के सबको छुड़ाये चले चलो॥ ४॥
प्राचीन देव बाणी के उद्धार के लिये।
गुरु कुल व पाठशाला बनाये चले चलो॥ ५॥
बेकस यतीम बच्चों को औलाद की तरह।
निज आतमा से लाड लडाये चले चलो॥ ६॥
बिधवा अनाथ दीन अपाहज हैं जिस कदर।
इन बेकसों को धैर्य बँधाये चले चलो॥ ७॥
हिम्मत दिलाओ उनको जो निर्बल हैं आतमा।
कमज़ोर नातवां को निभाये चले चलो॥ ८॥
गुरुदत्त लेखराम दयानन्द की तरह।

वैदिक धर्म का नाद बजाये चले चलो ॥ ९ ॥
माने न माने कोई यह उनको है इख्तियार।
तुम सच्ची सच्ची बात सुनाये चले चलो ॥ १० ॥
सालिग प्रण जो कर चुके आकर समाज में।
तादम अखीर उसको निभाये चले चलो ॥ ११ ॥

भजन नं० २६७

उल्टी न होगी इस तरह तक़दीर किसी को,
बढ़ कर ना हुई हम से भी तहक़ीर किसी को।
गो चीखते चिल्लाते रहे रात दिन वले।
बढ़ कर न हुई पुर असर तक़रीर किसी की।
अज़हारे सदाक़त के लिए गर ज़बां खोलो।
तो लपलपाने ही लगी शमशीर किसी की।
समझाया लाख बार जताया हजार बार,
पर हो सके न कारगर तदबीर किसी की।
कहते हैं इसे गर्दिशे अय्याम सरापा,
हम जिन्दां में डाले गये तकसीर किसी की।
जिनको लगी हुई है लगन हुब्बे वतन की,
रोकेगी उन्हें क्या कोई जन्जीर किसी की।
ख्वाहिश तो हमारी भी है ऐ चन्द्र व लेकिन।
खिदमत करें क्या दयामुल तासीर किसी की।

भजन नं० २६८

खाना खराब कर दिया बिल कुल शराब ने।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने॥
इज्जत के बदले जिल्लतें इसके सबब मिलीं॥

मुफलिस बनें मरीज बनाया शराब ने ॥
बुलबुल की तरह बाग में लेते थे बूए गुल।
सण्डास नालियों में गिराया शराब ने ॥
हम पीने वाले शर्बते सन्दल थे दोस्तो।
कुत्तों का मूत हम को पिलाया शराब ने ॥
मैदाने जंग में थे कभी हम भी शहसवार।
कीचड़ में नालियों में गिराया शराब ने।

भजन नं० २६६

अपने देश की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो।
आंख खोल कर देखो भाईयो! क्या है देश का हाल।
कैसा था अब क्या हो गया है अब इस पर करो ख्याल ॥
कभी देश यह आर्य्यवर्त था अब है हिन्दुस्तान।
हिन्दू काफिर काले वहशी हो रही ऋषि सन्तान ॥
किसी वक्त यह देश तुम्हारा था मुल्कों का सिरताज।
अधर्म अविद्या के कारण है सब से नीचा आज ॥
वेद ईश्वरीय ज्ञान को अब तो सारे बैठे छोड़।
जड़ कबरों के बने उपासक ईश्वर से मुंह मोड़ ॥
नहीं खबर कुछ रही किसी को सत्यधर्म क्या चीज।
बुरे भले की रही नहीं है बिलकुल हाय तमीज ॥
वैदिक शिक्षा उठ गई सारी रहा न धार्मिक ज्ञान।
सत्यधर्म को छोड़ बने अब सारे पशू समान।
यज्ञ हवन सब छुट गये हमसे छूटा सत् व्यवहार।
झूट कपट छल बढ़ गये सब में भ्रष्ट हुये आचार ॥

वर्ण अश्रम मिट गये ऐसे मिलता नहीं निशान ।
मूरख सब से बड़े कहावें और छोटे विद्वान ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र कुल हो गये हैं गुणहीन ।
नहीं एक की एक को ममता हो गये तेरह तीन ॥
मस्त हुये सब खुद गर्जी में नहीं देश से प्रेम ।
विषय भोग में पड़ 'परदेशी' तोड़ा ईश्वरी नेम ॥

भजन नं० २७०

कैसी थी वह शुभ घड़ी जहां वेदों का प्रचार था ।
हर तरह फूला फला सरसब्ज और गुलज़ार था ॥
अब तो गलियों में बनारस की बसी हैं रण्डियां ।
नाक थी भारत की काशी विद्या का भण्डार था ॥
स्वांग भर भर नाचते हैं हाय मथुरा शहर में ।
योग की तालीम देता जिस जा कृष्ण मुरार था ॥
क्यों न फैज़ाबाद की आंखों से टपकें आंसुवें ।
निकला जिसकी गोद से श्रीराम क्षत्री कुमार था ॥
हाय इन्द्रप्रस्थ का सारा नजारा मिट गया ।
अब जो है विरान देखो वह कभी गुलज़ार था ॥
पूछ लो प्रयाग से क्यों गंगा जमना मिल गई ।
कह देगा वह एक मत था मेल था और प्यार था ॥
खून करते भाईयों का एक फुट के वास्ते ।
राज तक से भरत ने बस कर दिया इनकार था ॥
पुत्रियों को नाइयों के हाथ वह बेचें थे कब ।
यां कभी होता स्वयंबर गुण कर्म अनुसार था ॥

बनती थी सीता सुशीला गार्गी लीलावती ।
जब जहां पर नारियों को वेद का अधिकार था ॥
नाम रखते थे यहां गोतम कपिल मनु व्यास से ।
कूड़ा छीत्तर व घसीटू कब हमें स्वीकार था ॥

भजन नं० २७१

दुआ लेलो यही दिन हैं।

दुआ लेलो यही दिन हैं बिचारी हिन्द मादर से ।
यह औसर मिल नहीं सकता जवानों फिर नयेसरसे
मिली होगी किसी नेशन को आज़ादी मुकद्दर से ।
हुआ होगा किसी का राज हम तो उमर भर तरसे ॥
शहीदों का लहू गर देश पर बरसे तो यूं बरसे ।
कि पैदा हो निहां हो कौमयत भारत में घर घर से ॥
बिचारी मादरे भारत की हालत पूछते क्या हो ।
पड़ी है खाक पर वह मुंह ढके गैरत की चादर से ॥
अभी से इस कदर नफरत हथकड़ियों व कंगन से ।
बंधेगा एक दिन सेहरा शहादत का तेरे सरसे ॥

भजन नं० २७२

योधा सोई

१—जो लड़े धर्म्म के हेत योधा सोई ।
२—शूरा रण में जाय के,
पीठ कबहुं नहीं देत ॥ योधा०
३—जान जाय पर धर्म्म न जाए,
स्वर्ग पछाने खेत ॥ योधा०

४—धर्म्म पर जिन सीस दियो है,
पावैं हर का भेद ॥ योधा०
५—राय हकीकत वीर बैरागी,
तर गये सागर सेत ॥ योधा०
६—धर्म्म छोड़ जो मर जाये नाथा,
होवे भूत प्रेत ।
योधा सोई जो लड़े धर्म्म के हेत ॥

भजन नं० २७३

वीर सैनिक ।

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे ।
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे, उसी के लिये हम जियेंगे मरेंगे
गुजायेंगे वेदोंकेहम गीत गाकर, रिखायेंगे दुनियापुरानीबनाकर ।
उजाडेंगे शहरोंको जंगलबनाकर, दिखायेंगेजीवनसोसच्चाबनाकर
उठायेंगेऋषियोंकोअवाजकोहम, बनायेंगेफिरस्वर्गसंसारकोहम
मिटायेंगेसबसम्प्रदायोंको मतको, बनादेंगेफिरआर्यसारेजगत्को
वही प्रेम गंगा यहां फिर बहेगी, जोसंसार कीताप माला हरेगी
कहेगाजगत् फिरसे इकस्वरमेंसारा, वहोवृद्धभारतगुरुहैहमारा ॥

युवकों से सम्बोधन।

आर्य कुमारों को चेतावनी

भजन नं० २७४

ऋण ऋषिवर का तुम्हें वीरो चुकाना होगा।
लेख के दाम पै अब शीश कटाना होगा॥
जितने भाई ये तुम्हें यवन नज़र आते हैं।
धर्म वैदिक का उन्हें शैदा बनाना होगा॥
क़ल्बे उल्फत से उन्हें ऐसा बनाओ अपना।
"धन्य श्री स्वामी" कहें कृतज्ञ ज़माना होगा॥
लाइला इल्लिला, शामो सहर रटते जो।
उनकी जिह्वा पर अब ओ३म् रटाना होगा॥
राह में अड़चने जो आप के होंगी ज्यादा।
राणा शिवा की तरह ख़ाक मिलाना होगा॥
सीने पर तुमरे चलें तेग़ो तुफंगर गोलो।
सामना सब्रो शुजाअत से उठाना होगा॥
जिसम को ढाल कहो बाणी को तलवार अपनी।
सागरे वेद तुम्हें खूं से बहाना होगा॥
आत्मा देखती स्वामी की स्वर्ग में तुमको।
उनकी नज़रों में तुम्हें खुद को बसाना होगा॥
भीष्म से हों ब्रतधनी अर्जुन से दिलावर मित्रो।
जोश में वीर हकीकत सा बनाना होगा॥

आरज़ू दिल में लगी हो ये तुम्हारे निशदिन ।
ऋण दयानन्द, हमें निश्चय चुकाना होगा ॥
मादरे हिन्द की रक्षा में लगाओ तन मन ।
नाराए वेद तुम्हें उन को सुनाना होगा ॥
बमिसल लाले गोबिन्द जां को निसारो अपनी ।
मौत में ज़िन्दगी का फिर लुत्फ़ उठाना होगा ॥
उल्फ़ते धर्म में अब मिसल श्रीराम बनो ।
तेग़ के नाम पर अब तेग़ को खाना होगा ॥
अलग़रज़ तुम से मुसाफिर की विनय है कर जोड़ ।
मिसल परवाना के बस खुद को मिटाना होगा ॥

भजन नं० २७५

नौनिहालाने बतन यह वक्त है इमदाद का ।
सामना है आज कल इक संगदिल जल्लाद का ॥
आप ही हैं अपने ऐमालों से बदनामे जहां ।
कब किया है ज़िक्र हम ने आप की बेदाद का ॥
जाते हैं मक्तल हज़ू में नातवानी साथ है ।
देखना है आज हम को हौसला सय्याद का ॥
आप के तरकस में कोई तीर बाकी रह ना जाय ।
है हमारा दिल भी पत्थर जिगर फौलाद का ॥
जान देके कौम पर जो आन अपनी रख चले ।
जिससे मुसतकबिल बनेगा आपकी औलाद का ॥
खातमा पर है खिज़ां दौरेबहार आने को है ।
बुलबुलो हर गुल खिलेगा गुलशने बरबाद का ॥
बंद पिंजरे में हैं हम और चहचहाना भी गुनाह ।
क्या अजब तेगे सितम है इस सितम ईजाद का ॥

आर्य कुमारों का गायन।

भजन नं० २७६

यह वेदिक धर्म हमारा, है वेदिक धर्म हमारा।
हम हैं इसके रक्षत सारे, इस पर अपना तन मन वारें।
मिलकर अपना व्रत यह धारें, है यही प्राणाधारा ॥ यह०
मातृभूमि की सेवा करना, भक्तिभाव से भेंट यह धरना।
इसके ऊपर जीना मरना, है कर्त्तव्य हमारा ॥ यह०
वैर भाव को दूर भगा कर, जात पात का भेद भुला कर।
मिल जाओ सब को गलेलगाकर, फिर वढ़े प्रेम की धारा ॥ यह०
घर घर वेद मंत्र सब गाओ, वेदों को फिर से अपनाओ।
ऋषि उपदेश क्रिया में लाओ, फिर आर्य बने जग सारा ॥ यह०
सब मिल कर ऋषिके गुण गाओ, हृदय बीच में उन्हें बिठाओ।
उनके आगे शीश झुकाओ, जिन सब का जन्म सुधारा ॥ यह०

भजन नं० २७७

वेदिक धर्म प्रचार।

असीं वेदिक धर्म फैलावांगे असीं आर्य बन दिखलावांगे।
हुन कौमो आन बचावांगे, एह जीवन सुफल बनाने को ॥
असीं खेल जान ते जावांगे असीं वेदिक धर्म बढ़ावांगे।
सर सदमें लख उठावांगे, कुछ कौमी शान बढ़ाने को ॥
दिल किसे दा नहीं दुखाना है असी सीधे रसते जाना है।
आपस विच प्रेम बढ़ाना है, वडयां दी लाज बचाने को ॥
साडा हिन्दु धर्म प्यारा है, साडा अखियां दा यह तारा है।

वह प्रीतम प्राण प्यारा है,नित प्यास त्रास बुझाने को ॥
साडा दरोन गुरु प्यारा सी,साडा अर्जुन वीर दुलारा सी ।
कुछ दूर न फेर कनारा सी,भव सागर पार लगाने को ॥
साडे वडिआं मान वढ़ाया सी,कुल दुनिया नू पढ़ाया सी ।
एह साडे कर्म में आया सी,सब कीती खाक मिलाने को ॥
हुन शर्मा उठ बेदार हो तूं,छड गफलत उठ हुशयार हो तूं ।
बस कौमी खिदमतगार हो तूं,एह जीवन लाभ उठाने को ॥

भजन नं० २७८

पार करदो ।

भारत पै नो जवानों तन मन निसार करदो ।
अटका हुआ है बेड़ा हिम्मत से पार कर दो ॥
हिन्दोस्तां का गुलशन नजरे खिजां हुआ है ।
तुम अपनी कोशिशों से हरसू बहार करदो ॥
नापाक गैर कपड़े पहनो न भूल कर भी ।
फाड़ो जलाओ इनको और तार तार करदो ॥
कहते हैं कुल मुमालिक हिन्दोस्तान है मुरदा ।
ज़िन्दों में नो जवानो ! इसका शुमार करदो ॥
जो अहले हिन्द अब तक ग़फ़लत में सो रहे हैं ।
घर घर में जाके उनको तुम होशियार करदो ॥
कौमी शजर के पत्ते गैरों ने झाड़ डाले ।
माली बनो तुम उसके और सायादार करदो ॥
आजिज की प्रार्थना है हिन्दोस्तां को जल्दी ।
आजाद अबतो मेरे परवरदिगार कर दो ॥

भजन नं० २७६

बाल भक्त प्रहलाद

जी भरके अरे ज़ालिमो दुखियों को सतालो।
बल सत् को घटाने के लिये ज़ोर लगालो॥
सतधर्म की खातिर हमें मरने का नहीं गम।
हम सर को झुका देते हैं तुम तेग़ चलालो॥
सीना है जिगर दिल है कलेजा है यह जां है।
जो चाहो निशाने पे किसी तीर चलालो॥
इक दिन तो दयावान हमारी भी सुनेगा।
जब तक नहीं सुनता है वह तुम ज़ुल्म कमालो॥
कुछ दिन के लिए पाप तुम्हारा है सहाई।
दुखियों को मिटालो कि ग़रीबों को जलालो॥
लगती नहीं कुछ देर वह जब क्रोध पर आया।
वह चाहता है तुम भी कपाल अपना दिखालो॥

भजन नं० २८०

हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे

गो मौत भी सर पै डट जाए, गो खून जिगर का घट जाए,
गो दर्द से छाती फट जाए, गो सर भी हमारा कट जाय।
हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे॥
जल्लाद किधर है ला खंजर, आ फेर दे झटपट गर्दन पर,
कर [illegible] र हज़ारों कस कस कर, कर टुकड़े टुकड़े दे यकसर।
हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे॥

भारत के रहने वाले हैं, सौ सदमे देखे भाले हैं,
पर सब के मुंह पर ताले हैं,हम धर्म पै मरने वाले हैं।
हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे॥
कब मरने से हम डरते हैं, हम तन मन सदके करते हैं,
जो धर्म की खातिर मरते हैं, वह भवसागर से तरते हैं।
हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे॥
हम धर्मी वीर हकीकत हैं, और फते जोगावर सीरत है,
भारत की इज्ज़त गैरत हैं, हम मस्त जामे शहादत हैं।
हम हरगिज़ धर्म न छोड़ेंगे॥

भजन नं०२८१

आनबान छोड़

जाहो जलाल हश्मतो इज्ज़त व शान छोड़।
प्यारे वतन् के वास्ते तू आन बान छोड़॥
कुंजे क़फ़स में किस तरह बुलबुल रहे ज़िन्दा।
यह पुर बहार बोस्तां यह गुलस्तान छोड़॥
कहती है अंदलीब कि आई बहार है।
कर रहम की नज़र मुझे ए मेहरबान छोड़॥
इस सरज़मीं की ख़ाक से पैदा हुये हैं हम।
इस सरज़मी को गोद में देंगे प्राण छोड़॥
खाते रहे हो नोच कर भारत को खूब ही।
जो सूखी साखी बाकी है अब आस्तखान छोड़॥
जल्लाद कर ज़िबा हमें बेशक छुरी से तू।
लेकिन खुदा के वास्ते यह नीमजान छोड़॥

———

भजन नं० २८२

आलम में किसका डर है जिस पर नज़र हो तेरी ।
बेशक वह बे ख़तर है जिस पर मेहर हा तेरी ॥
दुशमन न कोई उसका होवे तू दोस्त जिसका ।
दुनियां ही यार होवे जिस पै मदद हो तेरी ॥ १ ॥
दर्दो अलम यहां के ऐबो गुनाह जहां के ।
कोई न पास आवे जिसको पनाह हो तेरी ॥ २ ॥
राई से कोह कर दे खाली को दम में भर दे ।
थोड़े से तू बहुत दे पै जब रज़ा हो तेरी ॥ ३ ॥
न्यामत जहां से फ़ाज़िल उसको खुशी हो हासिल ।
जिस दिल में बन्दगी ये या रब जमा हो तेरी ॥ ४ ॥
जिस दिल में नूर तेरा रोशन हो वह ग़नी है ।
हमसर न कोई उसके लेकिन निगाह हो तेरी ॥ ५ ॥
तुझ से उम्मेद "बाबू" रखता है दिल में हरदम ।
अब तो नज़र रहम की मुझ पर ज़रा हो तेरी ॥ ६ ॥

भजन नं० २८३

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किश्ती है ॥
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भू मंडल केघर हो,
सब के अन्दर अरु बाहर हो, कारीगर बड़े भारी हो ।
रची अजब सकल सृष्टि है ॥ मेरी० ॥
सब के न्यायकारी जगराई, बिन वज़ीर अरु बिन सपाही ।
करो फैसला कलम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो ।
नहीं गफ़लत पड़ सकती है ॥ मेरी० ॥

हम ने दुःख भोगे हैं भारी, हुई बहुत दुर्दशा हमारी,
अब हम आये शरण तुम्हारी, तुम जग हितकारी हो ।
तुम ही तारो तर सकती है ॥ मेरी० ॥
बिन कृपा करुणानिधि तेरी, कुछ नहीं पार बसाती मेरी,
'तेजसिंह' भारत बेड़ी, काट सभी दुःख टारियो ।
जो हृदय कुमिति बसती है ॥ मेरी० ॥

भजन नं० २८४

गुरु गोबिन्द सिंह के बच्चों की गरज

सामना मौत का बे खौ़फ़ो खतर करलेंगे,
हुक्मे जल्लाद पर हम आगे को सर कर लेंगे ।
मुंह से उफतक न निकालेंगे परेशां होकर,
तीरेग़म खायेंगे सीना सिपर करलेंगे ।
फोड़ डालेंगे हम आंखों को जो निकाला आंसू,
सीना फौलाद का पत्थर का जिगर कर लेंगे ।
न जवानी की तमन्ना न होशगीरी की,
हम तो तिफली ही में दुनियां से सफर करलेंगे ।
क्या विगाड़ेगा हमारा तू सितमगर बनकर,
क्या हमारा यह तेरे तीरो तबर करलेंगे ।
दूध बखशेगी न माता हमें मरते दम तक,
शिकवा ज़ुलम का कभी मुंह से अगर करलेंगे ।
सर उड़ाने का हमें ख़ौफ दिलाता है क्या,
तू जो सर लेगा तो हम मौत को सर करलें ।
हां कलम करदे ज़बां शौकसे खामोश हैं हम,
वरना नाले दिले कातिल में असर कर लेंगे ।

राहतें सारे ज़माने को मुबारिक हो तुम्हें,
जि़न्दगी हम तो मुसीबत में बसर कर लेंगे ।
सर पर तलवार चला धर्म के मैदां में तू,
हार जायेंगे तो हम आंखों को तर कर लेंगे ।
तू हमें आलिमे फानी से मिटादे ज़ालिम,
नरक को छोड़ के हम स्वर्ग में घर कर लेंगे ।
मशअले नूरे सदाकत तो करेंगे रोशन,
ज़ुलम की शब को भी सम नूरे सहर कर लेंगे ।

भजन न० २८५

हिन्दुओ जागो

हिन्दुओ बस अपनी रक्षा का ज़माना आज है ।
देखने का वक्त अपना और बिगाना आज है ॥
मुद्दतों से सो रहे जो लाल गहरी नींद में ।
उनको उनके घर में जाकर के जगानी आज है ॥
लुट गया था माल जो हिन्दुओ तुम्हारी नींद में ।
हर तरह भरपूर वह मिलता खज़ानाआज है ॥
मिलके तुम आपस में सारे करदो दुनियां में एलान ।
बिछड़े भाइयों को मिलाते जाना हम ने आज है ॥
साथ दो तुम इनका सारे, कौम की होगी फतह ।
इन ही में से भीम अर्जुन का बनाना आज है ॥
सत्य की बिनती है सुनना ध्यान धर के ऐ जनाब ।
महर्षी और वेद का डंका बजाना आज है ॥
अपने गढ़ से सारे रिपुओं को जो मार भगावे ।
अपने गढ़ का राजा बन कर विजय ध्वजा पहरावे ॥

भजन नं० २८६

एक मुसलमान की फरियाद ।

यहां आर्य्य न देंगे जोने मुझे ।
मेरे मौला बुला लो मदीने मुझे ॥
शेर—कुछ दिनो तक सब मुसलमां आर्य्य हो जायेंगे ।
भूल कर अपने नबी को इन पै ईमां लायेंगे ॥
कहा ख्वाब में रात किसी ने मुझे ॥
गर रही रफ्तार शुद्धी की, यूंही कायम यहां ।
फिर मुसलमानो ! मुसलमां हिंद में बाकी कहां ॥
रहे सोच यह बारह महीने मुझे ॥
आर्य्ये ही नहीं यां जान का मेरो बबाल ।
पीटता हूं देखकर सर पहले टरकी का मैं हाल ।
दिए रंज पै रंज सभी ने मुझे ॥
बच्चा २ हो गया है आर्य्यों का अर्बी खां ।
बहस करने उनसे जाये कौन बतलावो मियां ॥
लगे खोफ से आने पसीने मुझे ॥
हिन्द में बाकी वह अपनी शोकत हकूमत नहीं ।
जोर वह अपना नहीं पहली सी वह रौनक नहीं ॥
नज़र आते नहीं वह दफीने मुझे ॥
काटे इक काफिर की गर्दन अब अगर तलवार से ।
उसको फांसी की सजा फौरन मिले सरकार से ॥
पड़े घूंट लहू के यां पीने मुझे ॥

———

भजन नं० २८७

छोड़ो न तुम धर्म को चाहे जान तन से निकले।
सच्चा सुखन हो लेकिन शीरीं दहन से निकले॥
जल अग्नि वायु पृथ्वी कुल धर्म्म के सहारे।
सूरज व चाँद तारे सारे फलक से निकले॥ १॥

अग्नि का धर्म दाहक जब तक है उसमें कायम।
नहीं शेर की ये ताकत हो पास उसके निकले॥ २॥

फिर अग्नि का धर्म जब उसमें नहीं है रहता।
चियोंटी भी उसके ऊपर बेखौफ हो के निकले॥ ३॥

सुत तात मात बन्धू नहीं साथ कोई जाता।
स्त्री भी रोती दर तक बाहर कदम न निकले॥ ४।

मरने के बाद भी है इक धर्म्म साथ जाता।
बस ध्यान दिल से हरदम इसका कभी न निकले॥ ५॥

ब्रह्मा से जैमिनी तक जितने हुए हैं फाज़िल।
उपदेश धर्म ही के उनके दहन से निकले॥ ६॥

दशरथ के राम लक्ष्मण इक धर्म ही की खातिर।
पृथ्वी का राज्य तज कर जंगल को घर से निकले॥ ७॥

गोविन्द सिंह के बच्चे दीवार में चुने जब।
अलफाज़ आखिरी में, छोड़ें न धर्म्म निकले॥ ८॥
इसलाम के मुकाबिल सर धर्म पर कटाया।
सद आफरीं हकीकत विरला ही तुझसा निकले॥ ९॥

———

भजन नं० २८८

द्रोपदी की फरियाद

बतर्ज तूंबा वजदा ना

मैं बचदी ना नाम-बिना तरदी ना शाम-बिना।
कृष्णा वे सुनी पुकार अज मैंनूं देवीं दीदार॥
(१) सभा विच याद करदी मैं नूं कृष्णा आसरा तेरा।
(२) टेर सुन बंशी वालिया मेरी जान लबां उत्ते आई॥
(३) पापी मेरी चीर खिचदे मेरी लाज उतरदी जांदी।
(४) वड़े २ योद्धा देखदे मेरी टेर न कोई सुनदा॥
(५) पापीयां दा गर्व तोड़ दर्शन देजा कृष्ण मुरारी।
(६) यां मेरी जान ले ले वे नहीं तो किश्ती नूं पार लंघावीं।
वे मैं बचदी ना-नाम-बिना-तरदी ना श्याम विना।
कृष्णा वे सुनीं पुकार अज मैंनूं देवीं दीदार॥

भजन नं० २८९

मतलबी दुनियां

आराम के थे क्या क्या साथी, जब वक्त पड़ा तो कोई नहीं।
सब दोस्त हैं अपने मतलब के, दुनियां में किसी का कोई नहीं।
कल बाग जो था फूलों से भरा, अठलाती हुई चलती थी सबा
वहां संबुल गुलका ज़िक्र तो क्या खाक उड़ती है उसजा कोई नहीं
हर एक नुमायश को देखा, झपकी जो पलक तो कुछ भी न था
हस्ती है हबाब देहरो फना, इस दम का कोई भरोसा नहीं॥
जब पैसा हमारे पास में था, तब यार हमारे लाखों थे।
जब वक्त पड़ा है मुश्किल का, दुनियां में किसी का कोई नहीं।

भजन २९०

बंशी की तान

प्यारे बंशी की तान सुना दे मुझे ।
मोहन गीता का ज्ञान सिखा दे मुझे ॥
नाव मेरी अब अविद्या के भँवर में पड़ गई ।
पार लगना है कठिन बादे मुखालिफ चल पड़ी ॥
कृपा करके किनारे लगा दे मुझे ॥ १ ॥
छा रही काली घटा और मौसमे बरसात है ।
आँधी आई ज़ोर से आफत की बेढब रात है ॥
ऐसे खौफो खतर से बचा दे मुझे ॥ २ ॥
दीन की सुध आप दीनानाथ जल्दी लीजिये ।
पार मेरी नाव को भगवान्, बस कर दीजिये ॥
और मुक्ति का मार्ग दिखादे मुझे ॥ ३ ॥
काम लोभ और मोह दुश्मन हैं हमारी जानके ।
मार डाला है इन्हीं ने हैं ये प्यासे प्राण के ॥
सच्चे प्रेम का पाठ पढ़ा दे मुझे ॥ ४ ॥
क्या कभी "गोपाल" प्यारे फिर न वृज में आओगे ।
ओढ़ कर काली कमलिया अब न गाय चराओगे ॥
अपने चरणों का दास बनाले मुझे ।
प्यारे बंशी की तान सुना दे मुझे ॥

भजन २९१

जो दिल से मेरा नाम गाता रहेगा ।
तो मुझको भी तू याद आता रहेगा

नहीं पूरे होने के दुनियां के धन्धे।
तू कब तक यहां दिल लगाता रहेगा ॥
यह है ज्ञान की बूटी ऐसी मुजरिब।
अगर ध्यान से इसको खाता रहेगा ॥
तो आंखों का, कानों का, बुद्धि का, मन का।
मेरे यार सब रोग जाता रहेगा ॥
ये मुमकिन नहीं तुझको मैं भूल जाऊं।
जो तू मुझको "निर्भय" मनाता रहेगा ॥

भजन २६२

कतरे कतरे में नमू दार है कुदरत तेरी।
ज़र्रे ज़र्रे से नुमायां है हकीकत तेरी ॥
कौन सा सर है कि जिसमें नहीं सौदा तेरा।
कौन सा दिल है कि जिसमें नहीं उल्फत तेरी ॥
कौन सी जा है कि जिस जा नहीं जलवा तेरा।
कौनसा गुल है कि जिसमें नहीं निकहत्त तेरी ॥
छिप के जायेगा कहां मुझसे तू अय आयना रू।
मेरी आंखों में पड़ा करती है सूरत तेरी ॥
कौनसी शै कि शाहिद तेरी वहदत की नहीं।
मेरी हस्ती को फना करती है वहदत तेरी ॥

भजन २६३

खुद को ऐसा मिटा कि तू न रहे ॥
तेरी हस्ती की रंगो बू न रहे ॥
हू में ऐसा विसाल पैदा कर।

कि बजुज़ हू के गैर हू न रहे ॥
जुस्तजू हो ख्याले हस्ती है।
गुम हो इतना कि जुस्तजू ना रहे ॥
चार सू दीवारे हस्ती से ॥
भाग इतना कि चार सू न रहे ॥
है किसी मस्त का कलाम 'अमीर'।
जान बाकी रहे सुवू न रहे ॥

भजन २९४

जिन्हां घर झूलते हाथी, हजारों लाख थे साथी।
उन्हां को खागई माटी, तूं खुश कर नींद क्यों सोया !!
नक्कारा कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे,
ज्यों सावन मेघला गाजे तू खुशकर०
कहां गए खान मद माते, जो सूरज चांद सो जाते।
न देखे वह कहां जाते, तू खुश कर०
जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा मुख पान के बीड़े।
उन्हांनूं खागये कीड़े। तू खुश कर०
जिन्हां घर पालकी घोड़े ज़री ज़रबफ्त के जोड़े।
वही अब मौत ने तोड़े, तू खुशकर०
जिन्हां दे बाल थे काले, मलाइयां दूध से पाले।
वह आखर खाक में डाले। तू खुशकर०
जिन्हां संग न्योंह था तेरा, उन्हां किया खाक में डेरा।
न फिर वह करनगे फेरा। तू खुशकर०

भजन २९५

ईश्वर को मिल के दीजे आज प्रियवर धन्यवाद।
जिसको नित देते रहे मुनि और ऋषिवर धन्यवाद ॥

जल है उसके प्रेम रस में अति सरस होकर मगन ।
भीग कर देता है प्रियवर लहर भर भर धन्यवाद ॥
करके प्राणायाम साधन आप अभिवादन करे ।
मन से देता यह जिह्वा होकर तर धन्यवाद ॥
जल का चढ़ाना हो है पूरक और कुम्भक ठहरना ।
पर क्रिया रोचक की दे गिर पृथिवी पर धन्यवाद ॥
अग्नि उसकी लग्न में तपती होकर सर गरम ।
और बिजली देती है नित शब्द कर कर धन्यवाद ॥
वायु की हरदम उसी की याद में है दौड़ धूप ।
और भरा आकाश में हरसू सरासर धन्यवाद ।
पृथ्वी गिर कर चरण में नित्य करती स्तुति ।
होके दृढ़ संकल्प दे नग बांध परिकर धन्यवाद ॥
बाग में मौसम बधाई को ज़ुबां खोले खड़ा ।
पात की वाणी से देता नित्य तरुवर धन्यवाद ॥
पक्षि गण हर शाख पर प्रातः सायं दे रहे ।
दोनों हाथों की तरह से जोड़ कर कर धन्यवाद ॥
जल में थल में और अग्नि में वायू नभ में जो ।
जो बस अपनी बोली में सदा देते चराचर धन्यवाद ॥
चन्द मण्डल भूमि तल पर उच्च स्वर से गा रहे ।
अपने अपने धाम पर गन्धर्व किन्नर धन्यवाद ॥
जिसकी कृपा से हुआ निर्विघ्न यह उत्सव समाप्त ।
उसको देते सत्य मन से राम कविवर धन्यवाद ॥

भजन नं० २९६

जय प्रणतपाल दयालु करुणाकंद हरि गौ-रक्षकम् ।
जय विश्वसृज कृपालु परमानन्द अवगुण-भक्षकम् ॥
जय प्रलयकर्त्ता अघविनाशन वेदज्ञान प्रकाशकम् ।
जय जातवेद प्रकाशमय विज्ञानप्रद तम नाशकम् ॥
जय भुवनपति जगदीश अक्षर एक रस वर दायकम् ।
जय शक्तिमन सर्वेश सर्बाधार प्रभु गुण-नायकम् ॥
जय दुख-निवारक मित्र दीनानाथ दीन-सहायकम् ।
जय सुख-प्रसारक स्वःसुमतिदाईशविश्व-विनायकम् ॥
जय भक्तवत्सल देव देवम् प्रज्ञ भव-भय-भञ्जनम् ॥
जय हर्षप्रद सुखराशि मङ्गलमूल जनमय रजनम् ।
जय चक्षुषा आभा प्रदाता ज्योतिप्रद अंजनम् ।
जय अज अमर अमृत अनामयमृत्यु-दुख विभजनम् ॥
जय शुद्ध चेतन ब्रह्मनिष्फल निष्क्रिय करुणा करम् ।
जय सत्यनिर्मल निस्पृहः निस्सङ्ग गुण आकाशकम् ॥
सेव्य सुरनर वृन्द कलिमल-हरण भव-भय-रुज-हरम् ।
जय रामव्यापक सर्व गर्व अव्यक्त जयजय हरिहरम् ॥

आरती २९७

ओं जय ईश्वर स्वामी, पिता जय ईश्वर स्वामी । हो रक्षक जग के और अन्तरयामी ॥ ओं जय० ॥ अति आतुर हुए शरण गही तेरी, पिता शरण० । नहीं कोई देख पड़े, जो सहाय करे मेरी ॥ ओं जय० ॥ हम सब नित उठि पातक बहुत करें पिता पातक० । बिना ज्ञान दिये तुमरे, कहो कैसे नाथ टरें ॥ ओं जय० ॥ हो राजा सब के तुम न्याय के करता

पिता तुम० आरत देख उबारो, हे दुःख के हरता ॥ ओं जय० ॥ नित २ प्रीति बढ़े और भजन करें तेरो, पिता भजन० ईर्षा द्वेष न होवे चित्त शान्त रहे मेरा ॥ ओं जय० ॥ ईश्वर जप कर सब चाल चलें ऋषियन की, पिता० परधन पर दारा तज, चाह तजें विषयन की ॥ ओं जय० ॥ धन सम्पति सब होवे ज्ञान की राह गहें, पिता० । कर्म करें सब नीके, पाप न ऐको नाथ करें ॥ ओं जय० ॥ हे दुखभंजन संकटमोचन, हे सुखदाता, पिता० । दान चहे भक्ति का बाबू रहे निश दिन गुन गाता ॥ ओं जय० ॥

आरती २६८

जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे । भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ॥ जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनशे मन का । सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ओं ज० ॥ मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी । तुम बिन और न कोई, आस करूं जिसकी ॥ ओं जय० ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी । पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ओं जय० ॥ तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता । मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता ॥ ओं जय० ॥ तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती । किस बिध मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ॥ ओं जय० ॥ दीन बन्धु दुःख हरतो, तुम रक्षक मेरे । करुणा हस्त उठाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ओं जय० ॥ विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा । "श्रद्धा" भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ ओं जय० ॥

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

माता और पुत्र

आदर्श संतान पालन



श्रीयुत पं० चण्डीचरण बैनर्जी "माता छेल" नामक बङ्गला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, स्त्री पुरुष दोनों के पढ़ने योग्य है। मूल्य १॥=)

नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्ज़ लुहारी गेट, लाहौर